यदा-कदा

ग़ज़ल संग्रह

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम

यदा-कदा

ग़ज़ल संग्रह

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम

यदा-कदा (ग़ज़ल संग्रह)
[ई-पुस्तक]

प्रथम संस्करण: फरवरी 2023

निवेदन

ई-पुस्तक के रूप में तैयार ग़ज़लों का यह सातवाँ संकलन ग़ज़ल के आशिक़ों को समर्पित है। इस संग्रह की 264 ग़ज़लें अक्टूबर 2022 में प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह साहिल से (ई-पुस्तक) की 160 ग़ज़लों के बाद की हैं। ग़ज़लों के आकलन का काम ग़ज़ल के आशिक़ों का है।

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम
बी-607, सत्या एन्क्लेव, लेक एवेन्यू, कांके रोड, राँची – 834 008

दिनांक: 27 फरवरी 2023

अनुक्रम

262 अश्क आहों की तर्जुमानी है

263 मतलब नहीं है मुझसे, ये विज्ञप्ति दी गई

264 जीने की मोहलत हमें दी शुक्रिया

ग़ज़लें

1: जान से पहले हाफ़िज़ा लेते

जान से पहले हाफ़िज़ा[1] लेते,
भूलकर आपको मज़ा लेते।
[1]स्मरण शक्ति

किया एहसान आपने है मगर,
मेरे क़ातिल! मेरी रज़ा[2] लेते।
[2]सहमति

हम तो मर जाते ख़ुशी के मारे,
आप दिल का मेरे क़ब्ज़ा लेते।

नज़र हर ओर डालने वाले,
हमारी ओर इक ग़म्ज़ा[3] लेते।
[3]एक शरारती दृष्टि

सामने आते बे-नक़ाब अगर,
एक लहज़ा[4] सुकूँ-अफ़ज़ा[5] लेते।
[4] क्षणांश [5]पर्याप्त चैन

मौत आसानी से नहीं आती,
दुआ के साथ गर ग़िज़ा[6] लेते।
[6]भोजन

ज़िंदगी छोड़ती अगर पीछा,
बढ़ के हम दस्त-ए-क़ज़ा[7] लेते।
[7]मौत का हाथ

हमारे ख़त का वो पुर्ज़ा[8] देते,
जवाब मानकर पुर्ज़ा लेते।
[8]टुकड़ा

ज़िंदगी का नहीं चुका पाए,
किसलिए मौत का क़र्ज़ा लेते।

नाम उसका नहीं लिया 'गौतम',
इसका मिलता अगर जज़ा[9] लेते।
[9]पुरस्कार

2: क्या ख़ास ख़बर लाया ये अख़बार आज है

क्या ख़ास ख़बर लाया ये अख़बार आज है,
पहले सफ़्हे पे किसका इश्तिहार आज है।

डालेंगे चाय पीते हुए सरसरी निगाह,
फ़ुर्सत नहीं पढ़ने की, बहुत काम-काज है।

रोता नहीं है हर समय हालात पर साहिब,
सर पीटता मगर ब-क़द्र-ए-एहतियाज[1] है।
[1]आवश्यकता के अनुसार

जाता है घर अदू के अयादत के वास्ते,
अफ़सोस करना हो गया रस्म-ओ-रिवाज है।

हो वस्ल या हो हिज्र परेशान है आशिक़,
सोने नहीं देती सदा-ए-एहतिजाज[2] है।
[2]विरोध/शिकायत की आवाज़

एक हम-कलाम हम-मिज़ाज ढूँढ रहे हैं,
जो सामने आया है वो तुनुक-मिज़ाज है।

कहता है चारागर का तजरबात ये 'गौतम',
जो फ़ितरतन बेज़ार है वो ला-इलाज है।

3: मलाल ही तो था, रहा होगा

मलाल ही तो था, रहा होगा,
जलाल[1] ही तो था, रहा होगा।
[1]क्रोध/नाराजी

आज बे-फ़िक्र दिख रहा है वो,
ख़याल ही तो था, रहा होगा,

उसकी पेशानी पे अफ़्कार नहीं,
बवाल ही तो था, रहा होगा।

जवाब किसलिए ज़रूरी हो,
सवाल ही तो था, रहा होगा।

गर्मी-ए-ख़ून पर बहस कैसी,
उबाल ही तो था, रहा होगा।

वक़्त से सहर आज भी होगी,
हिलाल[2] ही तो था, रहा होगा।
[2]चाँद

याद कब तक करोगे 'गौतम' को,
मिसाल[3] ही तो था, रहा होगा।
[3]एक उदाहरण

4: उसी को याद सुबह-शाम किया

उसी को याद सुबह-शाम किया,
हमने हर लम्हा यूँ तमाम किया।

जिससे होती नहीं उम्मीद कोई,
उसी का ख़ास एहतिराम किया।

फिर सितमगर ने देखा हैरत से,
हमने हँसकर उसे सलाम किया।

वादा-शिकनी का है यक़ीन मगर,
ख़ैर-मक़्दम का इंतिज़ाम किया।

नहीं दी उसने तवज्जोह हमको,
नाला हमने था सर-ए-आम किया।

उसकी ख़ामोशी का असर ये है,
ज़बाँ को हमने बे-कलाम किया।

सुबह निकलेगा ऊबकर 'गौतम',
रातभर घर में है क़याम किया।

5: दरपेश गिला कोई किया जाए तो कैसे

दरपेश[1] गिला कोई किया जाए तो कैसे,
अब आपके बग़ैर जिया जाए तो कैसे।
[1]प्रस्तुत

ज़ुल्फ़ों के दायरे में ही है हल्क़ा-ए-ज़ुल्मत[2],
जो भी असीर[3] है बे-ज़िया[4] जाए तो कैसे।
[2]अँधेरा स्थान [3]बंदी [4]बिना उजाला

रखते हैं पास मस्त-निगाही[5] का साक़िया,
खिसका के दिया जाम पिया जाए तो कैसे।
[5]मस्त आँख

डरता है बेरुख़ी से वो हमसे भी ज़ियादा,
उस तक झिझकता डाकिया जाए तो कैसे।

ख़ुद ही हुए हैं इश्क़ में बर्बादी-ए-कामिल[6],
इल्ज़ाम गैर को ये दिया जाए तो कैसे।
[6]पूरी तरह बर्बाद

वहशत में चाक करके उड़ाई हैं धज्जियाँ,
दीवाने के दामन को सिया जाए तो कैसे।

खुलती नहीं ज़बान है उसके हुज़ूर में,
उससे कोई जवाब लिया जाए तो कैसे।

संजीदगी के साथ ही बैठा रहा 'गौतम',
दिल ले लिया है शौक़िया जाए तो कैसे।

6: पाँव के नीचे रह-गुज़र ठहरे

पाँव के नीचे रह-गुज़र ठहरे,
एक मंज़िल पे तो नज़र ठहरे।

चलने वालों पे ख़ौफ़ तारी है,
उठेंगे पाँव क्या अगर ठहरे।

जुस्तजू में तमाम दिन खोकर,
शाम को थक के दर-बदर ठहरे।

शब गुज़र जाती है करवट लेते,
कभी तो फ़िक्र-ए-बशर[1] ठहरे।
[1]आदमी की चिंता

अभी अभी तो नींद आई है,
दो घड़ी के लिए सहर ठहरे।

जिनकी ताबीर नहीं मुमकिन है,
चश्म में ख़्वाब उम्र-भर ठहरे।

कोई रुकता नहीं किसी के लिए,
हमसफ़र किसके मो'तबर[2] ठहरे।
[2]भरोसे के लायक

मिला घर का नहीं पता 'गौतम',
वहीं के हो गए जिधर ठहरे।

7: कम नहीं वो है चुगल-ख़ोर बहुत

कम नहीं वो है चुगल-ख़ोर बहुत,
उसकी ख़ामोशी में है शोर बहुत।

ज़िक्र मयख़ाने में जन्नत का किया,
लगता नासेह है कश-कोर[1] बहुत।
[1]अज्ञानी

दरिया-ए-इश्क़ से डर लगता है,
इसमें डूबे हैं ग़ोता-ख़ोर बहुत।

बहस हम शेख़ से नहीं करते,
होते मग़रूर हैं मुँह-ज़ोर बहुत।

मरीज़-ए-इश्क़ ठीक क्या होंगे,
दवा-दुआ में नहीं ज़ोर बहुत।

कान में चीखते हैं सन्नाटे,
ऐसी तन्हाई से हैं बोर बहुत।

कौन निकला है अयादत के लिए,
शोर बरपा है चारों-ओर बहुत।

मेहरबानी है मेरे यारों की,
खोद कर रख दिए हैं गोर[2] बहुत।
[2]कब्र

नहीं मुंसिफ़ से शिकायत 'गौतम',
मेरा वकील था कमज़ोर बहुत।

8: तेज़ कितना भी हो तूफ़ान गुज़र जाता है

तेज़ कितना भी हो तूफ़ान गुज़र जाता है,
वक़्त के साथ ज़ख़्म गहरा भी भर जाता है।

किसी के वास्ते कब ठहरता है वक़्त यहाँ,
अपने ही रास्ते पर माह-ओ-महर[1] जाता है।
[1]चाँद और सूरज

नहीं रहता है हमेशा कोई भी मौसम हो,
दरिया जो चढ़ता है एक रोज़ उतर जाता है।

रात भर आँखों में जिसको सहेजते हैं हम,
सहर के होने पर वह ख़्वाब बिखर जाता है।

उसी का इंतज़ार रोज़ कर रहे हैं क्यों,
वादा जो करता है फिर साफ़ मुकर जाता है।

यह बताता नहीं क्या ढूँढने जाता है वह,
यार के कूचे में वह शाम-ओ-सहर जाता है।

बनते बनते हर एक बात बिगड़ जाती है,
बात कहने का जब अंदाज़ अखर जाता है।

याद जब आती है परदेस में घर की 'गौतम',
मंज़र-ए-औज[2] फिर नज़र से उतर जाता है।
[2]आकर्षक दृश्य

9: पस-ए-नक़ाब भी है और पस-ए-चिलमन भी

पस-ए-नक़ाब भी है और पस-ए-चिलमन भी,
सूरत-ए-वस्ल भी निकली है और उलझन भी।

जवाब मिलने की उम्मीद है नहीं हमको,
ज़बाँ पे ताला लगा लेते हैं अख़्लाक़न[1] भी।
[1]नैतिकता

राब्ता अजनबी लोगों से कौन रखता है,
अपनेपन का पता देती है एक अन-बन भी।

इस इमारत की तो बुनियाद है कमज़ोर बहुत,
जाया क्यों करते मरम्मत हो, रंग-रोग़न भी।

लोग सुनकर भी आ रहे शहर में मरने को,
दाना-पानी ही नहीं कम हुई ऑक्सीजन भी।

काटे कटता नहीं किसी से भी सफ़र तन्हा,
हमसफ़र सबको लग रहे हैं आज रहज़न भी।

उम्र का आता इक पड़ाव है जहाँ सबको,
कभी जवानी याद आई कभी बचपन भी।

ये नए दौर की महफ़िल है यहाँ पर 'गौतम',
क़द-ए-सुख़न के साथ देखते हैं अचकन भी।

10: जले परवाने पल भर में शमा आहिस्ता आहिस्ता

जले परवाने पल भर में शमा आहिस्ता आहिस्ता,
सहर होने पे हंगामा थमा आहिस्ता आहिस्ता।

चुनौती दे रहे क़ातिल को अब मक़्तूल मक़्तल में,
फ़ना यक-लख़्त कर या आज़मा आहिस्ता आहिस्ता।

वकील-ओ-मुद्दई के साथ मुंसिफ़ भी है फ़ुर्सत से,
बहुत दिन तक चलेगा मुक़दमा आहिस्ता आहिस्ता।

बहुत ख़ामोशी से शिकवा-शिकायत सुन रहे साहेब,
मगर चेहरा गया है तमतमा आहिस्ता आहिस्ता।

वो अपनी बात कहकर फिर चले जायेंगे महफ़िल से,
सभी करते रहेंगे तर्जुमा आहिस्ता आहिस्ता।

मरीज-ए-इश्क़ चारागर से मिलता ही नहीं जाकर,
किया है दर्द सब उसने जमा आहिस्ता आहिस्ता।

अगरचे तय सफ़र हम कर रहे हैं आज भी अपना,
गया है छोड़कर हर रहनुमा आहिस्ता आहिस्ता।

अभी तो रात बाक़ी है अभी आँखें नहीं खोलो,
दिखेगा ख़्वाब कोई ख़ुशनुमा आहिस्ता आहिस्ता।

शिकायत तो हमेशा ही अज़ीज़ों से रही 'गौतम',
मगर कर देता है सबको क्षमा आहिस्ता आहिस्ता।

11: आईने में अक्स अपना देखकर शैदा हुआ

आईने में अक्स अपना देखकर शैदा[1] हुआ,
बे-ख़ुदी के चलते पैदा ज़ौक़-ए-सज्दा[2] हुआ।
[1]मोहित होना [2]सर झुकाने की चाह

सारा दिन बाज़ार में बैठा रहा हर आदमी,
बद-नसीबों का नहीं कुछ काम का सौदा[3] हुआ।
[3]व्यापार/कारोबार

भीड़ बढ़ती जा रही है अब रक़ीबों की वहाँ,
कूचा-ए-जानाँ में सबको ख़ौफ़-ए-आदा[4] हुआ।
[4]दुश्मनों का भय

ये गिला उसने किया जिसको मिला फ़ैज़-ए-करम[5],
सितमगर का सितम दीवाने पे क्यों ज़्यादा हुआ।
[5] मेहरबानी

हो गई उसको तसल्ली लोग जब कहने लगे,
सारे दीवानों में ऊँचा आपका ओहदा हुआ।

हर घड़ी रहता परेशाँ है फ़ितरतन आदमी,
एक शब गुज़री तो फ़ौरन सौदा-ए-फ़र्दा[6] हुआ।
[6]कल की चिंता

आलिम-ओ-फ़ाज़िल जहाँ बैठे हैं सर को जोड़कर,
एक उक़्दा[7] की जगह पैदा नया उक़्दा हुआ।
[7]ग्रंथि/विवाद

नाम से अब जानते हैं आपको 'गौतम' सभी,
आशिक़-ए-शैदा[8] बने हो इश्क़ में, उम्दा हुआ।
[8]समर्पित प्रेमी

12: ख़्वाबों को हमने जाग के मिस्मार किया है

ख़्वाबों को हमने जाग के मिस्मार[1] किया है,
फिर हमने शब होने का इंतिज़ार किया है।
[1]बर्बाद

पहले बनाया हमने ही हालात-ए-सफ़र,
फिर ख़ुद को ही हालात से फ़रार किया है।

एहसान अज़ीज़ों ने जताया है इस क़दर,
जैसे किसी अदू को ग़म-गुसार[2] किया है।
[2]हमदर्द

उसने मेरे ख़यालों को दफ़ना के ये कहा,
एक ख़ाक-ज़ाद[3] ही को ख़ाकसार[4] किया है।
[3]मिट्टी से पैदा [4]मिट्टी में मिलाना

मक़्तल में बुलाकर हमें बैठा दिया सफ़ में,
क़ातिल ने सर-ए-आम निगूँ-सार[5] किया है।
[5]सर झुकना

फिर रंग-ओ-बू गुलों में उसी की मिली जिसने,
ख़ुद को गुलिस्ताँ के लिए ईसार[6] किया है।
[6]बलिदान

कब सोचकर किया नहीं तय सफ़र जीस्त का,
मौज-ए-ख़याल-ए-यार के अनुसार किया है।

करते नहीं हैं इक़तिज़ा-ए-असर-ए-नौ[7] हम,
यूँ ज़िंदगी ने हमको दरकिनार किया है।
[7]नए युग की आकांक्षा

नासेह हक़ीक़त को जानता नहीं 'गौतम',
उसने ख़ला[8] में पैदा कोहसार[9] किया है।
[8]शून्य [9]पहाड़

13: तब्सिरा लोग रोज़ करते हैं

तब्सिरा[1] लोग रोज़ करते हैं,
ज़िंदगी को कहाँ समझते हैं।
[1]समीक्षा

ख़ौफ़ मरने का हो अगर तारी,
दिन में सौ बार लोग मरते हैं।

कब ठहरने से उम्र ठहरी है,
सौ बहाने से सब ठहरते हैं।

बारहा करते तसल्ली हैं सब,
बारहा फिर शुबह[2] उभरते हैं।
[2]संदेह/शंकाएं

उसको अपने पे भरोसा ही नहीं,
वादा करते हैं फिर मुकरते हैं।

रास आती नहीं ख़ुदाई पर,
ख़ुदा से कहते हुए डरते हैं।

वक़्त से जीतता नहीं कोई,
वक़्त को सब सलाम करते हैं।

हाथ आते नहीं कभी 'गौतम',
कमाँ से तीर जब निकलते हैं।

14: फ़लक पे ठौर ठिकाना कहाँ किसी के लिए

फ़लक पे ठौर ठिकाना कहाँ किसी के लिए,
फ़ुज़ूल है बयान-ए-दो-जहाँ किसी के लिए।

गए जो तिश्ना-लब सहरा में उन्हें भी था पता,
पीछे पीछे नहीं जाता कुआँ किसी के लिए।

उड़ी जो गर्द थोड़ी दूर तलक थी बे-ख़बर,
नहीं रुकती हवा-ए-बे-तकाँ[1] किसी के लिए।
[1]बिना थकी हवा

शहर में कोई भी बे-घर दिखाई देता नहीं,
यहाँ फुटपाथ है बना मकाँ किसी के लिए।

लोग दिलचस्पियाँ लेने लगे बिना-मतलब,
राज़ तो हमने किया था अयाँ[2] किसी के लिए।
[2]प्रकट

सफ़र के नाम पर देखा है आलम-ए-वहशत,
नहीं रुका है कोई कारवाँ किसी के लिए।

वक़्त जब गहरी नींद सोने का आया 'गौतम',
धड़क रहा है दिल-ए-ना-तवाँ किसी के लिए।

15: कल वो जैसा था आज भी देखा

कल वो जैसा था आज भी देखा,
कल भी रूठा था आज भी देखा।

आदतन यख़-मिज़ाज[1] रहता था,
आज बरहम-मिज़ाज[2] भी देखा।
[1]सर्द रुख [2]बेरहम रुख

वादा कर के नहीं वफ़ा करना,
इश्क़ में ये रिवाज भी देखा।

साथ दीवानों के हमने उसको,
ब-क़द्र-ए-एहतियाज[3] भी देखा।
[31]आवश्यकता के अनुसार

इश्क़ सुनते हैं शिफ़ा-बख़्श[4] भी है,
इश्क़ को ला-इलाज भी देखा।
[4]सेहतमंद करने वाला

वक़्त पड़ने पे सूरमाओं को,
ख़ुदा का मोहताज भी देखा।

जिसे सरकार बनाया उसको,
वसूलते ख़िराज[5] भी देखा।
[5]कर

दरिया होता है समंदर में फ़ना,
रही रस्म-ओ-रिवाज भी देखा।

कोई मतलब भी नहीं रखता है,
पीछे पड़ता समाज भी देखा।

हमने ख़ामोशी में अक्सर 'गौतम',
सदा-ए-एहतिजाज[6] भी देखा।
[6]विरोध का स्वर

16: ख़म-ए-अबरू हमारे पर तनी है क्यों ख़ुदा जाने

ख़म-ए-अबरू[1] हमारे पर तनी है क्यों ख़ुदा जाने,
भरी महफ़िल में तारी सनसनी है क्यों ख़ुदा जाने।

[1]चढ़ी भौं

शिकायत तो कभी करते नहीं हैं ज़िंदगी से हम,
हमारे साथ ही हरदम ठनी है क्यों ख़ुदा जाने।

सभी कहते हैं हमसे होती है इसकी सिफ़त[2] ठंडी,
जलाती दिल हमारा चाँदनी है क्यों ख़ुदा जाने।

[2]असर/प्रभाव

हमारे हाल से पूरी तरह वाक़िफ़ वो है लेकिन,
हमारी दास्ताँ सब से सुनी है क्यों ख़ुदा जाने।

बुझा कर शब में हम सोने लगे कंदील ख़्वाबों की,
मेरी नज़रों मे फिर भी रौशनी है क्यों ख़ुदा जाने।

अगरचे बात तो सबसे मेरी होती है रोज़ाना,
रही दिल में निहाँ[3] नागुफ़्तनी[4] है क्यों ख़ुदा जाने।

[3]गुप्त [4]अनकही

ख़ुशी की बात है देखा है उसने ग़ौर से 'गौतम',
तबीयत फिर भी मेरी अनमनी है क्यों ख़ुदा जाने।

17: एक उम्मीद-ए-ख़ैरियत रखते

एक उम्मीद-ए-ख़ैरियत[1] रखते,
अगर वो मेरी कैफ़ियत[2] रखते।
[1]कुशलता की आशा [2]जानकारी

हमारा ज़िक्र बज़्म में करते,
नज़र में सबकी हैसियत रखते।

मेरा हम-जाम गर वाइज़ होता,
ज़ेहन में उसकी हिदायत रखते।

यहाँ हर शहर है हंगामा-तलब,
कहाँ हिसार-ए-'आफ़ियत[3] रखते।
[3]सुरक्षित ठिकाना

काम आई न सोहबत-ए-दुनिया,
अलग वगरना तबीयत रखते।

जिसे कहते हैं इस्म-ए-आज़म[4],
ज़बाँ पे उसकी हिकायत[5] रखते।
[4]सबसे बड़ा नाम (ख़ुदा) [5]कहानी/चर्चा

दफ़्न हमको जरा जल्दी करना,
नहीं संभालकर मय्यत रखते।

ख़ुदी[6] की याद न आती 'गौतम',
शब-ए-तन्हाई[7] महवियत[8] रखते।
[6]अपनी [7]रात का अकेलापन [8]ब्रह्मलीनता

18: सो रहे उम्मीद से एक ख़्वाब की दस्तक मिले

सो रहे उम्मीद से एक ख़्वाब की दस्तक मिले,
दूर की कौड़ी उठा लाएंगे हम, ऐनक मिले।

हालाँकि लगती है अच्छी मुफ़्त-वाली रेवड़ी,
स्वाद बदलेगा अगर कुछ लुत्फ़-ए-गज़क मिले।

आप से मिलकर बहुत अच्छा तो लगता है हमें,
ये भी सच है फिर कहेंगे आपसे नाहक़ मिले।

आज तो हर बात पर फिर से बजेंगी तालियाँ,
गुफ़्तुगू करने को फिर से कुएँ के मेंढक मिले।

वाह क्या महफ़िल जमेगी ठान कर आए हैं सब,
सुर मिले या न मिले, आवाज़ तो सप्तक[1] मिले।
[1]संगीत का सातवाँ (ऊँचा) स्वर

दिल में क्या मालिक के है अंदाज़ा करने के लिए,
एक नुजूमी[2] को पकड़कर आज हैं सेवक मिले।
[2]ज्योतषी

सुर्ख़रू[3] होता वही है जो हुआ मौका-परस्त,
गिनने बैठे हम तो ऐसे एक से दस तक मिले।
[3]सफल

चेहरे पर मनहूसियत को ओढ़कर 'गौतम' रहो,
देखेंगे सब ग़ौर से गर चेहरे पे रौनक़ मिले।

19: हमारा हाल किसी से छिपा नहीं सकते

हमारा हाल किसी से छिपा नहीं सकते,
बंधे हैं क़ौल से सबको बता नहीं सकते।

दस्त-ए-नाज़ुक से उठा पाते नहीं वो ख़ंजर,
और मक़्तूल हैं जो खिलखिला नहीं सकते।

संग-सारी-ओ-मलामत[1] का ख़ौफ़ है भारी,
ज़बाँ से सनम को हम कह ख़ुदा नहीं सकते।
[1]पत्थर मारने की सजा और अपमान

ख़िलाफ़ अपने ही दे आए गवाही जाकर,
सज़ा हमारी अब मुंसिफ़ घटा नहीं सकते।

ख़ुद लगाते नहीं अंदाज़ा अपने ज़ख़्मों का,
लिहाज़-ओ-पास है उसको गिना नहीं सकते।

हवा में लोग बनाते हैं क्यों ता'मीर-ए-मकाँ[2],
बिना बुनियाद के कुछ भी बना नहीं सकते।
[2]घर की योजना

कोई भी रास्ता हो जाता है सू-ए-मंज़िल,
ये हक़[3] की बात हवा में उड़ा नहीं सकते।
[3]सत्य

सलाम-ओ-सज्दा है तहज़ीब ये माना 'गौतम',
ज़मीन पर जबीं मेरी घिसा नहीं सकते।

20: हवा है जैसी भी सीने में भर रहे हैं हम

हवा है जैसी भी सीने में भर रहे हैं हम,
हवा के बारे में कहने से डर रहे हैं हम।

कहा सरकार ने ये अहद-ए-मसाइल[1] है,
लोग आराम करें फ़िकर कर रहे हैं हम।
[1]आज की समस्या

ज़िक्र-ए-वादा कोई करने पर समझाते हैं,
शुक्रिया बोलिए वादा तो कर रहे हैं हम।

ध्यान मुद्दे पे खींचता हूँ तो फ़रमाते हैं,
इसी मुद्दे पे कल से बहस कर रहे हैं हम।

समय तो लगता है इमदाद के पहुँचने में,
अभी हालात का शुमार कर रहे हैं हम।

वो रहम-दिल चला गया है गंगाजल लाने,
उससे नाहक़ कहा बे-आब[2] मर रहे हैं हम।
[2]बिना पानी

आप क्या सोच-समझकर हैं मुकर्रर कहते,
मु'आफ़ करिए शिकायत ही कर रहे हैं हम।

दिलासा दे रहे हैं मीडिया वाले 'गौतम',
हादसा गुज़रा है जो कवर कर रहे हैं हम।

21: नज़र में आतिश-ए-तग़ईर लिए

नज़र में आतिश-ए-तग़ईर[1] लिए,
फिर वो आया नई तक़रीर[2] लिए।
[1]बदलाव की आग [2]वक्तव्य

देखकर उसको मुतमइन[3] हैं सब,
जबीं[4] पे गहरी है लकीर लिए।
[3]संतुष्ट [4]मस्तक / ललाट

एक उम्मीद-ए-आफ़ियत[5] रखिए,
ख़्वाब आए नई तस्वीर लिए।
[5]बेहतरी की आशा

नहीं मक़्तूल आए मक़्तल में,
खड़ा क़ातिल रहा शमशीर लिए।

उसपर तक़दीर को हँसते देखा,
खड़ा है अक़्ल-ए-बे-तदबीर[6] लिए।
[6]नासमझ वाला दिमाग

नाला करने को कू-ए-जानाँ में,
गए कुछ तालिब-ए-तासीर[7] लिए।
[7]असर की आशा

मलक[8] के सामने जाना होगा,
सभी को साथ में तक़्सीर[9] लिए।
[8]एक फ़रिश्ता (क़यामत के दिन सबका हिसाब करने वाला) [9]गुनाह

बाद मरने के देखना 'गौतम',
आयेंगे बाइस-ए-ताख़ीर[10] लिए।
[10]विलम्ब का कारण

22: यह इश्तिहार है तलाश-ए-आदमी के लिए

यह इश्तिहार है तलाश-ए-आदमी के लिए,
याद आया है आज वो ना-मोहकमी[1] के लिए।
[1]असहायता

उसकी क़ीमत समझ में आई है गुम होने पर,
ज़रूरी है वह नफ़सियात-हाकिमी[2] के लिए।
[2]राजा की मानसिक संतुष्टि

सर्द मौसम में फिर रगों में लहू जमने लगा,
एक मुद्दा उछाल दीजिए गरमी के लिए।

भूल जाने की यहाँ सब में बुरी आदत है,
रोज़ निकला करें थोड़ा चहल-क़दमी के लिए।

हादसे रोज़ ही होते हैं शहर में साहेब,
कोई रुकता नहीं यहाँ किसी ज़ख़्मी के लिए।

किसलिए कोई शिकायत करें उससे मिलकर,
बे-रुख़ी लाज़मी है शान-ए-बरहमी के लिए।

ज़िंदगी सबकी कट रही है बे-मज़ा 'गौतम',
तमाशा एक कीजिए गहमा-गहमी के लिए।

23: दिल के बदले उसे मिली है दिली-हमदर्दी

दिल के बदले उसे मिली है दिली-हमदर्दी,
शौक़-ए-इश्क़ में ले आया फ़क़त सर-दर्दी।

हिज्र की रात नहीं कटती है आसानी से,
रात को और लम्बा कर गई आकर सर्दी।

क्यों दोस्ती के लिए भीड़ में तलाश रहा,
किसी में इंकिसार[1]-ओ-ख़ुलूस[2]-ओ-हमदर्दी।
[1]अति विनम्रता [2]ईमानदारी

शजर की उम्र का अंदाज़ा नहीं देती है,
बस अपनी उम्र बताती है बर्ग की ज़र्दी।

गया जो छोड़कर घर खाने-कमाने के लिए,
नामा उसका महज लाता है हर्फ़-ए-हमदर्दी।

कभी हरम में कभी दिखता है बुत-ख़ाने में,
ख़ुदा के नाम पर करता है वो कूचा-गर्दी।

गर्म तक़रीर से मुर्दों में जान डाली गई,
दिखाने गोर[3] से निकलेंगे अब जवाँ-मर्दी।
[3]कब्र

आपने कफ़न डालकर उसे गुमनाम किया,
नंगी चमड़ी ही थी उसकी पहचान-ओ-वर्दी।

सख़्त माहौल में ख़ुशहाल है कैसे 'गौतम',
कर के लौटा है किस उस्ताद की वो शागिर्दी।

24: क्यों आदमी फ़ितरतन आराम नहीं करता

क्यों आदमी फ़ितरतन आराम नहीं करता,
जिसमें नफ़ा नहीं हो वो काम नहीं करता।

उस शोख-ज़बाँ से बस ये एक शिकायत है,
वादा वो जो करता है इरक़ाम[1] नहीं करता।
[1]नोट नहीं करना

दुनिया ने सिखा दी है उसको भी दुनियादारी,
अब अपने दिल की बातें वो आम नहीं करता।

नासेह से जन्नत-का माँगा क़रार-नामा,
वह रिंद काम कोई अब ख़ाम[2] नहीं करता।
[2]कच्चा

देता नहीं किसी को भी पावती अर्ज़ी की,
यह काम यहाँ कोई हुक्काम नहीं करता।

महफ़िल में बिन बुलाए आते हैं क़सीदा-गो,
वो पेश किसी को भी पैग़ाम नहीं करता।

साक़ी के दिल में क्या है मालूम नहीं 'गौतम',
लबरेज़ हमारा ही वह जाम नहीं करता।

25: चाँद-तारों से रात भर बहले

चाँद-तारों से रात भर बहले,
रहे बे-ख़्वाब सहर से पहले।

उसकी सूरत भी भूल जायेंगे,
अगर वो दिल से हमारे निकले।

हौसला जब समेटकर बैठे,
हादसे याद आ गए पिछले।

वज़्न-ए-ग़ज़ल बताने के लिए,
अदीब आए हैं दुबले पतले।

हमसे करने लगा ज़िरह मुंसिफ़,
हमने ख़ुद राज़ ज़बाँ से उगले।

लौटकर आयेंगे मैले होकर,
बदन से लिपटे पैरहन उजले।

उसने वादा किया फिर आने का,
और बैठे रहे सारे पगले।

लोग किरदार बदल लेते हैं,
बर्फ़ क्यों धूप में नहीं पिघले।

वक़्त से कैसे जीतता 'गौतम',
वक़्त ने नहले पर मारे दहले।

26: हर शाम परिंदों को बुलाता है घोंसला

हर शाम परिंदों को बुलाता है घोंसला,
घर लौटता है रोज़ कूचा-गर्द[1] मनचला।
[1]गलियों में घूमने वाला/आवारा

कुछ लौट रहे क़दमों को घसीटते हुए,
रफ़्तार पता दे रही असर-ए-आबला[2]।
[2]छालों का प्रभाव

जो रास्ते पर है उसे मंज़िल की ख़बर है,
लेकिन पता नहीं बचा है कितना फ़ासला।

मसरूफ़ियत[3] तो सोचने देती नहीं दिन में,
महसूस किया रात में वजूद-ए-ख़ला[4]।
[3]व्यस्तता [4]शून्यता का अस्तित्व
लौटे थे पस्त-हाल[5] सब करते हुए तौबा,
उनमें ही सुबह देख रहे अज़्म-ओ-हौसला[6]।
[5]थके-हारे [6]संकल्प और साहस

करती है कायनात[7] कदमताल वक़्त से,
जारी अज़ल[8] से है ये ज़िंदगी का सिलसिला।
[7] संसार/सृष्टि [8]अनादी काल से

ये रास्ते क्या रातभर सोते नहीं 'गौतम',
होते ही सहर सबको ये देने लगे सला[9]।
[9]आमंत्रण

27: पता नहीं हमें दिल क्यों उदास रहता है

पता नहीं हमें दिल क्यों उदास रहता है,
एक साया भी नहीं आस-पास रहता है।

चाहता हूँ मगर बे-ख़्वाब चश्म होते नहीं,
ख़्वाब जो आता है वो बे-असास[1] रहता है।
[1]बिना आधार/बे-बुनियाद

चौंक जाता है एक नाम से वो सौदाई[2],
नीम-बेहोशी में अक़्ल-ओ-हवास रहता है।
[2]पागल

हमें नासेह की ताकीद रोक देती है,
वगरना सामने हरदम गिलास रहता है।

सर्द मौसम में मरना चाह रहा है मुफ़लिस,
बदन पे मरने पर पूरा लिबास रहता है।

कोई करता नहीं है ए'तिराज़ हाकिम से,
उसकी नाराज़ी का सबको हिरास[3] रहता है।
[3]भय

तुम्हारे शहर का मुरीद हो गया 'गौतम',
बहुत बे-फ़िक्र यहाँ आम-ओ-ख़ास रहता है।

28: शम-ए-तन्हाई को जला बैठे

शम-ए-तन्हाई को जला बैठे,
शाख़-ए-गुलमोहर हिला बैठे।

अपनी मर्ज़ी से रो रहे थे अभी,
अपनी मर्ज़ी से खिलखिला बैठे।

हिज्र की रात का तक़ाज़ा था,
बन के हम अहल-ए-ख़ला[1] बैठे।
*[1]*अन्तरिक्ष *(*शून्य*)* के खोजी

ग़ौर से बात कौन सुनता है,
हम भी कहते हुए हकला बैठे।

उसके वादे का एतबार नहीं,
कशमकश में हैं मुब्तला बैठे।

आसमाँ ओढ़कर सोने वाले,
ख़ाक को ख़ाक से मिला बैठे।

सब्र करना था इश्क़ में 'गौतम',
किसलिए आप कर गिला बैठे।

29: ज़िंदगी भर बना रहा काफ़िर

ज़िंदगी भर बना रहा काफ़िर[1],
याद आया ख़ुदा है बिल-आख़िर[2]।
[1]ख़ुदा की उपासना न करने वाला [2]अंततः

गिला हरदम रहा ख़ुदाई से,
आख़िरी दम है साबिर-ओ-शाकिर[3]।
[3]धैर्यवान और आभारी

तौला मीज़ान[4] पर हर रिश्ते को,
उम्र भर आदमी रहा ताजिर[5]।
[4]तराजू [5]व्यापारी

मुँह छिपाने बशर कहाँ जाए,
अगर ये दिल ही हो गया मुख़बिर[6]।
[6]राज़ खोलने वाला

बदी-ओ-नेकी[7] की बयाज़[8] लिए,
मलक[9] के सामने हुआ हाज़िर।
[7]बुराई-अच्छाई [8]नोटबुक [9]मृत्यु का फ़रिश्ता

सर-ब-सज्दा[10] से कुछ नहीं होता,
दिल-ओ-दिमाग़ गर नहीं ताहिर[11]।
[10]सर झुकाना [11]निष्पाप

ज़िंदगी भर रहा दोराहे पर,
नहीं हरम गया नहीं मंदिर।

चैन से सो नहीं पाता 'गौतम',
ख़याल ज़ेहन में रहे वाफ़िर[12]।
[12]बहुत अधिक

30: बे-शजर राह में किसी साये को खोजना

बे-शजर[1] राह में किसी साये को खोजना,
अच्छा नहीं होता कहीं क़दमों को रोकना।
[1]वृक्ष-विहीन

है धूप सख़्त और सफ़र माना सख़्त-तर,
ना ठहरकर तुम माथे का पसीना पोंछना।

अपने अकेलेपन का ही एहसास दे रहा,
पदचाप अपने क़दमों की कानों में सोखना।

हो सकता है हमवार रास्ता ये एक दिन,
सुनने में ये आया है बन रही है योजना।

लगते हैं लोग अच्छे जो कुछ बोलते नहीं
कुछ बोलना ज़रूरी अगर हो तो बोलना।

बैठे हैं सभी लोग जीतने के वास्ते,
तुम दूसरों के सामने पत्ते ना खोलना।

करते हैं अपने लोग ही अब मुख़बिरी 'गौतम',
तुम सबका हर सवाल टालना-मटोलना।

31: गुफ़्तुगू करने का फिर वास्ता नहीं निकला

गुफ़्तुगू करने का फिर वास्ता नहीं निकला,
उससे मिलने का कोई रास्ता नहीं निकला।

रिंद नासेह की सोहबत का मज़ा लेने लगें,
ऐसा मौका ख़ुदा-न-ख़्वास्ता[1] नहीं निकला।
[1]ईश्वर की कृपा से

सबको हालात-ए-सफ़र से शिकायत भी है,
कोई भी बा-दिल-ए-ना-ख़्वास्ता[2] नहीं निकला।
[2]बिना दिली इच्छा के

रास्ते शहर के जाते हैं कू-ए-जानाँ तक,
वहाँ से लौटने का रास्ता नहीं निकला।

साथ जो बैठे हैं रक़ीब उसके कूचे में,
उदू वो निकले कोई दोस्ता[3] नहीं निकला।
[3]दोस्त

कमाल आज कोई ख़ास हुआ महफ़िल में,
कोई देता ख़ुदा का वास्ता नहीं निकला।

आज के दौर का कोई भी आशिक़ाँ[4] 'गौतम',
रिदा-ए-ज़ख़्म[5] से आरास्ता[6] नहीं निकला।
[4]प्रेमी (बहुवचन) [5] ढके हुए घाव [6]सुसज्जित

32: दिल में है बात और ज़बाँ पर है बात और

दिल में है बात और ज़बाँ पर है बात और,
रहती नज़र किसी पे है रहता नज़र में और।

हम पर ये गुज़रता रहा हर बार जब्र-ओ-जौर[1],
हमने था कहा ख़ास कुछ उसने सुना कुछ और।
[1]सितम

देखा दिल-ए-बीमार को तबीब ने टुक ग़ौर,
आया अभी अभी ही था वो चल दिया फ़िल-फ़ौर[2]।
[2]अति शीघ्र

उम्मीद जाम की तो लगाते हैं हम हर दौर,
नासेह रख रहा मगर हम पर ही चश्म-ए-ग़ौर।

अच्छा लगा हर एक को उसका अंदाज़-ए-जौर,
हमको भी ये ख़ुशी रही हम भी हैं ज़ेर-ए-ग़ौर[3]।
[3]ध्यान में

दीवाना उसका देखिए जीता है ब-हर-तौर[4],
चाहे मिला ठिकाना कोई या रहा बे-ठौर।
[4]हर हाल में

शिकवा नहीं करेगा अब 'गौतम' भी किसी तौर,
इस दौर में हर बशर का ये ही है तर्ज़-ओ-तौर।

33: हमारी याद आई थी अगर, बुला लेते

हमारी याद आई थी अगर, बुला लेते,
हमारा दिल भी बहल जाता है, रुला लेते।

उठा के एक क़दम झिझकते-ठिठकते हैं
एक आवाज़ पर अगला क़दम उठा लेते।

ख़बर नहीं थी हमें वो बला[1] सरापा[2] है,
किसलिए ज़िंदगी के बाद इक बला लेते।
*1*मुसीबत *2*सर ऐ पैर तक

बहस तो दैर-ओ-हरम की हुई बोसीदा,
बहस के वास्ते कुछ और मसअला[3] लेते।
*3*समस्या

हम तो मजबूर रहे अपने ही दिल के हाथों,
किस तरह लोग अज़ीज़ों से हैं बदला लेते।

साथ में आपके कोई भी नहीं रोता है,
हर एक हाल में बेहतर है खिलखिला लेते।

हमें कर देता ना-उम्मीद वो अगर 'गौतम',
दुआ-गोई[4] में रहमत-ए-रब्ब-ए-उला[5] लेते।
*4*दुआ माँगना *5*कृपालु ईश्वर की कृपा

34: रोज़ महफ़िल रहे, हंगामा-ए-हयात रहे

रोज़ महफ़िल रहे, हंगामा-ए-हयात[1] रहे,
ख़ुदा का बशर पर पैहम[2] नवाज़िशात[3] रहे।
[1]जीवन का हंगामा [2]लगातार [3]उपकार

कमाँ से तीर निकलने पे नहीं रुकता है,
ज़बाँ से निकले तो रोके न कोई बात रहे।

पसंद लोग नहीं करते हैं ज़िंदान-ए-दहर[4],
असीर[5] अगरचे बनाते ख़्वाहिशात[6] रहे।
[4] दुनिया का बंदीगृह [5]बंदी [6]इच्छाएं

जाम उस रिंद के ही हाथ में देना साक़ी,
हाथ में जाम लेके जिसका दिल सबात[7] रहे।
[7]स्थिर/संकल्पित

राह हमवार लोग क्यों तलाश करते हैं,
सबक़-आमोज़[8] ज़िंदगी में हादसात रहे।
[8]सबक देने वाला

तमाम ग़म हैं ज़माने के साथ में इनके,
ज़ेहन में नक़्श एक जुज़्व-ए-निशात[9] रहे।
[9]एक टुकड़ा (याद) मस्ती/खुशी का

सलाम का जवाब दो सलाम से 'गौतम',
सभी के बीच में बचा तकल्लुफ़ात[10] रहे।
[10] औपचारिकता

35: मुझे काफ़िर बनाकर मुझको पत्थर से नवाज़ा है

मुझे काफ़िर बनाकर मुझको पत्थर से नवाज़ा है,
उसी पत्थर को सर देना मोहब्बत का तक़ाज़ा है।

नज़र-अंदाज़ करने की शिकायत जिनसे करते थे,
उन्हीं कम-बख़्तों के शानों पे अब निकला जनाज़ा है।

कहो मतलब निकाला जाए ऐसे नामे का कैसे,
के जिसमें चुनाँचे, चूँकि, अगरचे है, लिहाज़ा है।

वो बे-जुम्बिश नहीं पर पूरी तहकीकात होने दें,
लहू-आलूदा जिस्म-ओ-पैरहन है ज़ख़्म ताज़ा है।

वहाँ ख़ामोश ही बैठें जहाँ हों आलिम-ओ-फ़ाज़िल,
बहस से होगा क्या हासिल महज होता तनाज़ा[1] है।
[1]विवाद

छपा बे-नाम जो अख़बार में वो है ख़बर केवल,
वो जिसमें नाम होता है वो अफ़्साना-तराज़ा[2] है।
[2]कहानी बनना

नहीं चढ़ता है इस पर रंग कोई दूसरा 'गौतम',
ये चेहरा-ए-सियासत का बहुत माकूल ग़ाज़ा[3] है।
[3]चेहरा निखारने का रंग

36: ख़ुदा से पहले सबकी फ़िक्र करना चाहता हूँ

ख़ुदा से पहले सबकी फ़िक्र करना चाहता हूँ,
जो है ख़ामोश उसकी फ़िक्र करना चाहता हूँ।

खिलौने के लिए बच्चा मचलकर रो रहा है,
उसे बहला के मैं ख़ुश-फ़िक्र[1] करना चाहता हूँ।
[1]बेहतर सोचना

नहीं रहता हमेशा वक़्त सबका एक जैसा,
मैं समझाकर उसे बे-फ़िक्र करना चाहता हूँ।

तमाशाई मुझे घेरे हुए हैं आते-जाते,
हुआ है शोर हा-ए-फ़िक्र करना चाहता हूँ।

भरोसा बे-वजह करता नहीं कोई किसी का,
उसे हैरत है मैं क्यों फ़िक्र करना चाहता हूँ।

अगर सरकार ने खोला हो इसका कोई दफ़्तर,
वहाँ मैं दर्ज़ लम्हा-ए-फ़िक्र करना चाहता हूँ।

मैं मुर्दे की तरह सोने लगा हूँ रोज़ 'गौतम',
मैं अपने आप को बा-फ़िक्र करना चाहता हूँ।

37: ख़्वाब आँखों को सिर्फ़ देते हैं फ़ौरी राहत

ख़्वाब आँखों को सिर्फ़ देते हैं फ़ौरी राहत,
ख़्वाब को देखने से पहले देखिए वक़अत[1]।
[1]औकात

जाम हर बार उसके सामने रख दे साक़ी,
ज़िरह नासेह से करना नहीं अच्छी आदत।

ये ज़रूरी नहीं ख़ुद आयें अयादत के लिए,
ग़ैर से मेरी ख़बर लें वो जब मिले फ़ुर्सत।

सू-ए-मंज़िल क़दम बढ़ाते ही जाते हैं वो,
सफ़र-पसंद मुसाफ़िर ने कब देखी दिक़्क़त।

ग़ैर के सामने अपनों से मत गिला करना,
दिल-ए-नादान नागवार है ऐसी हरकत।

कभी वीराने में, जंगल में, कभी सहरा में
कहाँ कहाँ लिए जाती है किसी की चाहत।

नसीब-ए-इश्क़ में सलाम बहुत है 'गौतम',
गले पड़ जाने की सबमें नहीं होती जुरअत।

38: ख़याल-ए-लुत्फ़-ए-क़ुर्बत से हुए पुर-माइल

ख़याल-ए-लुत्फ़-ए-क़ुर्बत[1] से हुए पुर-माइल[2],
तकल्लुफ़ात-ए-गुफ़्तगू[3] का डर हुआ हाइल[4]।
[1]मिलन की सुखानुभूति [2]पूर्णतया आकृष्ट [3]बातचीत में औपचारिकता [4]अड़चन

अगरचे बे-ज़बान बात क्या कहता सबसे,
तमाम लोग उसकी कोशिशों के हैं क़ाइल।

छिपा हुआ तो हर बशर मे है साइल कोई,
बना है दस्त-ए-तलब[5] ही कासा-ए-साइल[6]।
[5]मांगने वाले हाथ [6]भिखारी का कटोरा

लोग लेते हैं अज़ीज़ों की ख़बर रोज़ाना,
साथ रखने लगे हैं लोग आज मोबाइल।

मेरी सलाह है दरख़्वास्त नई दी जाए,
नहीं आसानी से मिलती है पुरानी फ़ाइल।

रिंद के साथ बात करता है वो जन्नत की,
रिंद नासेह को लगने लगा है ला-ताइल[7]।
[7]गंभीर

रोज़ हालात का करते हो तब्सिरा[8] 'गौतम',
आप एहसास को थोड़ा-सा कीजिए ज़ाइल[9]।
[8]आकलन [9]कमी करना

39: ख़ुशी ला-इंतिहा शदीद हुई

ख़ुशी ला-इंतिहा[1] शदीद[2] हुई,
रू-ब-रू देख लिया ईद हुई।
*1*असीमित *2*अत्यधिक

नूर उतरा हमारे चेहरे पर,
दीद पुर-लुत्फ़-ए-मज़ीद[3] हुई।
*3*अत्यधिक आनंद से भरपूर

गले मिलकर हमें क़रार मिला,
फिर नई अज़्म-ओ-उमीद[4] हुई।
*4*संकल्प और आशा

थाम कर हम जिगर को बैठ गए,
उधर से आज रम्ज़-दीद[5] हुई।
*5*आँख का इशारा

कू-ए-जानाँ में हाज़िरी दी है,
ख़्वाब में उसकी बाज़-दीद[6] हुई।
*6*बदले में आना

उसने आवाज़ दी है पीछे से,
हमारी ख़ुशी तो फ़रीद[7] हुई।
*7*विस्तृत होना

सू-ए-मंज़िल क़दम बढा 'गौतम',
सफ़र में इक रह-ए-उमीद हुई।

40: बला की सर्दी है

बला की सर्दी है,
हवा बेदर्दी है।

लग रही ठंड जिसे,
उससे हमदर्दी है।

नहाना रोज़ सुबह,
यह जवाँ-मर्दी है।

तुम सियासत कह लो,
ये गुंडा-गर्दी है।

जाम कर देना सड़क,
ये दहशत-गर्दी है।

ख़ौफ़ तो लाज़िम है,
शख़्स बा-वर्दी है।

वस्ल का हर वादा,
बना सर-दर्दी है।

माह करता शब भर,
आवारागर्दी है।

ओढ़ कम्बल 'गौतम',
नेक पा-मर्दी है।

41: लेके बैठे सुबह का अख़बार फिर

लेके बैठे सुबह का अख़बार फिर,
चाय के संग पलटते अख़बार फिर।

आपकी ख़ातिर नए कुछ इश्तिहार,
हर सफ़्हे पर लाया है अख़बार फिर।

आप भी ढूँढें ख़बर कुछ काम की,
सुर्ख़ियों से है रंगा अख़बार फिर।

हर सतर के साथ देखा हाशिया,
देखते हैरत से हैं अख़बार फिर।

रद्दी-वाला पैसे देकर ले रहा,
काम कुछ तो आएगा अख़बार फिर।

हादसों के चश्मदीद गवाह को,
कर गए हैरत-ज़दा अख़बार फिर।

कल थी छुट्टी आज सो लो चैन से,
आज आएगा नहीं अख़बार फिर।

माना 'गौतम' सर्द है मौसम बहुत,
ख़ून करता है गरम अख़बार फिर।

42: ऐसा होता तो मो'जिज़ा होता

ऐसा होता तो मो'जिज़ा[1] होता,
रूठ कर वो भी बे-मज़ा होता।
[1]चमत्कार

सामने आता जब मेरा क़ातिल,
वक़्त वो वक़्त-ए-क़ज़ा[2] होता।
[2]मौत का समय

दुआ मरने की देने वाला ही,
सजाता बज़्म फिर अज़ा[3] होता।
[3]मातम

सज़ा-ए-मौत दी मेहरबाँ ने,
छोड़ना ज़िंदा भी सज़ा होता।

फ़ैसला दिल पे हम नहीं लेते,
अगरचे रोज़-ए-जज़ा[4] होता।
[4]कयामत के दिन

ज़िंदगी से सभी ख़फ़ा हैं तो,
ख़याल-ए-मौत मुक़तज़ा[5] होता।
[5]वांक्षित

सितम का क्यों गिला होता 'गौतम'
लिया गर इज़्न-ओ-रज़ा[6] होता।
[6]आज्ञा और सहमति

43: मैं आदतन किसी को भी तंग नहीं करता

मैं आदतन किसी को भी तंग नहीं करता,
वादा गिना के चेहरा बद-रंग नहीं करता।

शीशे का घर बनाकर जो शख़्स रह रहा हो,
वो दूसरों के घर मश्क़-ए-संग[1] नहीं करता।

[1]पत्थर फेंकने का अभ्यास

हर्ज़ा-दरा[2] समझकर मेरी भी बात सुनते,
मैं अर्ज़ ही तो करता हुड़दंग नहीं करता।

[2]व्यर्थ बात करने वाला

वह आदमी भरोसे का अब नहीं है मिलता,
पाने को राज़ दिल तक सुरंग नहीं करता।

निकला है घर से अपने वह करने रहनुमाई,
क्यों सबके मसाइल से वो जंग नहीं करता।

हद्द-ए-नज़र से आगे की दुनिया डराती है,
क्यों फ़िक्र-दाँ नज़र को है तंग नहीं करता।

दीदार के लिए दम अटका हुआ है जिसका,
आशिक़ वो कभी दिल को मलंग नहीं करता।

दुनिया ने सिखा दी है इतनी तो समझदारी,
बे-सबब ख़ुद को हैराँ-ओ-दंग नहीं करता।

है ख़बरदार 'गौतम' अब तेज़ हवाओं से,
हद से ज़ियादा ऊँची पतंग नहीं करता।

44: मुंतज़िर होकर सभी बैठो सदा-ए-मेहर तक

मुंतज़िर[1] होकर सभी बैठो सदा-ए-मेहर[2] तक,
हिज्र के मारे हुए बचते नहीं क्या सहर तक।
[1]प्रतीक्षा में [2]रहम की आवाज़ (बारी)

दिल से दिल तक राह तय करने में लगता वक़्त है,
फ़ासला लगता नहीं ज़्यादा नज़र से नज़र तक।

सू-ए-मंज़िल लोग चलते हैं बनाकर कारवाँ,
हमसफ़र लेकिन मिला करता है केवल सफ़र तक।

रहमदिल क़ातिल को कोई मानता क़ातिल नहीं,
आबरू रहती है क़ायम आबरू-ए-हुनर[3] तक।
[3]कौशल बना रहना

आ रही हैं गाँव तक सारी हवाएँ शहर से,
गाँव के चौपाल से पहुँची शिकायत शहर तक।

हम भी कहते हैं ज़बाँ पर चुप लगाकर बैठिए,
बात निकलेगी तो पहुँचेगी इधर से उधर तक।

वक़्त से कर के अदावत कुछ नहीं हासिल हुआ,
वक़्त के अनुसार ही चलते हैं शम्स-ओ-क़मर[4] तक।
[4]सूर्य और चंद्रमा

डर है अब पानी बिना मर जाए न 'गौतम' कहीं,
पानी होकर आँख से निकला है ख़ून-ए-जिगर तक।

45: सफ़र तमाम ये जिस दम होगा

सफ़र तमाम ये जिस दम होगा,
ख़ुशी इत्ती-सी, इत्ता ग़म होगा।

सितम की कर रहे शिकायत हो,
दफ़अ'तन[1] देखना करम होगा।
[1]अचानक

लाख मुंसिफ़ की ख़ुशामद करिए,
फ़ैसला समय से बरहम होगा।

किसलिए रास्ते से डरते हो,
ज़ुल्फ़-ए-यार सा पुर-ख़म होगा।

राह हमवार चाहने वाले,
आख़िरी मरहला दुर्गम होगा।

तैर कर पार दरिया करना है,
माना इसमें ज़रा जोखम होगा।

लेते रहिए दवा-ए-चारागर,
उसका दावा नै दर्द कम होगा।

नहीं तैयार है जाने के लिए,
कोई बेहूदा बेशरम होगा।

क्यों परेशान हो रहे 'गौतम',
आख़िरी सफ़र बे-रक़म[2] होगा।
[2]बिना पैसे का *(निःशुल्क)*

46: दिल से अगरचे सारी हसरत निकल गई है

दिल से अगरचे सारी हसरत निकल गई है,
ख़्वाहिश मेरी ज़बाँ से तौबा फिसल गई है।

इस हिज्र की तपिश से है रूह पिघल जाती,
वो मोम की शमा थी जलकर पिघल गई है।

क़ाबू में वक़्त रखता है काएनात-ए-आलम,
तारीख़ तक सहर में हर दिन बदल गई है।

एक सूखी रेत जैसी है ज़िंदगी बशर की,
मुट्ठी से निकलकर यह सू-ए-अजल[1] गई है।
[1]मृत्यु की ओर

मय-ख़ाने से लौटा है कुछ रिंद साथ लेकर,
लगता है आज वाइज़ की दाल-गल गई है।

आदम की सुना होगी मरदुम-शुमारी[2] फिर से,
उम्मीद से तबीअ'त कुछ कुछ सँभल गई है।
[2]गणना (जनगणना)

आँखों में नहीं भरते अब चाँद-सितारों को,
पीरी[3] में शब हमारी तो बे-शग़ल[4] गई है।
[3]बुढ़ापा [4]बिना काम के

क्या दिलरुबा के दिल में है बात निहाँ[5] 'गौतम',
महफ़िल में साथ लेकर मेरी ग़ज़ल गई है।
[5]गुप्त/छिपा

47: चराग़ की हुई ख़िलाफ़त है

चराग़ की हुई ख़िलाफ़त है,
तीरगी[1] में हुई इज़ाफ़त[2] है
[1]अंधकार [2]वृद्धि

हम भरोसा अदू का करते हैं,
दोस्ती में बहुत कसाफ़त[3] है।
[3]अशुद्धता (मिलावट)

ये हिदायत हुई ख़ामोश रहें,
या-ख़ुदा बोलना भी आफ़त है।

अब तो रहज़न हैं हमसफ़र मेरे,
नहीं आसान अब मसाफ़त[4] है।
[4]यात्रा

अभी क्यों दफ़्न कर रहे हो मुझे,
जिस्म-ओ-जाँ में कुछ लताफ़त[5] है।
[5]कोमलता (भाव प्रवणता)

उसकी महफ़िल में भीड़ होती है,
भीड़ में रहना ही ज़राफ़त[6] है।
[6]समझदारी

बुलाया आम-ओ-ख़ास को उसने,
आज कुछ बाइस-ए-ज़ियाफ़त[7] है।
[7]आतिथ्य का कारण

हादसा एक, तब्सिरा हैं सद,
सबको सुनिए यही शराफ़त है।

बात सुनता है ग़ौर से 'गौतम',
पास आदाब-ओ-सक़ाफ़त[8] है।
[8]सभ्यता और संस्कार

48: मज़ा अब देने लगा सबको हमारा क़िस्सा

मज़ा अब देने लगा सबको हमारा क़िस्सा,
वो ख़ुद सुनाने लगा सबको हमारा क़िस्सा।

यक़ीं है कोई सबक़ सीखने को मिल जाता,
ब-शर्त-ए-ध्यान से वो सुनता हमारा क़िस्सा।

ज़रा सी बात को बे-वजह खींचते हैं जो,
वो तूल-ए-क़िस्सा[1] मानते हैं हमारा क़िस्सा।
[1]लम्बी कहानी

हमारे क़िस्से का जो शख़्स ख़ास हिस्सा है,
बता रहा है वो रूमानी[2] हमारा क़िस्सा।
[2]काल्पनिक

पसंद कुछ उसे आया है मेरे क़िस्से में,
रोज़ तन्हाई में पढ़ता है हमारा क़िस्सा।

हम अपने क़िस्से में एक नाम जोड़ देते अगर
लोग हँस हँस के सुना करते हमारा क़िस्सा।

सुना रहे हैं लोग अपने भी किस्से 'गौतम',
हर एक क़िस्सा लग रहा है हमारा क़िस्सा।

49: साहिल के पास कोई रवानी नहीं होती

साहिल[1] के पास कोई रवानी[2] नहीं होती,
जो ठहर गए उनकी कहानी नहीं होती।
[1]नदी का किनारा [2]गति

सच बोल नहीं पाए तो ख़ामोश रह गए,
जो झूठी हो वो शो'ला-बयानी[3] नहीं होती।
[3]आग उगलता वक्तव्य

कर देगा वक़्त ज़र्द[4] हर तस्वीर एक दिन,
दिल में सजी तस्वीर पुरानी नहीं होती।
[4]पीला

कहते हैं उसे अश्क जो बहता है आँख से,
हर बहने वाली चीज तो पानी नहीं होती।

आते हैं सीधे-सादे भी बयान सामने,
हर इक बात कथा-कहानी नहीं होती।

रस्म-ओ-रिवाज पास-ओ-लिहाज़ के आगे,
लाचार जो हो जाए जवानी नहीं होती।

कुछ बातें इशारों में कही जाती हैं 'गौतम',
हर एक बात सबसे ज़बानी नहीं होती।

50: दरिया बहता रहा सहारे से

दरिया बहता रहा सहारे से,
राह मिलती रही किनारे से।

हमने सैलाब को भी देखा है,
लौटते मिलते अपने धारे से।

आ गई काम वो सूखी रोटी,
पता चला हमें चटख़ारे से।

ग़म नहीं वादा तर्क होने का,
भेज देते ख़बर हरकारे से।

झील मे डूबने का दिल होता,
चाँद को देखते शिकारे से।

ज़बान उसकी बहुत मीठी थी,
मिले हैं जिससे आँसू खारे से।

ख़्वाब ये काम नहीं आएगा,
मकाँ बनेगा ईंट-गारे से।

राख में आँच नहीं होती है,
अलाव जलता है अंगारे से।

फ़ैसले मिलते हैं अदालत से,
प्यार मिलता है भाई-चारे से।

रोते बच्चे के हाथ में दे दो,
वो बहल सकता है गुब्बारे से।

हमने देखे हैं बरसते पत्थर,
किसी की आँख के इशारे से।

सुबह दम निकले थे उम्मीद लिए,
शाम को लौटे थके-हारे से।

राह उनसे नहीं पूछो 'गौतम',
भटक रहे हैं जो बंजारे से।

51: कोई गफ़लत नहीं है कर रहा है खेद यूँ ही

कोई गफ़लत नहीं है कर रहा है खेद यूँ ही,
अपने हर ज़ख़्म को लेता है वो कुरेद यूँ ही।

तुम्हारे कूचे में आने पे लगी पाबंदी,
वज़ह है ख़ास कोई या किया आएद[1] यूँ ही।
[1]घोषणा

तेरा विसाल नहीं तो तेरा फ़िराक़ सही,
किसे मिली यहाँ लज़्ज़ते-ए-जावेद[2] यूँ ही।
[2]स्थायी खुशी

हर एक आस्ताँ पे करता कौन है सजदा,
ख़ास बुत के बिना कब आता अक़ाएद[3] यूँ ही।
[3]आस्था

काम होगा उसे कुछ पहले तसल्ली कर लें,
कौन देता है दूसरों को फ़वाएद[4] यूँ ही।
[4]लाभ

रक़ीब दोस्त बन गया है तो मन-भेद छिपा,
बे-वज़ह कौन भुला देता है मत-भेद यूँ ही।

फ़क़ीर-ओ-शाह-ओ-सिकंदर चले गये सारे,
ये कायनात रही ज़िंदा-ए-जावेद यूँ ही।

ये क़ैद-ए-ज़िंदगी तो काटनी होगी 'गौतम',
तुम किस उम्मीद से करते गिला-ए-क़ैद यूँ ही।

52: मिल रहे रोज़ सर-ए-राह, ख़ुदा ख़ैर करे

मिल रहे रोज़ सर-ए-राह[1], ख़ुदा ख़ैर करे,
फिर वो करने लगे तबाह, ख़ुदा ख़ैर करे।
[1]खुले आम

हमारा हाल सुन के कहते थे 'बला से मेरी',
आज वो कर रहे परवाह, ख़ुदा ख़ैर करे।

सराब देखकर सहरा में एक तिश्ना-लब,
ढूँढने निकला जल-प्रवाह, ख़ुदा ख़ैर करे।

मेरा पीछा किया नासेह ने मय-ख़ाने तक,
उससे मिलती नहीं पनाह, ख़ुदा ख़ैर करे।

मज़ा शुरू किया था लेना बे-ज़बानी का,
याद आया है हर्फ़-ए-आह, ख़ुदा ख़ैर करे।

उसने पैग़ाम भेजकर है बुलाया हमको,
बज़्म होगी या बारगाह[2], ख़ुदा ख़ैर करे।
[2]अदालत

मुझे बिठा के करम अपने गिनाए 'गौतम',
अब गिनेगा मेरे ग़ुनाह, ख़ुदा ख़ैर करे।

53: अगर हो हौसला तो अलहदा अंदाज़ रखता है

अगर हो हौसला तो अलहदा अंदाज़ रखता है,
निशाने पर हमेशा नज़र तीर-अंदाज़ रखता है।

कतर[1] के एहतियातन पंख ये सैय्याद कहता है,
क़फ़स में भी परिंदा ज़ोर-ए-परवाज़[2] रखता है।
*1*काट कर *2*उड़ान भरने का दम

ज़रूरत दिल को बहलाने की रोज़ाना उसे भी है,
मुसाहिब साथ में साहिब सदा लफ़्फ़ाज़[3] रखता है।
*3*बातूनी

उसी को दर्जा फ़र्द-ए-ख़ास[4] का हाकिम से मिलता है,
जो हर मौके पे कुछ अफ़्कार-ओ-अल्फ़ाज़[5] रखता है।
*4*विशिष्ट व्यक्ति *5*योजनायें और विचार

बनी हरदम रहे माहौल में गरमी ये मक़सद है,
बहस के वास्ते वह नुक़्ता-ए-आग़ाज़[6] रखता है।
*6*प्रारंभिक बिंदु

अगरचे ख़्वाब अच्छा लगता है हर आँख को लेकिन,
नहीं ताबीर[7] हो मुमकिन तो वो ए'तिराज़ रखता है।
*7*स्वप्न-फल

नहीं मिलता किसी से बे-वजह हँसकर कोई अब तो,
उसी को भाव मिलता है जो कुछ नाराज़ रखता है।

उसी को मानते हैं क़ाबिल-ए-ए'ज़ाज़[8] अब 'गौतम',
हो मंज़र सामने कुछ भी नज़र बे-नियाज़[9] रखता है।
*8*सामान योग्य *9*निस्पृह

54: बेकार कर लिया है फिर दिन तमाम उसने

बेकार कर लिया है फिर दिन तमाम उसने,
फिर जाम उठाया है ढलते ही शाम उसने।

हाज़िर वो हो गया है फिर हाज़िरी लगाने,
आते ही कर दिया है फ़र्शी सलाम उसने।

गो जानता है वादा होगा नहीं वफ़ा फिर,
उम्मीद से किया है हर इंतिज़ाम उसने।

तारीख़ पर अदालत जाता है बिला-नाग़ा,
फिर मुल्तवी किए हैं सब आज काम उसने।

देखेगा ख़्वाब सारे वो अब खुली आँखों से,
ज़िद में करी हैं अपनी नींदें हराम उसने।

उसको बयान देना था सामने क़ातिल के,
चुप रह के कर दिया है क़िस्सा तमाम उसने।

जाता कहीं नहीं है जब तक न हो ख़ुशामद,
मेहनत से किया हासिल ऊँचा मक़ाम उसने।

महफ़िल में आज शायद मौका मिले 'गौतम' को,
तैयार कर लिया है अपना कलाम उसने।

55: चेहरा पढ़ने में बहुत माहिर है

चेहरा पढ़ने में बहुत माहिर है,
हमारा हाल उस पे ज़ाहिर है।

रंग हरदम बदल के मिलता है,
सामने जब हुआ मज़ाहिर[1] है।
[1]प्रकट होना *(दृश्य)*

वक़्त ज़ख़्मों के लिए मरहम है,
ज़ख़्म भी देता यही क़ाहिर[2] है।
[2]निर्दयी

कौन सा ख़्वाब रात में देखा,
उठ के आपे से हुआ बाहिर है।

जिसको हमजाम समझ बैठे थे,
देर से समझे शेख़ ताहिर[3] है।
[3]निष्कलंक

कर रहे लोग ख़ुशामद उसकी,
पास उसके कोई जवाहिर है।

हँस के सिल देता है ज़बाँ 'गौतम',
ये सितमगर तो बड़ा साहिर[4] है।
[4]जादूगर

56: सूरत भली भली सी सीरत से भी भला है

सूरत भली भली सी सीरत से भी भला है,
उसका हसीं तसव्वुर रौनक-ए-मशग़ला[1] है।
[1]व्यसन का आधार

कुछ बे-ज़बान बातें करती हैं शोर दिल में,
उनका बयान करना संजीदा मसअला[2] है।
[2]समस्या

पास-ओ-लिहाज़ देता उठने नहीं नज़र को,
देखा नहीं सुना है एक मो'जिज़ा[3] निकला है।
[3]चमत्कार

ला-इंतिहा ख़यालों से उलझने लगे हम,
पैवस्त है ख़ला[4] में या दहर ही ख़ला है।
[4]शून्य

हर रोज़ का तमाशा, हर रोज़ की कहानी,
सूरज सुबह निकलकर हर शाम फिर ढला है।

मक़्सूद-ए-सफ़र[5] क्या, मक़्सूद-ए-मंज़िल[6] क्या,
होते ही सहर देखा फिर निकला क़ाफ़िला है।
[5]यात्रा का तात्पर्य [6]लक्ष्य का तात्पर्य

एहसास हुआ उसकी मौजूदगी का 'गौतम',
दिखता नहीं नज़र को ये कैसा फ़ासला है।

57: हमसे रूठ गए सब अपने

हमसे रूठ गए सब अपने,
बे-तरतीब हुए सब सपने।

अपने से जब उठा भरोसा,
राम नाम बैठे सब जपने।

अफ़्वाहों को कान मिला तो ,
सौ सौ बातें लगीं पनपने।

सर्दी में सब अकड़ रहे हैं,
जिस्म धूप में रख दो तपने।

पेट बचाने की कसरत में,
जान लगी है सबकी खपने।

सोचेंगे कल इस मसले पर,
पहले ज़रा ख़बर दो छपने।

किससे नज़र मिलाता 'गौतम',
दोस्त लगे हैं हमसे छुपने।

58: आइए पास बैठ कर देखें

आइए पास बैठ कर देखें,
सब्ज़[1] है घास बैठ कर देखें।
[1]हरा (हरी)

बात करना नहीं किसी से वो,
लिहाज़-ओ-पास बैठ कर देखें।

जानी-पहचानी है सूरत सबकी,
नए लिबास बैठ कर देखें।

वही शजर है वही मंज़र है,
आज अश्ख़ास[2] बैठ कर देखें।
[2]लोग

दूर से देखा रोने वालों को,
उनका उपहास बैठ कर देखें।

नए मयख़ाना है, नई बोतल,
नया गिलास, बैठ कर देखें।

खड़े हुए हैं बे-शनास[3] बहुत,
नज़र-शनास[4] बैठ कर देखें।
[3]कम-अक्ल [4]बुद्धिमान

खड़े खड़े तलाशते हो किसे,
नया विकास बैठ कर देखें।

आसमाँ आज भी सलामत है,
उसे बिंदास बैठ कर देखें।

चारागर आते जाते देख रहे,
दर्द-ए-ख़ास बैठ कर देखें।

शोर-ग़ुल ने इसे किया बहरा,
शहर उदास बैठ कर देखें।

जिससे उम्मीद लगाई 'गौतम',
क्यों है बे-आस बैठ कर देखें।

59: यहाँ वहाँ की बात करता है

यहाँ वहाँ की बात करता है,
कहाँ कहाँ की बात करता है,

नहीं भरोसा जहाँ का हमको
वो दो-जहाँ की बात करता है।

ज़मीन पाँव के नीचे आई,
तो आसमाँ की बात करता है।

फ़लक[1] को ओढ़कर सोया होगा,
वो ला-मकाँ[2] की बात करता है।
[1]आसमान [2]बे-घर

ग़म-ए-जानाँ से परेशाँ होकर,
ग़म-ए-दौराँ की बात करता है।

फ़ाएदा जिसका नहीं होता है,
अपने नुक़साँ की बात करता है।

उससे उम्मीद है बनी 'गौतम',
बज़्म-ए-इम्काँ[3] की बात करता है।
[3]संभावना तलाशने की सभा

60: मेरा ख़याल है अब ख़ुद को तलाशा जाए

मेरा ख़याल है अब ख़ुद को तलाशा जाए,
रोज़ क्यों एक बुत-ए-इश्क़ तराशा जाए।

अक्स आईने में बदमस्त नज़र आता है,
ख़ुदी[1] को छोड़ें तो शायद उतर नशा जाए।
[1]अभिमान

तल्ख़ी-ए-ज़िंदगी[2] से रू-ब-रू होने के लिए,
नज़र से सहर में हर ख़्वाब दिल-कुशा[3] जाए।
[2]जीवन की कड़वाहट [3]आँख को भाने वाला

तमाशबीनों से नाराज़ी ठीक है लेकिन,
किसलिए अपने को बनाया तमाशा जाए।

दर-ओ-दीवार का नक़्शा बनाने से पहले,
नए शहर का खींचा ठीक से नक़्शा जाए।

घरों में सबके चराग़ाँ तो किया जाए मगर,
चराग़ से घर के जलने का अंदेशा जाए।

दिल को क़ाबू में करो करता है ये बे-क़ाबू,
चाहता है ये कू-ए-जाँ में हमेशा जाए।

फ़ालतू चीज़ें बहुत दफ़्न मिलेंगी 'गौतम',
ग़ौर से देखा आज दिल का हर गोशा[4] जाए।
[4]कोना

61: बता रहे हैं लोग हुक्म-ए-आएदा क्या है

बता रहे हैं लोग हुक्म-ए-आएदा[1] क्या है,
और यह बहस हो रही है फ़ाएदा क्या है।
[1]प्राप्त निर्देश

नज़र उठा के देखना है आसमाँ को अगर,
नज़र ज़मीन पर रहे ये क़ाएदा क्या है।

यहाँ सब काम कर रहे हैं अपनी मर्ज़ी का,
अगरचे पूछते हैं मर्ज़ी-ए-ख़ुदा क्या है।

बात कहने का तो हक़ भी है इजाज़त भी है,
चुप लगाना हो तो क़ानून-क़ाएदा क्या है।

आफ़त-ए-जाँ जिसे सब लोग कहा करते हैं,
हुज़ूर ही हमें बता दें ये अदा क्या है।

या-ख़ुदा वक़्त के हाथों में है नसीब अगर,
तेरी ख़ुदाई में बशर का ओहदा क्या है।

सबूत चैन-ओ-अमन का शोर है 'गौतम',
यहाँ ख़ामोशी का बाइस यदा-कदा क्या है।

62: ना दीद है कमज़ोर ना आँखों में पड़ी धूल

ना दीद है कमज़ोर ना आँखों में पड़ी धूल,
कुछ देखा नहीं करते हैं अर्बाब-ए-उक़ूल[1]।
[1]समझदार लोग

है बाइस-ए-सर-दर्द हादसों की पूछताछ,
क्यों आप थे मौजूद वजह दीजिए माक़ूल।

देता है मज़ा चाय संग अख़बार सुबह का
करते नहीं ख़बर पे कोई बहस-ए-फ़ुज़ूल।

आई नहीं जो नींद रातभर तो क्या करें,
कमरे का किराया तो किया जायेगा वसूल।

हैरत-ज़दा करता रहा दीवाना इश्क़ में,
उसने सितम क़ुबूल किया करम ना-क़ुबूल।

वह बे-वजह करता नहीं सलाम किसी को,
बंदा हो कोई सुर्ख़रू मिलता है बा-उसूल।

देता नहीं गवाही कोई भी तमाशबीन,
क़ातिल झिझक रहा है क्यों तैयार है मक़्तूल।

हर रात पिछली रात ही जैसी गुज़र गई,
हर दिन भी गुज़रता रहा है हस्ब-ए-मामूल[2]।
[2]हमेशा की तरह

छुट्टी के दिन ही मरने का लो फ़ैसला 'गौतम',
कह सकता नहीं यार कोई आज हैं मशग़ूल।

63: बीमार-ए-इश्क़ था जुनूँ-आसार हो गया

बीमार-ए-इश्क़ था जुनूँ-आसार[1] हो गया,
लाचारी में फिर चारागर बेज़ार[2] हो गया।
[1]पागल [2]ऊब जाना

वो यूँ ही चला आया अयादत के वास्ते,
एहसान मरते मरते बे-शुमार हो गया।

मिलने लगा है आजकल लोगों से वो झुककर,
ग़ाफ़िल जिसे समझते थे होशियार हो गया।

हम चाहते थे फिर से वो नाराज़ हो हमसे,
हमने गिला किया वो शर्मसार हो गया।

फिर उसने कर दिया है एक वादा वस्ल का,
दोबारा उसका हिज्र असर-दार हो गया।

था ख़्वाब की गिरफ़्त में बेहोश रातभर,
होते ही सहर आदमी बेदार हो गया।

आँखों में जो दम उतरा उसे देखकर 'गौतम',
सारा ज़माना तालिब-ए-दीदार[2] हो गया।
[2]दर्शन का अभिलाषी

64: दिया है नाम तो पहचान भी दो

दिया है नाम तो पहचान भी दो,
इस परिंदे को अब उड़ान भी दो।

सिर्फ़ इतनी सी इल्तिजा की है,
ज़मीन दी है आसमान भी दो।

नज़र में सैकड़ों निशाने हैं,
हाथ में तीर-ओ-कमान भी दो।

घर का सपना दिया है आँखों में,
रहने के वास्ते मकान भी दो।

नाम लेने लगे हो क़ातिल का,
उसके बारे में एक बयान भी दो।

फ़साना मेरा सुनाने वाले,
एक अच्छा इसे उन्वान[1] भी दो।
[1]शीर्षक

मौका मिलता है रोज़ रोने का,
हँसने को बाब-ए-इम्कान[2] भी दो।
[2]संभावना का द्वार

हौसला दिल में है अगर 'गौतम',
वक़्त जब ले तो इम्तिहान भी दो।

65: जला के गर चराग़-ए-दिल रखते

जला के गर चराग़-ए-दिल रखते,
नज़र में फ़िक्र-ए-मसाइल[1] रखते।
*1*समस्याओं की चिंता

गिनने बैठे थे जब अज़ीज़ों को,
अपने हमसाये[2] को शामिल रखते।
*2*पड़ोसी

उसकी बातों पे ग़ौर हो फिर से,
जो दलीलों से हैं क़ाइल रखते।

बनी रहती है कुछ कमी सबको,
ख़ुद को ताउम्र हैं साइल[3] रखते।
*3*याचक/भिक्षुक

बोझ सर पर नहीं उठा सकते,
अपने सीने पे जो हैं सिल[4] रखते।
*4*भारी पत्थर

न होती अर्ज़ी अगर ग़ौर-तलब,
संभाल कर नहीं फ़ाइल रखते।

तमीज़-ए-नेक-ओ-बद[5] अता होती,
सामने हक़[6] के क्यों बातिल[7] रखते।
*5*पाप-पुण्य की समझ *6*सत्य *7*झूठ

ख़ुद से पहचान बढ़ाने के लिए,
आईना अपने मुक़ाबिल रखते।

गुफ़्तगू के लिए दिल था माइल[8],
तकल्लुफ़ात[9] ना हाइल[10] रखते।
*8*आकृष्ट/इच्छुक *9*औपचारिकता *10*अड़चन

इश्क़ से गर है शिकायत 'गौतम',
दिल को पाबंद-ए-सलासिल[11] रखते।
*11*बेड़ियों में बंद

66: वजूद-ए-अब्र महज़ क़तरा है

वजूद-ए-अब्र[1] महज़[2] क़तरा[3] है,
मगर सहरा[4] के लिए ख़तरा है।
[1]बादल का अस्तित्व [2]केवल [3]पानी की बूंद [4]मरुथल

पक्की राहों पे संभलकर चलिए,
धूप में पिघलता अलकतरा[5] है।
[5]कोल-तार

डर अदू से हमें नहीं लगता,
हमें यारों से ख़ौफ़-ओ-ख़तरा है।

रिंद ने साथ में बिठाया नहीं,
आज नासेह का मुँह उतरा है।

क़फ़स[6] काफ़ी है परिंदों के लिए,
एहतियातन परों को कतरा है।
[6]पिंजरा

फ़लक पे आज चाँद आधा है,
किसी भूखे ने इसे कुतरा है।

सुबह अख़बार पढ़ रहा है वह,
रात में देखा जिसने पतरा[7] है।
[7]पत्रा *(पंचांग)*

जेब में सिक्के संभालो 'गौतम',
ताड़ता सबको जेब-कतरा है।

67: हम परेशाँ हैं याद आने से

हम परेशाँ हैं याद आने से,
वह परेशाँ है भूल जाने से।

मुझको मुझसे यही शिकायत है,
मैं बहल जाता है बहलाने से।

सोचकर जाते हैं कू-ए-जानाँ,
बात बनती है आने जाने से।

निकलते देखा एक पागल को,
कभी हरम कभी बुतख़ाने से।

निकल गए बिना सलाम किए,
जो लगे थे मुझे पहचाने से।

तौबा मयख़ाने से की रिंदों ने,
जाए नासेह किस बहाने से।

ज़िद्द पकड़ी है एक बच्चे ने,
फ़ाएदा क्या उसे समझाने से।

ले रहे लोग ख़बर 'गौतम' की,
काम कुछ निकला है दीवाने से।

68: कभी हमें भी हम-नज़र करते

कभी हमें भी हम-नज़र करते,
आपके साथ हम सफ़र करते।

घर से मेहमान जाने वाले हैं,
क्यों हैं सामाँ इधर-उधर करते।

जानते थे अगर ख़ुदा का पता,
कभी हमें ख़बर-वबर करते।

क़द्र करता है हुनर-मंदों की,
हमारी क्यों क़दर-वदर करते।

सीधा सीधा सवाल करने पर,
किसलिए हैं अगर-मगर करते।

दवा करती नहीं असर हम पर,
दुआ तो ढंग से चारागर करते।

अपनी आँखों से देख लो आकर,
किस तरह हैं गुज़र-बसर करते।

बोलने का हमें मौका मिलता,
हम भी पूरी कसर-वसर करते।

भूल जाना ही मुनासिब होता,
आपको याद हैं मगर करते।

अगर जल्दी थी हमें बतलाते,
हाल-ए-दिल पेश मुख़्तसर करते।

ख़बर होती वो चाँद देखेंगे,
हम नज़र अपनी बाम पर करते।

यदि भरोसा हमें होता कल पर,
रात भर जागकर सहर करते।

सामने आते बे-नक़ाब अगर,
पेश अंदाज़-ए-दीदावर[1] करते।
[1]शौकीन तौर तरीका

एक वादा अगर किया होता,
हम इंतिज़ार उम्र भर करते।

माना दुनिया पे नज़र है 'गौतम',
मेरी जानिब नज़र-वज़र करते।

69: ख़्वाब टूटा है सुबह होने पर

ख़्वाब टूटा है सुबह होने पर,
जिस्म अलसा रहा बिछौने पर।

चौंक कर ऐसे देखता है मुझे,
यक़ीं कठिन हो मेरे होने पर।

गर्द-ए-ग़म से नज़र धुंधली थी,
साफ़ होती गई है रोने पर।

गंडा-ता'वीज़ के दीवाने को,
अब भरोसा है जादू-टोने पर।

लबों की तिश्नगी नहीं जाती,
अश्क से आँखों को भिगोने पर।

हाथ में जो नहीं आयेगा मेरे,
दिल मचलता है उस खिलौने पर।

बारहा हमने की कोशिश लेकिन,
हम बिखरते गए पिरोने पर।

सही क़ीमत नहीं मिली 'गौतम',
बिकेगा आज औने-पौने पर।

70: रहगुज़र पर पाँव हैं बे-वास्ते

रहगुज़र पर पाँव हैं बे-वास्ते[1],
हम नहीं हैं मंज़िलों के वास्ते।
[1]अकारण

रिंद भी नासेह से कहने लगा,
छोड़िए हमको ख़ुदा के वास्ते।

लौट आते हैं परिंदे शाम तक,
सुबह जाते हैं कहाँ किस वास्ते।

सोचते हैं या हुआ तकिया-कलाम,
'इतनी झंझट चार दिन के वास्ते'।

आ रहे हैं वो अयादत के लिए,
शोर है निकले हैं किस के वास्ते।

जी रहा है हर बशर अपने लिए,
जान क्यों देगा किसी के वास्ते।

आप तो नाराज़ हमसे हो गए,
दिल्लगी की थी हँसी के वास्ते।

लोग 'गौतम' से नहीं अब बोलते,
चुप नहीं रहता किसी के वास्ते।

71: ख़्वाब अच्छे नहीं लगते अब तो

ख़्वाब अच्छे नहीं लगते अब तो,
बोझ लगने लगी हमें शब तो।

सुना नसीब भी बदलता है,
हमसे रूठा रहा मगर रब तो।

मेरे बारे में गलत सोचा है,
बताते उसको बात हो तब तो।

मुँह से आवाज़ ही नहीं निकली,
थरथराते रहे मगर लब तो।

हम ख़ुदा आपको बना लेते,
समझ में आते आपके ढब तो।

गाँव की हवा भी ख़राब हुई,
गई नाराज़ी शहर से अब तो।

कमी किसकी है खल रही 'गौतम',
आए मिलने के लिए हैं सब तो।

72: ख़ुद परिंदों ने आसमाँ छोड़ा

ख़ुद परिंदों ने आसमाँ छोड़ा,
क़फ़स ने साथ फिर कहाँ छोड़ा।

तुझसे नाराज़ नहीं मीर-ए-सफ़र,
हमने मर्ज़ी से कारवाँ छोड़ा।

बात मुद्दे पे करने आए थे,
कहाँ से पकड़ के कहाँ छोड़ा।

शजर की छाँव में सोचा उसने,
किसलिए घर का साएबाँ[1] छोड़ा।
[1]चंदवा

देखा क़ातिल को सर झुकाए हुए,
रट के जो आए थे बयाँ छोड़ा।

शुमार अपनों में किया लेकिन,
फ़ासला उसने दरमियाँ छोड़ा।

उँगलियों से लगे टटलोने वो,
राख ने लग रहा धुआँ छोड़ा।

रास आया नहीं जहाँ हमको,
तंग होकर है दो-जहाँ छोड़ा।

रास्ता सबको है पता 'गौतम',
इसीलिए हमने बे-निशाँ छोड़ा।

73: चाहने से मुकद्दर बदलता अगर

चाहने से मुकद्दर बदलता अगर,
शाम होने पे सूरज ना ढलता अगर।

जिसकी ताबीर[1] मुमकिन हो सौ फ़ीसदी,
बस वही ख़्वाब आँखों में पलता अगर।
[1]स्वप्न-फल

अब्बा रोटी की ख़ातिर ना जाते कहीं,
झुनझुने से ही बच्चा बहलता अगर।

सर्द मौसम से लाचार होते नहीं,
ख़ून सबकी रगों में उबलता अगर।

रहनुमाई की होती ज़रूरत नहीं,
भीड़ का बन के हिस्सा मैं चलता अगर।

दर्द इस बात पर क्यों न हो लाज़मी,
वो रकीबों से हो मिलता-जुलता अगर।

आस्ताँ पे पड़ा क्यों ना रहता कोई,
एक दस्तक पे दरवाज़ा खुलता अगर।

हिज्र की रात 'गौतम' अखरती नहीं,
ओक[2] में चाँद हर दिन पिघलता अगर।
[2]अंजुरी

74: चार-सू अपनी नज़र रखता है

चार-सू अपनी नज़र रखता है,
नज़र बचा के नज़र रखता है।

लोग रखते हैं नज़र में उसको,
वो भी लोगों पे नज़र रखता है।

गिला-गुज़ारी[1] करने वालों पर,
वो अपनी ख़ास नज़र रखता है।
[1]शिकायत करना

भेद ले पाते नहीं अहल-ए-नज़र[2],
वो जब झुका के नज़र रखता है।
[2]दृष्टि के पारखी

नज़र-शनास[3] हार कर बोले,
कमाल की वो नज़र रखता है।
[3]विद्वान

ख़ुदा बचाए उसकी नज़रों से,
कहाँ कहाँ वो नज़र रखता है।

नज़र मिला नहीं पाता उससे,
जिस पे वो टेढ़ी नज़र रखता है।

नज़र से जिसको गिराया उसने,
फिर नहीं उस पे नज़र रखता है।

कहीं पे सीधी नज़र है 'गौतम',
कहीं पे तिरछी नज़र रखता है।

75: दोस्त सब हमको ज़बरदस्त मिले

दोस्त सब हमको ज़बरदस्त मिले,
वक़्त पे हमको सभी व्यस्त मिले।

चारागर को हुई तस्कीन-ए-जाँ[1],
दर्द-ए-दिल के सब अभ्यस्त मिले।
[1]दिल को चैन

फिर से उम्मीद मिल गई शायद,
सारे मुफ़लिस हमें अलमस्त मिले।

नहीं मिला कोई ख़ैरात-तलब,
फ़क़ीर सारे फ़ाका-मस्त मिले।

आज फिर से मुआइना होगा,
मौके पर ख़ास बंदोबस्त मिले।

एक भी दिल नहीं मिला दिल से,
दस्त से बेशुमार दस्त मिले।

उसे पिंदार-ए-इश्क़[2] है 'गौतम',
ख़ुदी के साथ वो ख़ुद-मस्त मिले।
[2]प्यार पर घमंड

76: वक़्त बीता हुआ आता कभी आइंदा नहीं

वक़्त बीता हुआ आता कभी आइंदा[1] नहीं,
सितारा टूट कर रह पाता है ताबिंदा[2] नहीं।
[1]भविष्य में [2]चमकदार

हौसला जिसमें हो उम्मीद उसी से रखिए,
दफ़्न कर देना चाहिए जो लगा ज़िंदा नहीं।

जिसे नतीजे का पहले से रहा अंदाज़ा,
मुक़ाबला वो हार कर हुआ शर्मिंदा नहीं।

उम्र के साथ बदल जाती है शक़्ल-ओ-सूरत,
और हालात भी रहते कभी पाइंदा[3] नहीं।
[3]लगातार/हमेशा

फ़िक्र लोगों को करते देखा है केवल अपनी,
किसी का कोई भी बनता है नुमाइंदा नहीं।

शहर में भीड़ से कोई भी नहीं डरता है,
हाथ में जब तलक किसी के एक झंडा नहीं।

फ़िक्र लीडर को है तक़रीर[4] से ज़्यादा इसकी,
आज जलसे में अगर आया कोई बंदा नहीं।
[4]भाषण

शुमार[5] आशिक़ों में हो नहीं सकता 'गौतम',
अगर दीदार-ए-यार का कोई ख़्वाहिंदा[6] नहीं।
[5]गिनती [6]याचक/चाहने वाला

77: झाँकना दिल में उतरकर लगता है मुमकिन मगर

झाँकना दिल में उतरकर लगता है मुमकिन मगर,
माज़ी का हो जाना अबकर[1] लगता है मुमकिन मगर।
[1]लुप्त

दिल से दिल तक राह सीधी इश्क़ में दुश्वार है,
देखकर चलना संभलकर लगता है मुमकिन मगर।

अज़ल[2] से लेकर अजल[3] तक पढ़ रहे हैं बारहा,
समझ पाना ढाई आखर लगता है मुमकिन मगर।
[2]अनादि काल [3]मृत्य काल

लोग कहते हैं कठिन होती है पनघट की डगर,
भर के लाना छूछी गागर लगता है मुमकिन मगर।

रिंद मयख़ाने में हर शब करता ये कोशिश रहा,
डूबना साग़र[4] में सागर[5] लगता है मुमकिन मगर।
[4]प्याला [5]समंदर

वक़्त के मरहम से भर जाता है गहरा घाव तक,
नक़्श भी ना छोड़े भरकर लगता है मुमकिन मगर।

ज़िंदगी से जो ख़फ़ा है वो भी 'गौतम' जी रहा,
डूबना दरिया में जाकर लगता है मुमकिन मगर।

78: दिल-ओ-दिमाग़ तसफ़िया करते

दिल-ओ-दिमाग़ तसफ़िया[1] करते,
इश्क़ गर करते सूफ़िया करते।
[1]सहमत

वफ़ा का दावा कर रहे थे तो,
बयान-ए-शौक़ हल्फ़िया[2] करते।
[2]सौगंध लेकर

इश्क़ में करते गुज़ारिश केवल,
ज़बरदस्ती हैं माफ़िया करते।

मलक को जाके मुँह दिखाना है,
किसलिए फ़ेल-ए-मनफ़िया[3] करते।
[3]निषेध कार्य

आप के हुस्न पर ग़ज़ल-गोई,
कहाँ तलाश-ए-क़ाफ़िया करते।

शेख़ दो घूंट पिलाकर पहले,
पेश जन्नत-ए-सूफ़िया[4] करते।
[4]काल्पनिक दुनिया

चुप लगा कर रहा करो 'गौतम',
लोग अब काम हैं ख़ुफ़िया करते।

79: दीन-दुनिया से बे-ख़बर देखा

दीन-दुनिया से बे-ख़बर देखा,
तिश्ना-लब को है चश्म-तर देखा।

मिला वो बाज़-जुस्त[1] आज हमें,
इश्क़ का जज़्ब-ओ-असर देखा।
[1]बे-तलाश

शोख़ी-ए-फ़ित्नागर[2] उरूज[3] रही,
आह को हमने बे-असर देखा।
[2]जादूगर की चंचलता [3]शिखर पर

शब के जागे हुए को चैन पड़ा,
जिस घड़ी नूर-ए-सहर देखा।

फ़ासला रखने लगा मक़्तल से,
अपने क़ातिल को बे-जिगर देखा।

यूँ ही वो आए अयादत के लिए,
ये तसल्ली है उसने घर देखा।

एक मंज़र भी ख़ुश-गवार नहीं,
मेरी नज़र ने भी मगर देखा।

दोस्त जब से हमें कहा 'गौतम',
सबने दुश्मन की नज़र से देखा।

80: ख़िलाफ़ अपने मैं झूठी गवाही देता रहा

ख़िलाफ़ अपने मैं झूठी गवाही देता रहा,
मेरा क़ातिल मुझे जादू-निगाही[1] देता रहा।
[1]मोहने वाली दृष्टि

मेरा बयान मेहरबाँ ने सुना है लेकिन,
एक हुंकारी नहीं दी जमाही देता रहा।

बाइस-ए-लू भी वही आफ़ताब होता है,
जो सबको पहले बाद-ए-सुब्ह-गाही[2] देता रहा।
[2]सुबह की हवा

ख़ुदा के कारोबार को तो बस ख़ुदा जाने,
चाँद के वास्ते शब को सियाही देता रहा।

रिहाई देता दरोगा रहा ज़रदारों को,
और मुफ़लिस को ये सेवा सिपाही देता रहा।

राह पर जिसने पहले क़दमों के निशाँ छोड़े,
आने वालों को हौसला वो राही देता रहा।

जाने क्यों शेख़ ही रहता है परेशान बहुत,
हुस्न-ए-इल्हाम[3] तो सबको इलाही[4] देता रहा।
[3]आत्मा की आवाज़ का सौंदर्य [4]ईश्वर

मुरीद हो गया है उस फ़क़ीर का 'गौतम',
जो बिना फ़र्क़ किए ख़ैर-ख़्वाही[5] देता रहा।
[5]शुभ-कामनाएं

81: सुकून मिल गया जब रात हुई

सुकून मिल गया जब रात हुई,
ख़्वाब में सबसे मुलाक़ात हुई।

सिर्फ़ ख़ामोश एक शख़्स रहा,
बाक़ी लोगों से बहुत बात हुई।

खेल में आज यही फ़र्क़ हुआ,
आज शह-मात बे-बिसात हुई।

दफ़अ'तन[1] सामने आ जाने पर,
बंदगी अज़-रह-ए-आदात[2] हुई।
[1]अचानक [2]आदतन

कशिश-ए-दिल[3] से वो खिंचे आए,
या दुआ वज्ह-ए-करामात[4] हुई।
[3]दिल का आकर्षण [4]चमत्कार का कारण

गुफ़्तुगू करने को मिलकर बैठे,
याद कर कर के शिकायात[5] हुई।
[5]उलाहने

मेरी कोशिश की बदौलत 'गौतम',
ख़ुशी कम ग़मों की बोहतात हुई।

82: नज़र में कुछ ख़याल में कुछ है

नज़र में कुछ ख़याल में कुछ है,
अमल[1] में कुछ मक़ाल[2] में कुछ है।
*1*काम *2*बोली

इश्क़ में एक ही एहसास नहीं,
हिज्र में कुछ विसाल में कुछ है।

रंग चेहरे का आता जाता है,
ख़ुशी में कुछ मलाल में कुछ है।

ख़ून-ओ-आब एक जैसे हैं,
सर्द में कुछ उबाल में कुछ है।

फ़र्क़ रफ़्तार हुई क़दमों की,
ताल में कुछ बे-ताल में कुछ है।

हमने देखा है बशर को अक्सर,
ताब[3] में कुछ मजाल[4] में कुछ है।
*3*सामर्थ्य *4*हिम्मत

हौसला सबका जुदा है 'गौतम',
शेर में कुछ शग़ाल[5] में कुछ है।
*5*लोमड़ी

83: सुर्ख़ियाँ देखिए अख़बारों की

सुर्ख़ियाँ देखिए अख़बारों की,
ख़बर छपने लगी क़तारों की।

इस नए दौर ने निकम्मा किया,
अब ज़रूरत नहीं हरकारों[1] की।
[1]पत्र-वाहक

लोग ख़ुद करते हैं अदाकारी,
क़द्र क्यों करते अदाकारों की।

नहीं मक़्तल में जाएगा क़ातिल,
वहाँ पे भीड़ है मक्कारों की।

बहस हालात पर हुई जम कर,
बात कब होगी जिम्मेदारों की।

राख को छानना ज़रूरी है,
तलाश हो रही अँगारों की।

सुनी गई नहीं जिस पर गुज़री,
सुनी गई सलाह-कारों की।

बीच सहरा में बैठकर 'गौतम',
बात सब सुन रहे बहारों की।

84: मुझको जाना है अभी दूर तलक

मुझको जाना है अभी दूर तलक,
आप भी चलिए थोड़ी दूर तलक।

आती आवाज़ नहीं पीछे से,
चला आया हूँ इतनी दूर तलक।

ख़बर उसे है मिल गई लेकिन,
मदद पहुँची नहीं मजबूर तलक।

बात वाइज़ ने जो शुरू की थी,
निकली जन्नत से गई हूर तलक।

सोचे-समझे बिना निकलने पर,
बात जाती है बहुत दूर तलक।

बहस अंगूर से अंगूरी तक,
फिर गई चश्म-ए-मख़मूर[1] तलक।
[1]नशीली आँख

एक गुस्ताख़ ने गुस्ताख़ी की,
बात आ पहुँची है हुज़ूर तलक।

ऐसी बेबाकी[2] किसलिए 'गौतम',
देख शर्मा गया है ऊर[3] तलक।
[2]स्पष्टवादिता [3]नग्न

85: मुझे पता है क्या किया होगा

मुझे पता है क्या किया होगा,
ऐब-जूई[1] पे हँस दिया होगा।
[1]ऐब गिनाना

जानते आप अगर बेहतर हैं,
बतायें और क्या किया होगा।

बहुत नाराज़ लग रहा था वो,
ख़ुदा ही जाने क्या किया होगा।

गर्म तक़रीर[2] दिया करता था,
ज़बाँ को किसलिए सिया होगा।
[2]भाषण

दफ़अ'तन जाम रिंद ने पटका,
गिला वाइज़ ने कुछ किया होगा।

तैश में जाने पर हुज़ूर ने तो,
आड़े हाथों उसे लिया होगा।

उठा जहाँ से था कसम खाकर,
वहीं गया वो बे-हया होगा।

साथ कोई भी नहीं है 'गौतम',
तन्हा बेकार दिन किया होगा।

86: क़दम हुए अभी लाचार नहीं

क़दम हुए अभी लाचार नहीं,
सफ़र का दूसरा नाचार[1] नहीं।
[1]विकल्प

रू-ब-रू हो गए हक़ीक़त से,
आँख में ख़्वाब-ए-बेदार[2] नहीं।
[2]खुली आँखों के सपने

मुझे अज़ीज़ों से मोहब्बत है,
मैं होश-मंद हूँ हुशियार नहीं।

नशा नासेह को ख़ुदी का है,
चलो माना उसे मय-ख़्वार नहीं।

कल ये मैय्यत उठाने आयेंगे
ये दुनियादार हैं ग़म-ख़्वार नहीं।

चारागर ने करी शिकायत है,
इश्क़ के मारे हो बीमार नहीं।

दरारें चौड़ी देखकर कोई,
बैठता है पस-ए-दीवार नहीं।

वक़्त से तेज़ जा रहा है जो,
हादसों से हुआ दो-चार नहीं।

डर के मौजों से रुके साहिल पर,
दरिया कर सकते कभी पार नहीं।

सुन के जाने लगा हर चौखट पर
सज्दा होता कभी बेकार नहीं।

मौत का इंतिज़ार था 'गौतम',
वक़्त आया तो हैं तैय्यार नहीं।

87: सर-ओ-सामान साथ गर होगा

सर-ओ-सामान[1] साथ गर होगा,
बड़ा मुश्किल भरा सफ़र होगा।
[1]यात्रा का सामान

राहज़न[2] का जिसे अंदेशा है,
वो मुसाफ़िर नहीं निडर होगा।
[2]लुटेरा

रब्त रखता नहीं हमसाये से,
रात भर सोता बा-फ़िकर होगा।

हिज्र में उसका हाल क्या मालुम,
हमारे जैसा ही उधर होगा।

वार पीछे से किया है जिसने,
तुम्हारा लख़्त-ए-जिगर[3] होगा।
[3]दिल का टुकड़ा *(प्रिय/अपना)*

निकल के धूप में वो सहरा-तलब,
पूछता है कहाँ शजर होगा।

आप देते रहें दुआ हमको,
एक दिन तो ज़रा असर होगा।

उसने भी देखी है दुनिया 'गौतम',
मेरा बयान दरगुज़र[4] होगा।
[4]अनदेखा

88: सहर के साथ शब का इंतिज़ार करते हैं

सहर के साथ शब का इंतिज़ार करते हैं,
अजीब लोग हैं ख़्वाबों से प्यार करते हैं।

गुनाह कितने हुए यह मलक[1] बताएगा,
बस इतना जानते हैं बार बार करते हैं।
[1]चित्रगुप्त

मैं चाहता हूँ आँख चार वो करें हमसे,
वो बेरुख़ी से और तलबगार करते हैं।

गिला यारों से नहीं कीजिए ख़फ़ा होकर,
अपने काँधों पे यार ही सवार करते हैं।

क्या पता आप भी करते हैं या नहीं करते,
आपको याद रोज़ाना सरकार करते हैं।

सामने आने पर हो जाती है ख़ामोश ज़बाँ,
रोज़ कुछ बोलने का हम विचार करते हैं।

उसी को सोचें उसे चाहें उसी को देखें,
अब ऐसे शौक़ ही पैदा आज़ार[2] करते हैं।
[2]दु:ख/क्लेश

लम्हा लम्हा गुज़र रही है ज़िंदगी 'गौतम',
ये ही लम्हात मुसलसल बेज़ार[3] करते हैं।
[3]विमुख

89: एक बे-आब है बना मिसाल-ए-सेहरा

एक बे-आब है बना मिसाल-ए-सहरा[1],
वो जलती धूप में बबूल के नीचे ठहरा।
[1]रेगिस्तान का उदाहरण

मेरे सवालों को देता नहीं जवाब कोई,
अक्स आईने में है बे-ज़बान या बहरा।

कभी आँखों पे चढ़ाते हैं धूप का चश्मा,
कभी लगा रहे हैं ख़ुद ही ख़्वाब का पहरा।

शोहदा[2] इश्क़ में आशिक़ ही होता रहता है,
और क़ातिल के ही हिस्से में है आता शोहरा[3]।
[2]शहीद [3]नाम

तपाक से नहीं मिलता है भीड़ में कोई,
भीड़ का हिस्सा बशर होके हुआ बे-चेहरा।

खेल में हार जीत एक अलग मुद्दा है,
मोहरा-बाज़ी के खेल में तो पिटेगा मोहरा।

हर्फ़ ला-इंतिहा[4] सदा नहीं बनता 'गौतम',
हर्फ़ संजीदा समंदर से है ज़्यादा गहरा।
[4]सीमाहीन

90: वादा-ए-वस्ल वफ़ा करता नहीं

वादा-ए-वस्ल वफ़ा करता नहीं,
वादा करने से भी मुकरता नहीं।

बोलना 'हाँ' के साथ 'लेकिन' भी,
यार वह चुलबुला सुधरता नहीं।

हिज्र की रात का सफ़र तन्हा,
चाँद भी साथ में ठहरता नहीं।

ये तो मौसम है अज़ा-दारी[1] का,
ज़र्द पत्तों में रंग भरता नहीं।
[1]मातम

ख़ूब वाक़िफ़ हैं उसकी फ़ितरत से,
ये इंतिज़ार अब अखरता नहीं।

एक तदबीर भी ज़रूरी है,
नसीब अपने से सँवरता नहीं।

हमको अपना पता नहीं मिलता,
दर्द सीने में गर उभरता नहीं।

रात की बात है दीगर 'गौतम',
रोते रोते है दिन गुज़रता नहीं।

91: अदना-ओ-पस्त भी अरफ़ा होते

अदना-ओ-पस्त भी अरफ़ा[1] होते,
अपना कह देते फिर ख़फ़ा होते।
[1]सम्मानित स्थान

आईना साफ़ अगर कर लेते,
अक्स क्या सारे बा-सफ़ा होते।

कोई उम्मीद रोक लेती है,
वगरना दुनिया से दफ़ा होते।

बात बनने की होती गुंजाइश,
ख़याल-ए-इश्क़ दो-तरफ़ा होते।

हाथ के साथ दिल मिलाने से,
मामले सौ रफ़ा-दफ़ा होते।

काम मेरा भी बन गया होता,
साथ लेकर गए तोहफ़ा होते।

एक बाज़ार है दहर 'गौतम',
चंद सौदे हैं बे-नफ़ा होते।

92: ये तेरी ख़ुदाई का क्या दौराँ है, या-ख़ुदा

ये तेरी ख़ुदाई का क्या दौराँ है, या-ख़ुदा,
हर शख़्स लिए दीदा-ए-हैराँ है, या-ख़ुदा।

रखने के लिए पाँव कहीं पर जगह नहीं,
तारी मगर एहसास-ए-वीराँ है, या-ख़ुदा।

मेरे ज़ेहन में ठहरे हुए हैं सवाल कुछ,
जो दे सके जवाब वो कहाँ है, या-ख़ुदा।

दरिया में उतरने का हौसला जुटा लिया,
कश्ती के सामने मगर तूफाँ है, या-ख़ुदा।

ये उम्र का सफ़र तो लिखा है नसीब में,
हर राहगीर दिखता गुरेजाँ[1] है, या-ख़ुदा।
[1]अनिच्छुक

इंसान है असीर[2] तमन्नाओं का अपनी,
ये जिस्म बना बाब-ए-ज़िंदाँ[3] है, या-ख़ुदा।
[2]बंदी [3]बंदी-गृह का दरवाज़ा

सहरा का ख़ैर-ख़्वाह कोई भी नहीं 'गौतम',
हर शख़्स यहाँ ढूँढता बुस्ताँ[4] है, या-ख़ुदा।
[4]बगीचा

93: सभी को आख़िरी सलाम किया

सभी को आख़िरी सलाम किया,
यह बचा काम भी तमाम किया।

आख़िरी वक़्त किसे याद करें,
आख़िरी दम ख़ुदा के नाम किया।

किसी को हो न शिकायत हमसे,
हर समाचार बार-ए-आम किया।

छुपा के कुछ नहीं किया हमने,
जो किया हमने खुलेआम किया।

पीठ पीछे ये बात लोग कहें,
कूच का पुख़्ता इंतिज़ाम किया।

लोग देखेंगे मेरे यारों ने,
हमारे नाम दौर-ए-जाम किया।

वो भी आएगा अलविदा कहने,
याद जिसको है सुबह शाम किया।

यही चलन है दहर में 'गौतम',
जाने वाले का एहतिराम[1] किया।

[1]सम्मान

94: वो निगाहों में चढ़े हैं

वो निगाहों में चढ़े हैं,
आशिक़ों के सर चढ़े हैं।

मेरा ही लेकर सहारा,
मुझसे भी आगे बढ़े हैं।

उसने नापे हैं शिखर जो,
हमने वो सारे चढ़े हैं।

मेरे बारे में हमेशा,
उसने अफ़साने गढ़े हैं।

पढ़ लिया चेहरा किताबी,
इतना तो हम भी पढ़े हैं।

मेरे सर इल्ज़ाम हैं जो,
सारे उसने ही मढ़े हैं।

बात वो करते नहीं क्यों,
शोख़ हैं या नकचढ़े हैं।

हमको जाहिल कहने वालों,
आपसे ज़्यादा कढ़े[1] हैं।
[1]सुलझे हुए

पूजता है कौन उनको,
जो भी पत्थर अन-गढ़े हैं।

एक दिन पूछेंगे 'गौतम',
आप हमसे क्यों चिढ़े हैं।

95: वक़्त से शब रोज़ होगी वक़्त से होगी सहर

वक़्त से शब रोज़ होगी वक़्त से होगी सहर,
वक़्त से निकलेंगे रोज़ाना यही माह-ओ-महर[1]।
[1]सूर्य और चाँद

लोग थक जाने पे सोते हैं थकन को ओढ़कर,
मुसलसल चलता ही रहता है मगर कार-ए-दहर[2]।
[2]दुनिया का कारोबार

एक टुकड़ा-ए-ज़मीं पर एक टुकड़ा-ए-फ़लक,
या-ख़ुदा इस ख़्वाब की ताबीर है दीवार-ओ-दर।

दैर को या हरम को या सहरा या मय-ख़ाने को,
आशिक़ाँ जाते रहेंगे कू-ए-जाँ से निकलकर।

हो सफ़र मंज़िल तलक या दो दिलों के बीच का,
चाहता है हर बशर हर रहगुज़र हो मुख़्तसर[3]।
[3]छोटी

हर ख़ता बे-इंतिहा[4] सौ झूठ से करते हुए,
रखते हैं उम्मीद रब से हर ख़ता हो दरगुज़र[5]।
[4]असीमित [5]अनदेखा

हौसला है पास 'गौतम' डूबकर फिर देख लो,
इक बहर[6] है चश्म-तर[7] जिसमें फ़ना हैं कुछ गुहर[8]।
[6]समुन्दर [7]अश्रु-पूरित आँख [8]मोती

96: अयादत के बहाने से दुआ दी

अयादत[1] के बहाने से दुआ दी,
हमें लंबी उमर की बद्दुआ दी।
[1]हाल-चाल पूछना

निहाँ[2] किरदार[3] है मरकज़[4] में जिसका,
उसी ने दास्ताँ सबको सुना दी।
[2]छुपा हुआ (समाहित) [3]चरित्र/भूमिका [4]केंद्र

बहुत चुभता है उसकी आँख में भी,
धुआँ देखा जहाँ जाकर हवा दी,

मुझे सूली पे लटकाने से पहले,
मेरे क़ातिल ने करवा दी मुनादी।

अगरचे अलविदा हमसे कहा है,
मगर हर बार पीछे से सदा दी।

तकल्लुफ़ के दिए तक बुझ गए हैं,
शमा उम्मीद की हमने बुझा दी।

बना कर रख रहा दूरी वो 'गौतम',
तो रस्म-ए-दूरी हमने भी निभा दी।

97: आईना कितना बे-तकल्लुफ़ है

आईना कितना बे-तकल्लुफ़ है,
बात कहता बिला-तकल्लुफ़ है।

गुफ़्तगू खुल के किस तरह होती,
दरमियाँ पर्दा-ए-तकल्लुफ़ है।

हम भी करने लगे तौबा तौबा,
इतना हर बात पर कहता उफ़ है।

शुक्रिया पेश बा-तकल्लुफ़ हो,
आज वो आया बा-तकल्लुफ़ है।

सोच में डाल दिया है उसने,
आज पूछा मेरा तआरुफ़ है।

कर के वादा वफ़ा नहीं करते,
बस इसी बात का तअस्सुफ़[1] है।
[1]तकलीफ़

सवाल कोई भी किया 'गौतम',
जवाब बे-वजह तवक़्क़ुफ़[2] है।
[2]मौन

98: यह नया दौर है इस में ये क़ाएदा देखा

यह नया दौर है इस में ये क़ाएदा देखा,
मदद करी गई जब उसमें फ़ाएदा देखा।

ख़ुदा के बारे में वाइज़ की बात सुनने पर
यक़ीन हो गया उसने नहीं ख़ुदा देखा।

कोई भी हादसे का बनता है गवाह नहीं,
तमाशा मुफ़्त का सबने बा-क़ाएदा देखा।

रसूखदारों को देखा है बारहा सबने,
हमारी ओर तो यूँ ही यदा-कदा देखा।

रिहा किया गया अदू बिना ज़मानत के,
हमारी बारी पर क़ानून-क़ाएदा देखा।

चीज़ इफ़रात में मिलने से भाव गिरता है,
बशर का भाव भी बाज़ार में मंदा देखा।

सलाम का जवाब देने से पहले 'गौतम',
सभी ने पैरहन के साथ ओहदा देखा।

99: किसे हम याद करते और किसको हम भुला देते

किसे हम याद करते और किसको हम भुला देते,
यही बेहतर लगा हम ख़ाक में ख़ुद को मिला देते।

हमारे सामने दैर-ओ-हरम की बात रख दी है,
वो जिसका हल निकल पाता हमें वो मसअला देते।

नहीं अब याद करते हैं कभी वो दिन हँसे थे जब,
यक़ीनन याद करते हम तो फिर ख़ुद को रुला देते।

ये दौर-ए-कम-नज़र है ज़्यादा की उम्मीद क्या करते,
हमारे दिल के बदले में नया वो क्या सिला देते।

शिकायत अब नहीं करते हैं कोई जानकर 'गौतम',
कभी कोशिश करी हमने तो वो हैं खिलखिला देते।

100: गए साल में पीला और हुआ पत्ता

गए साल में पीला और हुआ पत्ता,
साथ हवा के झूम रहा है अलबत्ता।

बोझ कोई ना सीने पर है ना सर पर,
नहीं बचा है काम कोई इत्ता-उत्ता।

अच्छे लगते हैं आँखों को फूल नए,
बढ़ते बिरवे देख हो रहे मुतमत्ता[1]।
[1]इच्छुक

नेकी और बदी ही लेकर लोग चले,
राह खर्च के लिए नहीं कोई भत्ता।

सभी पैरहन अलमारी में सजे रहे,
सबके हिस्से में आया दो गज़ लत्ता[2]।
[2]कपड़े का टुकड़ा

काम वक़्त पर हरदम आते नहीं मगर,
यारों से उम्मीद रहेगी अलबत्ता।

इस किताब के सफ़्हे वही पुराने हैं,
नई जिल्द के भीतर वही गला गत्ता।

साथ वक़्त के रंग उतरता है 'गौतम',
साथ किसी के जाती नहीं कोई सत्ता।

101: इस क़दर काम में मसरूफ़ रहे

इस क़दर काम में मसरूफ़ रहे,
मामले दिल के सब मौक़ूफ़[1] रहे।
[1]निलंबित

हाज़िरी हँस के लगाई हरदम,
दिल-ओ-दिमाग़ से माऊफ़[2] रहे।
[2]पीड़ित

क़सीदा-ख़्वानी[3] जानने वाले,
बज़्म में शायर-ए-मौसूफ़[4] रहे।
[3]प्रशंसा में कलाम करना [4]सबसे प्रतिष्ठित कवि

ज़बाँ से फिसलने नहीं देते,
याद अल्फ़ाज़-ओ-हुरूफ़[5] रहे।
[5]शब्द और वर्णमाला

लोग पहचानने लगे हमको,
इश्क़ में आपके मारूफ़[6] रहे।
[6]मशहूर

जो भी लौटा है कू-ए-जानाँ से,
मिज़ाज से वो फ़लयसूफ़[7] रहे।
[7]दार्शनिक

बात सुन ली है ग़ौर से 'गौतम',
शुक्र कर आज वो [8] रहे।
[8]कृपालु

102: उसे भी याद क्या हम आ रहे हैं

उसे भी याद क्या हम आ रहे हैं,
जिसे हम याद करते जा रहे हैं।

कसम खाकर वो वादा कर रहे हैं,
नए अंदाज़ से बहला रहे हैं।

ज़बाँ से कुछ, निगाहों से कहा कुछ,
वही जाने वो क्या फ़रमा रहे हैं।

वो बातें ना करें संजीदगी से,
बहुत से लोग धोखा खा रहे हैं।

वहम बे-वजह का पाले हुए थे,
हमें वो आईना दिखला रहे हैं।

अभी तो सब्र कर आयेगी बारी,
मसाइल दहर के सुलझा रहे हैं।

तसल्ली है नहीं ख़त फाड़ते वो,
हमारे ख़त हमें लौटा रहे हैं।

ख़बर ये भेजते रहते हैं 'गौतम',
वो थोड़ी देर में बस आ रहे हैं।

103: वो सितमगार सही मुजरिम-ए-वफ़ा न कहो

वो सितमगार सही मुजरिम-ए-वफ़ा न कहो,
बहुत अज़ीज़ है उसको भला-बुरा न कहो।

उसको देखा है अपने आप से बातें करते,
लिहाज़ में है वो ख़ामोश, बे-ज़बाँ न कहो।

अगर हो साथ में बैठे तो गुफ़्तगू कर लो,
इब्तिदा करने से पहले ही इंतिहा न कहो।

मिला के हाथ अगर दिल नहीं मिलाए हैं,
तो बात टाली गई है, रफ़ा'-दफ़ा' न कहो।

काम जो वक़्त पर आता है दोस्त होता है,
दोस्त को दोस्त ही कहते रहो ख़ुदा न कहो।

अदा-ए-हुस्न तो आशिक़ पसंद करते हैं,
अदा जो आफ़त-ए-जाँ है उसे अदा न कहो।

ख़ाक-ज़ादा है बशर हमको पता है 'गौतम',
कर नई बात ये बोसीदा फ़ल्सफ़ा न कहो।

104: ऐसा अब के नया साल हो

ऐसा अब के नया साल हो,
पहला दिन पुर-नेक-फ़ाल[1] हो।
[1]शुभ संकेत पूर्ण

बोल-चाल सबसे बहाल हो,
नया साल ये बे-मिसाल हो।

आज तहनियत[2] का मौका है,
साल सभी का बे-मलाल हो।
[2]बधाई का अवसर

रक़्स-ए-पैहम[3] रहे पाँव में,
साथ सदा बज़्म-ए-जमाल[4] हो।
[3]निरंतर नृत्य [4]सुन्दर महफ़िल

मजबूरी की बात नहीं हो,
पास नया ताब-ओ-मजाल[5] हो।
[5]ताकत और हिम्मत

सिफ़र[6] मसाइल सिफ़र शिकायत,
नहीं ज़िंदगी का सवाल हो।
[6] शुन्य

पार-साल[7] बीता हो जैसा,
नया साल तो पुर-मआल[8] हो।
[7]पिछला साल [8]फलदायी

जो कुछ सोच रहा हो 'गौतम',
वही मुकम्मल[9] बहरहाल[10] हो।
[9]पूर्ण [10]हर हाल में

105: एक साल में कितने साल गुज़ारे हमने

एक साल में कितने साल गुज़ारे हमने,
लम्हा लम्हा कितने क़र्ज़ उतारे हमने।

अंदाज़ा भी मुमकिन नहीं हुआ हमसे,
गिन के तो देखे हर रात सितारे हमने।

फ़िक्र बचे दिन की कर कर के रोज़ाना,
दिन बेकार किए दो-चार हमारे हमने।

तेज धार में बहने का जब सुख पाया,
नहीं पलट कर देखे कभी किनारे हमने।

ख़तरों ने आगाह किया था ख़ुद हमको,
अनदेखे कर डाले मगर इशारे हमने।

नहीं मयस्सर हुईं नेमत-ए-दहर हमें,
नहीं कहीं भी अपने हाथ पसारे हमने।

मेरे भीतर खास ऐब ये है 'गौतम'
ऐब गिनाए उसने नहीं सुधारे हमने।

106: फ़क़ीर फेंककर चला गया छोटा सिक्का

फ़क़ीर फेंककर चला गया छोटा सिक्का,
छोटे सिक्के ने बनाया हमें खोटा सिक्का।

नहीं देखे कभी हालात एक से हमने,
नहीं हमेशा चला करता किसी का सिक्का।

आज अब्बू दिखाई दे रहे आज़ुर्दा-जबीं[1],
उड़ा के ले गया है जेब से बेटा सिक्का।
[1]दुखी चेहरा

गोताखोरी के लिए हैं खड़े छोटे बच्चे,
काम आता है बहुत गंगा में फेंका सिक्का।

वक़्त पर फ़ैसला करने के काम आता है,
हवा में हमने भी अक्सर है उछाला सिक्का।

कभी गिरा तो प्यार से उठा के पोंछ लिया,
गाँठ से खोलकर जो माँ ने दिया था सिक्का।

वक़्त पर काम जो आता है बेश-क़ीमत[2] है,
दोस्त ऐसा हो अगर मानिए खरा सिक्का।
[2]अमूल्य

ये तमाशा भी रोज़ दुनिया में देखा हमने,
किसी ने फेंक दिया किसी ने लूटा सिक्का।

बस इसी बात की रहती है तसल्ली हमको,
जेब खाली नहीं रखता कभी खोटा सिक्का।

इस नए साल में देता है ये दुआ 'गौतम',
सभी की जेब में सोने का हो बड़ा सिक्का।

107: अगर मिलते कभी तो पूछ लेते हम फ़रिश्तों से

अगर मिलते कभी तो पूछ लेते हम फ़रिश्तों से,
बहुत बेज़ार[1] क्यों रहने लगे हैं लोग रिश्तों से।
[1]ऊबे हुए

चला आया किनारे से जो कल सैलाब से डर के,
पता दरिया का देखा पूछता है आज दश्तों[2] से।
[2]मरुथलों से

मियाँ नासेह हर दिन रिंद को जाकर हैं समझाते,
वो उसके नाम इक पैगाम लाए हैं बहिश्तों[3] से।
[3]स्वर्ग

किसी को था पुकारा ऊबकर तन्हाई से अपनी,
बहुत घबरा रहा हूँ बाद में मैं बाज़-गश्तों[4] से।
[4]प्रतिध्वनि

वजह मेरी तबाही की हमारी हक़-बयानी[4] है,
सबक़ सीखा नहीं क्यों हमने कोई हक़-सरिश्तों[5] से।
[4]सच बोलना [5]सच बोलने की आदत वाले

वो चारागर है दानिश-मंद ऐसा सोचते थे हम,
वो करता ज़िंदगी की बात क्यों है शौक़-कुश्तों[6] से।
[6]मरने को उत्सुक

तलाश-ए-यार में याँ वाँ भटकते देखा है 'गौतम',
किसी चौखट का बोसा ले रहे हैं लोग पुश्तों[7] से।
[7]पीढियां

108: नए साल का नया कैलेंडर

नए साल का नया कैलेंडर,
क्या उम्मीद लिए है अंदर।

सात दिनों वाला ही हफ्ता,
वही जनवरी वही दिसम्बर।

मिला नयापन दीवारों को,
नया कैलेंडर लगता सुंदर।

कितने गुहर[1] मिलेंगे इसमें
लम्हों का है एक समंदर।
[1]मोती

ज़रदारों[2] ने इसको छापा,
बेच रहे हैं जो हैं बे-घर।
[2]पैसे वाले

नए कैलेंडर के आशिक हैं,
मुल्ला पंडित ग्रंथी फादर।

नज़र दिनों पर रखते 'गौतम',
ओढ़ रहे क्यों सर तक चादर।

109: मुझे जुनूँ के नतीजे का इंतिज़ार नहीं

मुझे जुनूँ के नतीजे का इंतिज़ार नहीं,
क़रार के लिए दिल मेरा बे-क़रार नहीं।

गली-ए-इश्क़[1] में सौदा दिलों का होता है,
जहाँ ख़सारा[2] नहीं हो ये वो बाज़ार नहीं।
*1*प्यार की गली *2*घाटा/हानि

हुआ है सख़्त इंतिज़ाम आज महफ़िल में,
नसीब में सभी के इज़्न-ए-दीदार[3] नहीं।
*3*दर्शन की अनुमति

बिना बुलाए जो आए तो ख़ैर-मक़्दम[4] है,
वगर्ना[5] ख़्वाबों के हैं चश्म[6] तलबगार नहीं।
*4*स्वागत *5*अन्यथा *6*आँख

हमने तारीख़-दर-तारीख़ हाज़िरी दी है
और ये कह नहीं पाए के गुनहगार नहीं।

मेरी ख़ामोशी से लोगों को शुबह[7] होता है,
हमारे पास है सरमाया-ए-अफ़्कार[8] नहीं।
*7*संदेह *8*विचारों की पूंजी

वो एक तीर ही है बाइस-ए-ईज़ा[9] 'गौतम',
रहा पैवस्त[10] गया दिल के आर-पार नहीं।
*9*पीड़ा का कारण *10*फंसा हुआ

110: इस नए साल से उम्मीद है बहुत ज़्यादा

इस नए साल से उम्मीद है बहुत ज़्यादा,
वो पार-साल[1] था सफ़र में रहा पा-प्यादा[2]।
*1*गया साल *2*पैरों पर

अज़ीज़ यार-दोस्त मेहरबान हैं उस पर,
किसलिए ढूँढने वो जाता मजमा-ए-आदा[3]।
*3*दुश्मनों का समूह

दख़्ल मयख़ाने में जब से किया है वाइज़ ने,
सबको पीने को मिल रहा है आब-ए-सादा[4]।
*4*सिर्फ़ पानी

अगली तारीख़ दी मुंसिफ़ ने बहस सुनने को,
मामले बे-हिसाब हैं नहीं फ़ुर्सत ज़्यादा।

वो आदमी मुझे लगता है समझदार बहुत,
बोलता कम है सुनता ध्यान से बहुत ज़्यादा।

लिबास से तो लग रहा था वह फ़क़ीर मुझे,
किंतु अंदाज़ से वह लग रहा था शहज़ादा।

वादा-ए-वस्ल वफ़ा किस तरह होगा 'गौतम',
काम फिर कोई याद आएगा रोज़-ए-वादा।

111: पूछता वो मेरी बाबत है नहीं

पूछता वो मेरी बाबत है नहीं,
दूसरी कोई शिकायत है नहीं।

देख लेता है कभी मेरी तरफ,
इससे ज़्यादा मिली राहत है नहीं।

देखकर हाल यही कहता है,
अभी इतनी बुरी हालत है नहीं।

नाम उसका न ज़बाँ पर आए,
दी गई और हिदायत है नहीं।

सलाम करना मेरी आदत है,
बे-वजह की गई हरकत है नहीं।

नज़र मिला नहीं पाते उससे,
दीद है पास में जुरअत है नहीं।

उसकी महफ़िल में हैं ज़रदार बहुत,
वहाँ मिलती हमें वक़अत[1] है नहीं।
[1]महत्व

हिंदी उर्दू में बात हो 'गौतम',
ज़मीन-ए-हिंद विलायत है नहीं।

112: लोग कहने लगे हैं सौदाई

लोग कहने लगे हैं सौदाई[1],
हमको है आरज़ू-ए-तनहाई[2]।
[1]पागल [2]एकांत की इच्छा

बनाया ख़ुद का तमाशा हमने,
बनाया दुनिया को तमाशाई।

चारागर से पता चला हमको,
वह नहीं जानता मसीहाई[3]।
[3]जीवित करने का हुनर

कोई करता दुआ-सलाम नहीं,
किसी से भी नहीं शनासाई[4]।
[4]परिचय

रात भर ख़्वाब देखने वाले,
जागकर लेते रहे अंगड़ाई।

रू-ब-रू बे-नक़ाब आने पर,
गुल चराग़ों में रौशनी आई।

सबने देखा है हमें हैरत से,
मेरे चेहरे पे जब हँसी आई।

दोस्त पहचानता रहा 'गौतम',
इतनी कमज़ोर नहीं बीनाई।

113: मतलब बग़ौर हम पस-ए-अल्फ़ाज़ सुन रहे

मतलब बग़ौर[1] हम पस-ए-अल्फ़ाज़[2] सुन रहे,
पहचानते हैं जिसकी हम आवाज़ सुन रहे।
[1]ध्यान से [2]शब्दों के पीछे *(सही मंतव्य)*

जिससे हमें संजीदगी की कुछ उम्मीद थी,
देखा वह मेरी बात बे-नियाज़[2] सुन रहे।
[2]निस्पृह

सच बोलने की हम नहीं हिम्मत जुटा सके,
कुछ बोलने पर सख़्त ए'तिराज़ सुन रहे।

हम लज़्ज़त-ए-तक़रीर के बारे में क्या कहें,
हम तर्ज़-ए-तक़रीर बा-लिहाज़ सुन रहे।

अब इसमें कोई चौंकने की बात नहीं है,
वह आज तलक हमसे है नाराज़ सुन रहे।

कुछ तब्सिरा हालात पर सुनने का है मौका,
टीवी पे समाचार सरफ़राज़[3] सुन रहे।
[3]विशिष्ट व्यक्ति

इल्ज़ाम क्यों तूफ़ान के सर पर गया 'गौतम',
माझी ने ख़ुद डुबोया है जहाज़ सुन रहे।

114: सर्द मौसम है, मौन लेटे हैं

सर्द मौसम है, मौन लेटे हैं,
वजूद अपना हम समेटे हैं।

आँच महसूस होती रहती है,
ख़याल चंद हम लपेटे हैं।

सुबह होने पे उठाया जाए,
दिन ढले थक के अभी लेटे हैं।

वक़्त से जीत नहीं पाए हम,
हमने सौ तरह पत्ते फेंटे हैं।

बासी अख़बार उठाकर उसमें,
बासी वो रोटियाँ लपेटे हैं।

जिसे जबीं पे लिखा कर लाए,
हर्फ़ किससे वो गए मेटे हैं।

सू-ए-मंज़िल हमें ले जायेगी,
राह को पाँव में लपेटे हैं।

जिनसे पीछा हमें छुड़ाना था,
वो ऐब आज भी चपेटे हैं।

कान जिसने कतर दिये 'गौतम',
हमें ख़ुशी है अपने बेटे हैं।

115: जो शहर के हालात हैं बग़ौर देखिए

जो शहर के हालात हैं बग़ौर[1] देखिए,
फ़ुटपाथ पर सोते हुए बे-ठौर[2] देखिए।
[1]ध्यान से [2]बेघर

झुग्गी अगर देखी नहीं जाती है आपसे,
तो देखने को है बहुत, कुछ और देखिए।

मरते हैं रोज़, मरने की बातें नहीं होतीं,
ये ज़िंदगी का तिलिस्माना[3] तौर[4] देखिए।
[3]जादुई [4]ढंग

जीने की जिद्द-ओ-जहद है देखना अगर,
जिस ओर दिल करे उधर फ़िल-फ़ौर[5] देखिए।
[5]तुरंत

मंडी में सजे आम से गर दिल नहीं भरता,
तो गाँव की अमराइयों में बौर देखिए।

आए हैं तो फिर देखिए कुछ दिन गुज़ार कर
इस शहर में बशर हैं ब-हर-तौर[6] देखिए।
[6]हर तरह के

हर बात पर ज़रूरी नहीं बोलना 'गौतम',
चुपचाप आप क्या है ज़ेर-ए-ग़ौर[7] देखिए।
[7]विषय

116: होश-मंद होकर कितनी नादानी की

होश-मंद होकर कितनी नादानी की,
उसने अब हर बात पे आनाकानी की।

कू-ए-जाँ में सोच-समझकर आए थे,
वहाँ हमारे दिल ने फिर मन-मानी की।

सुनकर सब हालात हमारे हैराँ हैं,
बात अगर सच है तो है हैरानी की।

हमें तरीका जीने का समझाते हैं,
राह दिखाते मरने में आसानी की।

पानी-पानी होते लोगों को देखा,
हमने की जब बात नज़र में पानी की।

मेरे दिल का राज़ बयाँ कर देती है,
गहरी हुई लकीर मेरी पेशानी की।

माँग रहे हैं लोग जवाब सवालों के,
क़द्र नहीं कर रहे लोग सुल्तानी की।

लोग तवज्जोह देने लगे मुझे 'गौतम',
मेरी वहशत ने पैदा आसानी की।

117: रात भर हमने ली कितनी करवट

रात भर हमने ली कितनी करवट,
हम भी चादर की गिनेंगे सिलवट।

रात गुज़रा नहीं गली से कोई,
कान सुनते रहे लेकिन आहट।

नींद आँखों में उतरती कैसे,
ख़्वाब बैठे थे लगाकर जमघट।

रौशनी किस तरह करते घर में,
दियों में तेल था ना था दीवट[1]।
[1]बाती

पानी मिलने लगा घर में नल से,
और वीरान हो गया पनघट।

गर्म-जोशी से नहीं मिलता कोई,
लिहाफ़ दे रहे हैं गर्माहट।

आग का दरिया कहा ग़ालिब ने,
इश्क़ करते हैं जो रखते जीवट[2]।
[2]हिम्मत

खोलकर टीवी दिखाओ 'गौतम',
हो रही हाल-ए-दिल से उकताहट।

118: धूप में जिसने जिस्म झुलसाया

धूप में जिसने जिस्म झुलसाया,
जानता है वही लुत्फ़-ए-साया।

सारा दिन पैर से लिपटता था,
शब हुई छोड़कर गया साया।

रात भर हिज्र में क्यों रोए थे,
वक़्त-ए-सहर बदन अलसाया।

बात करने की नहीं फ़ुर्सत है,
पर भरोसा है मेरा हमसाया।

क्यों लगाया बबूल आँगन में,
बैठना था अगर ज़ेर-ए-साया[1]।
[1]छाँव के नीचे

धूप को शुक्रिया कहा जाए,
वरना देगा नहीं मज़ा साया।

वो हक़ीक़त का आश्ना होगा,
ख़्वाब ने उसको नहीं उकसाया।

नहीं दुनिया का कोई डर 'गौतम',
रहे महफ़ूज़ ख़ुदा का साया।

119: मेरी आवाज़ पलट-कर आई

मेरी आवाज़ पलट-कर आई,
वादियों से वो ग़म-ज़दा आई।

अगरचे माज़ी को भुलाया है,
याद कोई यदा-कदा आई।

बिना दस्तक दिए दरवाज़े पर,
एक खुशबू है बे-सदा आई।

हमको पहचान लिया ग़ैरों में,
बा-ख़ुदा आन-ओ-अदा[1] आई।
[1]सम्मान और पहचान

कहाँ अता किया पता ही नहीं,
जबीं ये आज कर सजदा आई।

शहर में शोर बहुत होता है,
लगता रहता है आपदा आई।

रिश्ते धागे की तरह होते हैं,
तोड़कर जोड़ा तो उक़्दा[2] आई।
[2]गाँठ

जुदा थे ख़्वाब तुम्हारे 'गौतम',
इनकी ताबीर भी जुदा आई।

120: हमसे कहता है शब-ब-ख़ैर कोई

हमसे कहता है शब-ब-ख़ैर[1] कोई,
शब नहीं कटती है बिल-ख़ैर[2] कोई।
*1*शुभ रात्रि *2*आसानी से *(सुरक्षित)*

आईना साफ़ कर के देख लिया,
दिखा हमें है अक्स-ए-ग़ैर कोई।

मिले हैं बा-कमाल लोग बहुत,
मिला हमें नहीं बा-ख़ैर[3] कोई।
*3*दरियादिल/दानी

अच्छा लगता है देखकर हमको,
मुतमइन है मेरे बग़ैर कोई।

ग़ौर से बात है सुनती दुनिया,
दिखाई दे अगर सर-पैर कोई।

एक ख़तरा-सा लगा रहता है,
यार बनता है अगर ग़ैर कोई।

सू-ए-घर लौटकर चलो 'गौतम',
किसलिए जाए कू-ए-ग़ैर कोई।

121: आदमी है तो क्यों रखता नहीं ख़्वाहिश कोई

आदमी है तो क्यों रखता नहीं ख़्वाहिश कोई,
ग़ौर से देखना उसकी न हो साज़िश कोई।

लोग घबरा रहे हैं उससे बात करने में,
डर है कर दे न कहीं पेश फ़रमाइश कोई।

माना सहरा में भटकने के बाद आया है,
नहीं सैलाब में है माँगता बारिश कोई।

उससे क्या डरना वो लेटा है ओढ़कर चादर,
ग़ौर से देखना जब लेगा वह जुम्बिश कोई।

ऐसी दरख़्वास्त तो फ़ाइल में ही गुम होती है,
साथ जिसके नहीं नत्थी है सिफ़ारिश कोई।

गिला-ए-गर्दिश-ए-तक़दीर से है ख़ास उसे,
ज़बाँ पे उसके नहीं हर्फ़-ए-सताइश[1] कोई।
[1]प्रशंसा के शब्द

तेरी बातों से कौन होगा मुतासिर[2] 'गौतम',
तेरी तक़रीर में होती बू-ए-शोरिश[3] कोई।
[2]प्रभावित [3]विद्रोह की गंध

122: अभी टुक इतनी रहमत चाहते हैं

अभी टुक[1] इतनी रहमत चाहते हैं,
सिर्फ़ सोने की मोहलत चाहते हैं।

[1]बस/ज़रा

ख़फ़ा करती है साफ़-गोई तो,
नहीं अब ऐसी आदत चाहते हैं।

सितमगर को यही शिकायत है,
सितम से लोग राहत चाहते हैं।

मियाँ नासेह को भी जाम देना,
बताना रब की बाबत चाहते हैं।

सुना है आप हैं बीमार-ए-इश्क़,
किसलिए आप सेहत चाहते हैं।

गले तक जो भरे बैठे हुए हैं,
ज़रा रोने की फ़ुर्सत चाहते हैं।

बटेरें हाथों में अंधों के आईं,
अब उनसे लोग दावत चाहते हैं।

लगे फिर भूलने सब लोग 'गौतम',
नई हम एक तोहमत चाहते हैं।

123: मुसलसल हादसे होते रहेंगे

मुसलसल हादसे होते रहेंगे,
नहीं देखेंगे, सब सोते रहेंगे।

तमाशाई ठहरते ही नहीं हैं,
तमाशा बनके हम रोते रहेंगे।

सहर से है जिसे उम्मीद कोई,
वो शब भर जागते-सोते रहेंगे।

जगे हैं रातभर ये माह-तारे
सुबह से शाम तक सोते रहेंगे।

लगा दामन पे आदम का लहू है,
रगड़कर रोज़ अब धोते रहेंगे।

किसानी का पुराना क़ाएदा है,
वही काटेंगे जो बोते रहेंगे।

बनाकर पालतू जो है सिखाया,
उसी को रटते ये तोते रहेंगे।

ये पलकें नींद से बोझल रहेंगी,
इन्हीं पर ख़्वाब भी ढोते रहेंगे।

रहेंगे रात भर मेहमान 'गौतम',
सुबह दम तन्हा हम होते रहेंगे।

124: उसने मिलने का किया वादा है

उसने मिलने का किया वादा है,
क्या पता उसका क्या इरादा है।

साफ़ वक़अत[1] समझ में आई है
चेहरे से लग रहा उफ़्तादा[2] है।
[1]औकात [2]मायूस

बात करता नहीं किसी से भी,
बंदा लगता शरीफ़-ज़ादा है।

हुआ नासेह की सोहबत का असर,
मिला जो रिंद वो बे-बादा[3] है।
[3]बिना शराब

जुनूँ-आमेज़[4] वो दीवाना है,
थका है पर सफ़र-अमादा[5] है।
[4]दीवाना [5]यात्रा के लिए तत्पर

लोग करने लगे सलाम हमें,
कितना एहसान गया लादा है।

हवा के रहम पर देखो 'गौतम',
ज़मीं पे बर्ग-ए-फ़तादा[6] है।
[6]गिरी हुई पत्ती

125: वो दिल जला रहा है मेरा रौशनी के लिए

वो दिल जला रहा है मेरा रौशनी के लिए,
ये इंतिज़ाम हुआ ग़म-ए-तीरगी[1] के लिए।
[1]अंधेरे का दु:ख

आगे बढ़ने के लिए लोग गिरा सकते हैं,
रास्ता छोड़ता है कौन अजनबी के लिए।

यूँ तो हर आदमी को आदमी समझते हैं,
है ख़ास एहतिराम[2] ख़ास आदमी के लिए।
[2]सम्मान

शोख़ रंगों की ही तारीफ़ लोग करते हैं,
याद करता है किसे कौन सादगी के लिए।

इमारतों के लिए शहर को तामीर करें,
जगह निकाल ही लेंगे लोग झुग्गी के लिए।

हम भी ढोते रहे ता-उम्र ही एहबाब-ए-ग़म[3],
तल्ख़[4] मय लोग पी रहे हैं सरख़ुशी[5] के लिए।
[3]दु:ख का कारण [4]कड़ुआ [5]ख़ुशी के लिए

सिर्फ़ रोटी से नहीं ज़िंदगी कटती 'गौतम',
इश्क़ भी होना ज़रूरी है ज़िंदगी के लिए।

126: कुछ ज़ियादा मुझे फ़ुर्सत है, परेशान हूँ मैं

कुछ ज़ियादा मुझे फ़ुर्सत है, परेशान हूँ मैं,
तौबा हर वक़्त ही राहत है, परेशान हूँ मैं।

यार बरहम[1] को देखकर ही चैन मिलता है,
हाय कितनी बुरी आदत है, परेशान हूँ मैं।
[1]निष्ठुर

सलाम करके बिठाते हैं साथ वाइज़ को,
बादा-ख़ाने की रिवायत है, परेशान हूँ मैं।

हम सियासत से मोहब्बत नहीं कर पाए कभी,
अब मोहब्बत में सियासत है, परेशान हूँ मैं।

बोलने पर बहुत नाराज़ था, चुप रहने को,
मान लेता वो बगावत है, परेशान हूँ मैं।

मेरे रक़ीब भी बैठे हुए हैं महफ़िल में,
हमीं पे चश्म-ए-इनायत है, परेशान हूँ मैं।

सर को ख़म[2] करता नहीं सामने कभी 'गौतम',
हुस्न को हमसे शिकायत है, परेशान हूँ मैं।
[2]झुकाना

127: सितमगर से तक़ाज़ा कर रहे हैं

सितमगर से तक़ाज़ा कर रहे हैं,
हम अपने ज़ख़्म ताज़ा कर रहे हैं।

सबब कुछ भी नहीं रोने का मेरे,
बस अपने चश्म हल्का कर रहे हैं।

सुना है वो ख़बर लेते हैं मेरी,
ख़ुदाया क्या इरादा कर रहे हैं।

मिला रिंदों से मय-ख़ाने में वाइज़,
सुबह दम सारे तौबा कर रहे हैं।

ख़फ़ा होना किया जिसका गवारा,
वो महफ़िल में तमाशा कर रहे हैं।

वफ़ा वादा नहीं करते हैं माना,
ग़नीमत है वो वादा कर रहे हैं।

वो जब आए अयादत के बहाने,
हमारी रूह अफ़ज़ा[1] कर रहे हैं।
[1]बढ़ाना

हवा ले जाएगी इनको उड़ाकर,
गिरे पत्ते इकट्ठा कर रहे हैं।

ये माना पानी महँगा हो गया है,
ख़ुशी है ख़ून सस्ता कर रहे हैं।

हमारे साथ कल तक कारवाँ था,
सफ़र हम आज तन्हा कर रहे हैं।

मुसलसल भीड़ में रहते हुए भी,
सभी ख़ुद को अकेला कर रहे हैं।

परेशाँ शोर से हम हो गए जब,
ख़ुशी से ख़ुद को गूँगा कर रहे हैं।

यक़ीं है ख़ुदा को मंज़ूर होगा,
कहीं भी दिल से सजदा कर रहे हैं।

मैं अक्सर पूछता हूँ ख़ुद से 'गौतम',
हमें बतलाओ हम क्या कर रहे हैं।

128: अक्स वो देख रहे हैं जो सर-ए-आईना है

अक्स वो देख रहे हैं जो सर-ए-आईना है,
नहीं दिखाई दिया है जो पस-ए-आईना है।

रंग-ओ-रूप कोई आईना बदलता नहीं,
दिखाना हू-ब-हू ही फ़ितरत-ए-आईना है।

अक्स हर-सम्त देखने को लोग आते हैं,
आईना-ख़ाना है, आईना-दर-आईना है।

लोग आईने को झूठा नहीं कहते हैं क्यों,
सीधे को उल्टा दिखाता सदा आईना है।

आईना देखकर कुछ लोग रंज करते हैं,
रंज करता हुआ देखा नहीं आईना है।

कोई सूरत नहीं मरती है बिखर जाती है,
एक पत्थर के मुक़ाबिल खड़ा आईना है।

छुपाए छुपती नहीं कोई हक़ीक़त 'गौतम',
सारा सच बोलता है दिल में जो आईना है।

129: कभी रुकने का दिल नहीं करता

कभी रुकने का दिल नहीं करता,
कभी चलने का दिल नहीं करता।

कमी कीमत सही नहीं मिलती,
कभी बिकने का दिल नहीं करता।

कभी रोके नहीं हँसी रुकती,
कभी हँसने का दिल नहीं करता।

कभी कमर हैं कबादा[1] करते,
कभी झुकने का दिल नहीं करता।
[1]झुकाना

नींद से दुश्मनी निभाई कभी,
कभी जगने का दिल नहीं करता।

कभी सुलगाने से सुलगते नहीं,
कभी बुझने का दिल नहीं करता।

अजीब आदमी की फ़ितरत है,
कहीं टिकने का दिल नहीं करता।

यही हर हाल में देखा 'गौतम',
कभी मरने का दिल नहीं करता।

130: काश कभी अपने को अपना कह पाते

काश कभी अपने को अपना कह पाते,
कभी उतरकर दिल में अपनी तह[1] पाते।
[1]गहराई

काश बोलने की मिल जाती आज़ादी,
हर मुद्दे पर हम कर कभी जिरह पाते।

पता जवाब हमें थे सभी सवालों के,
मौका हमको मिलता तो कुछ कह पाते।

अपना हाल यक़ीनन उसे बता देते,
अगर उसे तन्हा-ओ-मुतवज्जह[2] पाते।
[2]अकेला और स्थिर

संजीदा होकर क्यों खेलें हम बाज़ी,
मात दूर शायद ही हम कह शह पाते।

हम भी कुछ उम्मीद बाँध लेते उससे,
अपनी ओर कभी गर एक निगह पाते।

नहीं छेड़ते हक़ की बात अगर 'गौतम',
सबके दिल में हम भी ख़ास जगह पाते।

131: किसी अनुरोध का विरोध नहीं

किसी अनुरोध का विरोध नहीं,
खड़ा करते कभी अवरोध नहीं।

कोई भृकुटी[1] को तानता है जब,
मुखड़ा रह जाता है सुबोध नहीं।
[1]भौंह

बुहारें पलकों से हर जनपथ को,
किसी कंकर से हो गतिरोध नहीं।

स्व-रक्तचाप पराधीन ना हो,
हित में आरोग्य के है क्रोध नहीं।

अश्रु तो दृष्टि स्वच्छ करते हैं,
इसका स्वागत करें प्रतिरोध नहीं।

सहज प्रवृत्ति है मानव से त्रुटि,
हृदय में क्षमा हो प्रतिशोध नहीं।

कार्य बहुधा बिगाड़ लेता है,
उचित-अनुचित का जिसे बोध नहीं।

मात्र आगाह कर रहा 'गौतम',
मेरा उद्देश्य गत्यवरोध[2] नहीं।
[2]गति थामना

132: काम अपना भी ख़ैर हो जाता

काम अपना भी ख़ैर हो जाता,
अच्छा होता ब-ख़ैर[1] हो जाता।
[1]सुरक्षित और ढंग से

सिर्फ़ देते दुआ-ए-ख़ैर[2] हमें,
एक तो कार-ए-ख़ैर[3] हो जाता।
[2]शुभकामना [3]सही कार्य

रात कट जाएगी सोते-जगते,
ज़बाँ से शब-ब-ख़ैर[4] हो जाता।
[4]शुभ-रात्रि

आपका आना मसीहाई[5] है,
यही सबब-ए-ख़ैर[6] हो जाता।
[5]मसीहा की तरह [6]चंगा होने का कारण

लिहाज़ गर नहीं होता बाहम[7],
दोस्तों में भी बैर हो जाता।
[7]परस्पर

याद एहसान करा देने पर,
अज़ीज़-तर भी ग़ैर हो जाता।

यहीं सब देखते जन्नत 'गौतम',
आदमी अहल-ए-ख़ैर[8] हो जाता।
[8]भला चाहने वाला

133: कभी लेता नहीं है ख़ैर-ओ-ख़बर

कभी लेता नहीं है ख़ैर-ओ-ख़बर,
क्या नहीं रखता है वह तेज़ नज़र।

रोते रहने का यह नतीजा हुआ,
रोने का अब नहीं होता है असर।

वो रहगुज़र है यह तिलिस्म भरी,
पास मंज़िल के हुआ तेज़ सफ़र।

वक़्त पर फ़ैसला सही ना लिया,
दिल में चलती ही रही अगर मगर।

वफ़ा की तो कोई उम्मीद नहीं,
सितम में रखिए नहीं कोई कसर।

शब तो कटती है हसीं ख़्वाबों में,
गिनती करते हैं लोग शाम-ओ-सहर।

हादसे हैं यहाँ मुमकिन 'गौतम',
संभल के शहर के रस्तों से गुज़र।

134: मिज़ाज़ सबका अलकसी क्यों है

मिज़ाज़[1] सबका अलकसी[2] क्यों है,
हर तरफ रंज-ओ-बेकसी[3] क्यों है।
[1]स्वभाव [2]आलसी [3]दुःख और लाचारी

सभी को शहर अपना लगता था,
आजकल इतनी चौकसी क्यों है।

बात होनी थी सबके मतलब की,
बहस का मुद्दा आपसी क्यों है।

सबसे आए थे बात करने अगर,
ज़बाँ पे हर्फ़-ए-फ़ारसी[4] क्यों है।
[4]फ़ारसी के शब्द

गर वो आया है अयादत के लिए,
हाथ में पकड़े आरसी[5] क्यों है।
[5]दर्पण

सभी के वास्ते बिछी है दरी,
किसी के वास्ते कुर्सी क्यों है।

तेरी हँसी में आजकल 'गौतम',
नुमायाँ[6] ग़म-ए-बेबसी[7] क्यों है।
[6]परिलक्षित [7]लाचारगी का दुःख

135: तुमने मौसम बदलते देखा है

तुमने मौसम बदलते देखा है,
हमने इन्साँ बदलते देखा है।

जिसको पहलू बदलते देखा है,
बात कह कर बदलते देखा है।

रास्ते को बदलने वाले को,
हमसफ़र भी बदलते देखा है।

दुनियादारी के नाम पर हमने,
यहाँ सबको बदलते देखा है।

जिसे हम लाजवाब करते हैं,
उसको तेवर बदलते देखा है।

उसने अंदाज़ भी बदले होंगे,
पैरहन तो बदलते देखा है।

वक़्त पर नाज़ मत करो 'गौतम',
वक़्त हमने बदलते देखा है।

136: बुत-गर है वक़्त घिस के मुकद्दर बना दिया

बुत-गर[1] है वक़्त घिस के मुकद्दर बना दिया,
एक यायावर[2] को मील का पत्थर बना दिया।
[1]मूर्तिकार [2]घुमंतू

कह पाया नहीं बात जो अपनी ज़बान से,
उसको क़लम ने एक सुख़न-वर[3] बना दिया।
[3]शाइर

हैरान कर रहा है बशर का हुनर हमको,
क़तरा-ए-अक्श[4] मिस्ल-ए-समंदर[5] बना दिया।
[4]आँसू की बूंद [5]समुन्दर के सामान

इस शहर की इस सिफ़त[6] के सारे मुरीद हैं,
याँ शोर ने हर नाला[7] बे-असर बना दिया।
[6]गुण [7]रुदन

ले जा रही धकेलकर ये भीड़ सभी को,
अग़्यारों[8] को सफ़र ने हमसफ़र बना दिया।
[8]अजनबियों

कैसे कहें अपनों की उसे फ़िक्र नहीं है,
करने को गिला दर्ज है दफ़्तर बना दिया।

सब एहतिराम[9] वक़्त का करते रहें 'गौतम',
जिसको बनाया वक़्त ने बेहतर बना दिया।
[9]सम्मान

137: इश्क़ ना करते सियासत करते

इश्क़ ना करते सियासत करते,
आपसे हम ना शिकायत करते।

आँख से निकला है पानी की तरह,
गुहर[1] की घर में हिफ़ाज़त करते।
[1]मोती

आपका करते ख़ैर-मक़्दम हम,
आँधियों का भी हैं स्वागत करते।

शरारतों से इश्क़ है हमको,
क्यों नहीं आप शरारत करते।

आपसे शिकवा सर-ए-आम करें,
हम नहीं ऐसी हिमाक़त करते।

हम भी नाराज़ बहुत हैं लेकिन,
नहीं अपनों की ख़िलाफ़त करते।

ग़ैर कहता है वो हमें 'गौतम',
हम उसी की हैं हिमायत करते।

138: मक़ाम शब से पहले ढूँढ रहा बंजारा

मक़ाम[1] शब से पहले ढूँढ रहा बंजारा,
सिर्फ़ बेफ़िक्र है सौदाई[2] और आवारा।
[1]ठिकाना [2]पागल

संभाल के नहीं रक्खा तो टूट जाएगा,
समेटना नहीं आसाँ है दिल-ए-सद-पारा[3]।
[3]दिल के सौ टुकड़े

ये इंतिज़ाम देखकर तो नहीं लगता है,
चार दिन का यहाँ मेहमाँ है बशर बे-चारा।

मैं दो जहान के बारे में सोच पाया नहीं,
मचाने शोर लगा दिल मानिंद-ए-नक़्क़ारा।

दवा से या दुआ से कम नहीं हो सकती है,
ख़लिश जिगर की तो देती नहीं है छुटकारा।

एक दीवार से आँगन को बाँट देने पर,
नहीं साबित रहा वह क़ीमती भाई-चारा।

वक़्त चलता नहीं किसी के मुताबिक 'गौतम',
वक़्त से जीत नहीं पाए रुस्तम-ओ-दारा।

139: लाज़िमी अब खुली बग़ावत है

लाज़िमी अब खुली बग़ावत है,
मुझे भी अपने से शिकायत है।

गिला-गुज़ार[1] ने ज़बाँ खोली,
हर्फ़ चुनने में की किफ़ायत है।
[1]शिकायत-कर्ता

चारागर को ज़रा तसल्ली हो,
बताना दर्द में कुछ राहत है।

मेरी अर्ज़ी क़ुबूल की उसने,
आज हम पर हुई इनायत है।

बात फिर आज नहीं की हमसे,
उसे नाराज़ी बे-निहायत[2] है।
[2]बहुत जादा

ज़िंदगी से बहुत बेज़ार हैं हम,
हाल नाज़ुक इसी बदौलत है।

किताब-ए-'इश्क़ में पढ़ा हमने,
आह-दारी[3] मिसाल-ए-आयत[4] है।
[3]आह निकालना [4]आयत पढ़ने के सामान

जाम पीते हैं कह के बिस्मिल्लाह,
यही रिंदों में अब रिवायत है।

दिल को समझाता है यही 'गौतम',
जल्द अब आने को क़यामत है।

140: भीड़ ख़यालों की दिमाग़ में भारी है

भीड़ ख़यालों की दिमाग़ में भारी है,
आज रात फिर जगने की तैयारी है।

साथ वक़्त के दाँव लगाता रहता है,
बशर लग रहा पैदाइशी जुआरी है।

सर्दी के मौसम में छानी राख गई,
ख़बर उड़ी जब इसमें इक चिंगारी है।

देर लगेगी पर सारे हल निकलेंगे,
जारी देखो संजीदा-गुफ़्तारी[1] है।
[1]गंभीर चर्चा

बे-क़ाबू हालात हो रहे मान लिया,
पता कीजिए किसकी जिम्मेदारी है।

काम दवा-ओ-दुआ नहीं अब आएगी,
दर्द ठहरकर साँस कर रहा भारी है।

है आज़ाद ख़याल शहर में हर बंदा,
इसके बारे में क्या राय-शुमारी है।

काम किसी के कैसे आओगे 'गौतम'
नहीं पास कुछ तेरे बस ख़ुद्दारी[2] है।
[2]स्वाभिमान

141: रात चढ़ते घिरी उदासी है

रात चढ़ते घिरी उदासी है,
बारहा आ रही उबासी है।

रास आया नहीं शहर तेरा,
चार-सू सिर्फ़ ना-शनासी[1] है।
[1]अजनबीपन

नाम से मेरे जो गया जाना,
नज़र में उसकी ना-सिपासी[2] है।
[2]कृतघ्नता

हम भटकने कहीं नहीं जाते,
आज दुनिया हुई आभासी[3] है।
[3]ख़याली

चारागर बेरुख़ी से कह देगा,
महज़ बुख़ार और खाँसी है।

सलाम पेश उसे भी करिए,
माना हाकिम का वो चपरासी है।

नाम सब जानने लगे उसका,
जब से बंदा हुआ सियासी है।

आपकी फ़िक्र कर रहे हैं सभी,
हमारी जान तो ज़रा-सी है।

वक़्त का मारा हुआ है 'गौतम',
उसके चेहरे पे बद-हवासी है।

142: सवाल ये है क्या किया जाए

सवाल ये है क्या किया जाए,
लम्हा लम्हा चलो जिया जाए।

रियाज़ से हुनर निखरता है,
खोलकर ज़ख़्म को सिया जाए।

बात हमने भी तो बिगाड़ी है,
आपसे क्यों गिला किया जाए।

इश्क़ करना है तो बे-लौस[1] करें,
लीजिए जो सिला दिया जाए।
[1]निस्वार्थ

अपने बारे में सोचा जाएगा,
ख़याल से वो माहिया[2] जाए।
[2]प्रिय

पूछना क्या सवाल साक़ी से,
जाम जो पेश है पिया जाए।

ख़ुदा के नाम पर मिला है अगर,
ख़ुदा के नाम पर लिया जाए।

जहाँ नज़र ठहर गई सबकी,
उधर नज़र सवालिया जाए।

यही सलाह लोग देते हैं,
उधर बहें जिधर दरिया जाए।

हम भी देखेंगे ख़ला[3] को 'गौतम',
शर्त हैं आँख से ज़िया[4] जाए।
[3]शून्य [4]रौशनी

143: चाँदनी रात शबनमी-सी है

चाँदनी रात शबनमी-सी है,
हमारी आँख में नमी-सी है।

नहीं मालूम क्या हुआ होगा,
मगर माहौल में ग़मी-सी है।

यूँ तो हर चीज है ठिकाने से,
कहीं लगती कोई कमी-सी है।

जिस्म माना हमारा मोहकम[1] है,
हमारी रूह तो ज़ख़्मी-सी है।
[1]सशक्त

दिख रही जो हमें आईने में,
एक सूरत है, आदमी-सी है।

घर में दाख़िल हुई है बे-दस्तक,
हवा भी लग रही सहमी-सी है।

कोई आया नहीं है ख़्वाबों में,
हमारी सोच ही वहमी-सी है।

शोर कुछ आ रहा है कानों में,
किसी जगह गहमा-गहमी सी है।

साफ़ होगी नहीं आसानी से,
गर्द तस्वीर पर जमी-सी है।

कोई रिश्ता हो या इमारत हो,
ठोस बुनियाद लाज़िमी-सी है।

उसका अंदाज़ तल्ख़[2] है 'गौतम',
सिर्फ़ आवाज़ मरहमी-सी है।
[2]कटु

144: वो क़िस्सा नाम से शाया' नहीं था

वो क़िस्सा नाम से शाया'[1] नहीं था,
किसी को उसने चौंकाया नहीं था।
[1]प्रकाशित

हमें मालूम थी उसकी हक़ीक़त,
मगर हमने भी झुठलाया नहीं था।

वो रोकर ये शिकायत कर रहा है,
किसी ने उसको बहलाया नहीं था।

हमारा नाम सब लेने लगे क्यों,
ज़बाँ पर आपके आया नहीं था।

उसे देखा है दुनियादार बनते,
उसे हमने तो उकसाया नहीं था।

भिगोया उसने ही दामन हमारा,
जो आँसू पलक तक आया नहीं था।

निकलकर क़ब्र से पूछेगा 'गौतम',
हमें क्यों ढंग से दफ़नाया नहीं था।

145: पाँव के नीचे रहगुज़र है जुदा

पाँव के नीचे रहगुज़र है जुदा,
कारवाँ और हमसफ़र है जुदा।

पाँव ले जा रहे सू-ए-मंज़िल,
ख़याल में मगर सफ़र है जुदा।

हमारे सामने दरपेश है जो,
नया मंज़र है या नज़र है जुदा।

ठोकरों से नहीं डर लगता है,
रेंग कर चलने का हुनर है जुदा।

पाँव को दे रहे रफ़्तार नई,
आबलों का दिखा असर है जुदा।

कोई रुकता नहीं किसी के लिए,
मिज़ाज़ है जुदा जिगर है जुदा।

गिला किसी को नहीं है 'गौतम',
ये नया दौर है बशर है जुदा।

146: हमारे हाल पर पहले सवाल करते हैं

हमारे हाल पर पहले सवाल करते हैं,
यूँ हाथ मलते हैं गोया मलाल करते हैं।

वज्ह-ए-बीमारी जानने के नाम पर अक्सर,
सवाल पूछकर जीना मुहाल करते हैं।

घर में घुसते चले आते हैं अयादत के लिए,
ये ख़ैर-ख़्वाह बवाल-ओ-वबाल करते हैं।

हमें बता रहे हैं अपना तजरबा-नुस्ख़ा,
डरा डरा के और भी बद-हाल करते हैं।

दर्द बढ़कर दवा हो जाता है ये कहते हुए,
मरीज़ को वो जानकर निढाल करते हैं।

नसीब वालों के ही दोस्त ऐसे होते हैं,
सवाल करते नहीं देखभाल करते हैं।

वो चारागर ही नेकदिल हमें लगे 'गौतम',
मरीज़-ए-इश्क़ का पहले ख़याल करते हैं।

147: दोस्ती का ख़याल करना है

दोस्ती का ख़याल करना है,
कैसे हो, ये सवाल करना है।

यार की मिस्ड कॉल आई तो,
यार को मिस्ड कॉल करना है।

जवाब गोलमोल देता है,
हमें भी गोलमाल करना है।

दुआ से मालामाल करता है,
दुआ से मालामाल करना है।

छोड़कर इश्क़-विश्क़ की बातें,
नया कोई धमाल करना है।

ज़बान साथ दे रही जब तक,
बात कर के निहाल करना है।

भूलना है नहीं ज़ोफ़-ए-पीरी[1],
उम्र का भी ख़याल करना है।
[1]बुढापे की कमजोरी

बाद मुद्दत के मिला है 'गौतम',
बहस को बे-मआल[2] करना है।
[2]अंत-हीन

148: सुकून मिल रहा अँधेरे से

सुकून मिल रहा अँधेरे से,
लग रहा डर हमें सवेरे से।

सारा दिन घर में क्या करे कोई,
निकले पड़े सुबह बसेरे से।

झोली से आस्तीन बेहतर है,
साँप ने की बहस सपेरे से।

जब नहीं हाज़िरी लगाते हैं,
ख़फ़ा हो जाते हैं वो मेरे से।

पानी पीते हैं छानकर दरिया,
जाल ले आए हैं मछेरे से।

हाल-ए-दिल पूछेंगे दम लेने दो,
थके हैं कू-ए-जाँ के फेरे से।

नहीं आसान ये सफ़र 'गौतम',
हमसफ़र लग रहे लुटेरे से।

149: वहाँ मिला कोई ख़ुश-हाल नहीं

वहाँ मिला कोई ख़ुश-हाल नहीं,
किसी को है मगर मलाल नहीं।

इश्क़ की राह जो पकड़ता है,
उसका मिलता है हाल-चाल नहीं।

इक तसव्वुर[1] हसीन है जन्नत,
बहस करेंगे बहर-हाल नहीं।
[1]कल्पना

उसके कूचे में है मायूस वही,
ताबेदारी में जो बहाल नहीं।

जवाब देने को तैयार थे जब,
किसी के पास थे सवाल नहीं।

हमको देता रहा तस्सली वह,
करेंगे बात पर फ़िलहाल नहीं।

आदतन बोलता नहीं 'गौतम',
कभी होता है बे-ख़याल नहीं।

150: बहस हालात पर करने बैठे

बहस हालात पर करने बैठे,
देर तक पहले अनमने बैठे।

गुफ़्तगू रफ़्ता रफ़्ता तेज़ हुई,
फिर लगा लोग हैं लड़ने बैठे।

कान कल ऐंठे थे उस्तादों ने,
कान अब बच्चे कतरने बैठे।

आज बैठेंगे कौन सी करवट,
ऊंट की तरह सोचने बैठे।

फ़क़ीर बाद में दुआ देना,
बहस ख़ैरात पर करने बैठे।

शुक्रिया साथ बैठने के लिए,
ग़ैर की बात ही करने बैठे।

नुक्ताचीनी[1] भी है लाज़िम 'गौतम'
अक्स-ए-ज़ात[2] पर करने बैठे।

[1]आलोचना [2]आत्म निरीक्षण

151: मिला आज है सूखा फूल किताबों में

मिला आज है सूखा फूल किताबों में,
चेहरा एक नुमायाँ[1] होगा ख़्वाबों में।
[1]दिखना

सफ़्हे नहीं पलटते हैं हम माज़ी के,
जाने कितने नाम मिलेंगे बाबों[2] में।
[2]अध्याय

आवाज़ें आती हैं मेरे कानों तक,
किसको पहचानें हम शोर-शराबों में।

बे-हिजाब चेहरों पर डाली नज़र नहीं,
उनको देखा नहीं जो रहे हिजाबों में।

मेहरबान मौसम होता है नहीं अगर,
सब्ज़ा कोई खिलता नहीं ख़राबों[3] में।
[3]बंजर

चलते नहीं उठाकर सर सीना ताने,
मैं शुमार करता हूँ मेरा हबाबों[4] में।
[4]बुलबुला

सूरत जैसी भी हो सीरत हो ऐसी,
ख़ुश्बू जैसे छुपती नहीं गुलाबों में।

सोच समझकर पूछे चंद सवाल मगर,
ख़ुद को उलझाया है मिले जवाबों में।

सिर्फ़ ख़ुदी[5] के साथ जिया जैसे 'गौतम',
वैसे ऐब दिखाई दिए नवाबों में।
[5]स्वाभिमान

152: हिज्र में जागिए रोने के लिए

हिज्र[1] में जागिए रोने के लिए,
रात गो[2] आई है सोने के लिए।
[1]वियोग [2]यद्यपि

वही होता है जो भी होना है,
जान क्यों देते कुछ होने के लिए।

अब्र-ओ-अश्क शर्मसार न हों,
मेरा दामन है भिगोने के लिए।

जिससे उम्मीद थी नहीं आया,
हमारे हाल पर रोने के लिए।

इनको दामन में सहेजे रखना,
ख़ार होते नहीं बोने के लिए।

लाए क्यों आब ओक[3] में भर कर,
बहुत था दरिया डुबोने के लिए।
[3]चुल्लू/अंजुली

ये बताते हैं जो सियासी हैं,
दाग होते नहीं धोने के लिए।

चैन से क्यों नहीं सोया 'गौतम'
पास कुछ था नहीं खोने के लिए।

153: आह से दर्द की तफ़्सीर हुई

आह से दर्द की तफ़्सीर[1] हुई,
आह ही बाइस-ए-तश्हीर[2] हुई।
[1]खुलासा [2]प्रचार का कारण

लोग करने लगे तौबा तौबा,
बेक़रारी मेरी तहक़ीर[3] हुई।
[3]अपमान

दिल-ओ-दीवार से हटा दी है,
बहुत बे-रंग जो तस्वीर हुई।

बारहा उनसे क्या गिला करते,
आदतन आने में ताख़ीर[4] हुई।
[4]विलम्ब

हम तो तैयार हैं जाने के लिए,
दुआ ही पाँव में ज़जीर हुई।

ख़्वाब में नेक बस्ती देखी थी,
वो ख़यालों में ही तामीर[5] हुई।
[5]निर्माण

कुछ भी इसमें नया नहीं 'गौतम',
नहीं शाया'[6] मेरी तहरीर[7] हुई।
[6]प्रकाशन [7]आलेख (दास्ताँ)

154: साक़ी तिश्ना-लबों का एहतिराम करने लगा

साक़ी तिश्ना-लबों[1] का एहतिराम[2] करने लगा,
अब तो नासेह[3] को भी पेश जाम करने लगा।
[1]प्यासे लोग [2]सम्मान [3]शराब विरोधी धर्मशास्त्री

सुबह से शाम तलक लोग मिलने आते रहे,
हर मुलाकात को फ़ौरन तमाम करने लगा।

उसने कर ली है मुकम्मल एक तक़रीर[4] नई,
नए जलसे का नया एहतिमाम[5] करने लगा।
[4]व्याख्यान [5]आयोजन

वो बे-नक़ाब मिल रहा है आजकल सबसे,
सुकून किसलिए सबका हराम करने लगा।

सलाम करने लगा सब को वो आते जाते,
गो शराफ़त के साथ क़त्ल-ए-आम करने लगा।

वो मेहरबान जब कभी भी हो गया हम पर,
तो गिन के तोहमतें हमारे नाम करने लगा।

मेरे ख़िलाफ़ अज़ीज़ों ने कुछ कहा 'गौतम',
दफ़्न-ओ-कफ़न का वो इंतिज़ाम करने लगा।

155: जन्नत की बात छेड़कर हैरान करेंगे

जन्नत की बात छेड़कर हैरान करेंगे,
फिर रिंद को नासेह परेशान करेंगे।

दीदार से करते हैं मसीहाई आजकल,
उखड़ी हुई हर साँस को तूफ़ान करेंगे।

ये बात कह के उसने परेशान कर दिया,
अब और किसी रोज़ परेशान करेंगे।

फिर दे रहे हैं हौसला राही को रहनुमा,
मौला सफ़र को एक दिन आसान करेंगे।

जंगल को काट कर इसे बसाया गया है,
बदले में अब शहर में बियाबान करेंगे।

हमको डराने लगता है हर रिश्ता करीबी,
हमको अकेला छोड़कर एहसान करेंगे।

कुछ दुनियादार लोगों ने समझाया है 'गौतम',
ईमानदार अपना ही नुक़सान करेंगे।

156: खिली है धूप, गुनगुनी भी है

खिली है धूप, गुनगुनी भी है,
हवा में हल्की कनकनी भी है।

सर्द मौसम पसंद आने लगा,
हौसला आज आहनी[1] भी है।
[1]फौलादी

आओ कुछ दूर घूम कर आयें,
झुनझुनी पा की झटकनी भी है।

उससे इज़हार-ए-इश्क़ में है मज़ा,
जिससे थोड़ा तनातनी भी है।

गर्म अख़बार पर नज़र डालें,
यहाँ उम्मीद-ओ-सनसनी भी है।

आज की रात ख़्वाब देखेंगे,
आज की रात चाँदनी भी है।

अच्छा लगता है यार का वादा,
यार लेकिन वादा-शिकनी[2] भी है।
[2]वादा तोड़ने वाला

दुनियादारी बहुत ज़रूरी है,
आपसे हमको सीखनी भी है।

इसमें देखे गए हैं पेच-ओ-ख़म,
रेशमी ज़ुल्फ़ है घनी भी है।

देख लें रंग ढंग दुनिया के,
सही तस्वीर खींचनी भी है।

ग़ौर होगा सभी मसाइल[3] पर,
सामने बात पहुँचनी भी है।
[3]समस्या

बात को दरकिनार कर देते,
बात इतनी-सी है जितनी भी है।

ज़िंदगी से है तसल्ली 'गौतम',
ख़ुश-तबीअत है अनमनी भी है।

157: अंदाज़ा भँवर का नहीं साहिल से मिलेगा

अंदाज़ा भँवर का नहीं साहिल से मिलेगा,
इसका अता पता तो मुत्तसिल[1] से मिलेगा।
[1]नजदीक

किस तरह गुज़ारी है शब-ए-हिज्र किसी ने,
इसका खुलासा तो नहीं ग़ाफ़िल से मिलेगा।

किस मसअले पे किसने क्या बयान दिया था,
इसका हिसाब खो गई फ़ाइल से मिलेगा।

आवाज़ निगहबान सुबह में नहीं देंते,
एलान-ए-सुबह रोज़ अनादिल[2] से मिलेगा।
[2]बुलबुलें

जाता है तेज़ पाँव से हर रोज़ मुसाफ़िर,
सपना ये देखता है वो मंज़िल से मिलेगा।

इस बारगाह[3] से रहे उम्मीद-ओ-यकीं,
कुछ देर होगी फ़ैसला आदिल[4] से मिलेगा।
[3]अदालत [4]न्यायाधीश

हिम्मत जुनून अज़्म-इरादों[5] का सिला क्या,
इसका जवाब तो नहीं बुज़दिल से मिलेगा।
[5]मजबूत इरादे

ज़ेर-ए-बहस तो बे-शुमार मुद्दे हैं 'गौतम',
क्या एक हल कभी किसी फ़ाज़िल से मिलेगा।

158: बंद दरवाज़े किए फिर बंद कर लीं खिड़कियाँ

बंद दरवाज़े किए फिर बंद कर लीं खिड़कियाँ,
लोग मुझमें फिर से थे लेने लगे दिलचस्पियाँ।

एक अरसा हो गया है स्लेट दिल की पोंछ कर,
आज भी आकर अटकती हैं गले में हिचकियाँ।

पर कतर के बैठे हैं आकर क़फ़स[1] में बा-ख़ुशी,
अच्छी लगती हैं मगर आज़ाद उड़ती तितलियाँ।
[1]पिंजरा

ख़ुश्क आँखों में नहीं था एक क़तरा अश्क का,
रात के पिछले पहर लेकिन सुनी थीं सिसकियाँ।

थी नहीं दुश्वार इक इक रहगुज़र हमवार[2] थी,
तय नहीं कर पाए हम मंज़िल तलक की दूरियाँ।
[2]सरल/समतल

रश्क हमको होने लगता है हुनर यह देखकर,
हार कर भी लोग कैसे जीतते हैं बाज़ियाँ।

आज भी मजबूर होकर लिखता है 'गौतम' मगर,
पेश अब करता नहीं जाकर कहीं भी अर्ज़ियाँ।

159: बाज़ार में बैठे हैं ख़सारे से डर रहे

बाज़ार में बैठे हैं ख़सारे[1] से डर रहे,
फोड़ेंगे जो पटाखे शरारे[2] से डर रहे।
[1]हानि [2]चिंगारी

इस दौर में ये ख़्वाब देखना गुनाह है,
हाकिम किसी ग़रीब बेचारे से डर रहे।

कुछ लोग डर रहे हैं नए मुद्दों को लेकर,
हम आज भी पुराने शुमारे[3] से डर रहे।
[3]मुद्दे

शीरीं[4] ज़बान वालों से डरता नहीं कोई,
आँखों से किए जाते इशारे से डर रहे।
[4]मीठी

ऐसे जुनूनी लोगों से घबरा रहा दरिया,
गिर्दाब से नहीं जो किनारे से डर रहे।

माहौल बदलता नहीं तक़रीर से उतना,
बे-वजह उछाले गए नारे से डर रहे।

कल देखी है इन लोगों ने जलती हुई बस्ती
इस वजह से ये आज अंगारे से डर रहे।

ऐसा उठा है आज भरोसा मेरा 'गौतम',
हम अपने अज़ीज़ों के सहारे से डर रहे।

160: नज़र मे ज़ौक़-ए-जमाल नहीं

नज़र मे ज़ौक़-ए-जमाल[1] नहीं,
नुक़्ता-चीं[2] साथ ख़ुश-मक़ाल[3] नहीं।
[1]सौंदर्य का ख़याल [2]आलोचक [3]मृदुभाषी

गिला-ए-रंजिश-ए-बेजा[4] हो तो,
राब्ता[5] होता है बहाल नहीं।
[4]बे-आधार की रुष्टता [5]संबंध

हमको इस बात की तसल्ली है,
आपको रंज-ओ-मलाल नहीं।

बात बे-वजह बढ़ाई जाए,
इसमें दिखता कोई कमाल नहीं।

इश्क़ का मरहला अजीब है ये,
फ़िराक़ भी नहीं विसाल नहीं।

ग़ौर से देखें हाज़रीनों[6] को,
जो हैं ख़ामोश बे-सवाल नहीं।
[6]उपस्थित लोग

मेरी सूरत में ऐब है 'गौतम',
आईने में है कोई बाल[7] नहीं।
[7]विकार

161: फूल गुलदान में मुरझाए हुए

फूल गुलदान में मुरझाए हुए,
अभी हैं मेज़ पर सजाए हुए।

अपनी बारी का इंतिज़ार करें,
और भी देर से हैं आए हुए।

ख़बर हैं याँ बहार आएगी,
लोग बैठें कमर टिकाए हुए।

सवाल पूछने पे मिलते हैं,
जवाब फिर रटे-रटाए हुए।

चारागर वक़्त ना ख़राब करें,
सारे नुस्ख़े हैं आज़माए हुए।

नज़र उठा नहीं पाया अपनी,
रहे हिजाब वो सरकाए हुए।

ग़ौर से कल सहर को देखेंगे,
आज हैं आसमाँ उठाए हुए।

हाज़िरी फिर नहीं लगी 'गौतम',
गए थे आप सर उठाए हुए।

162: उसके अंदाज़-ए-बयाँ में रस्म-ए-हिरमाँ रहा

उसके अंदाज़-ए-बयाँ में रस्म-ए-हिरमाँ[1] रहा,
अल-अमाँ[2] उसके लबों पर चस्पाँ जावेदाँ[3] रहा।
*1*मना करने की रस्म *2*मना करना *3*हमेशा*(*स्थायी*)*

गुफ़्तगू करने को हर मसले पे कहता हाँ रहा,
पर ज़बाँ पर सलवटों[4] के साथ ई-ओ-आँ[5] रहा।
*4*बनावटीपन *5*ये और वो *(*इधर उधर*)*

मंज़िलों की जुस्त-ओ-जू[6] करते उसे देखा नहीं,
अपने घर से वो निकलकर घूमता याँ वाँ रहा।
*6*खोज

धीरे धीरे सोहबत का कुछ असर होगा ज़रूर,
साथ जो वाइज़ के बैठा फिर कहाँ इंसाँ रहा।

वक़्त आने पर बदलते देखा उसको रास्ता,
जो हमारे साथ हरदम एक दिल यक-जाँ रहा।

हर हक़ीक़त को नज़र-अंदाज़ हमने भी किया,
इश्क़ का हर राज़ मेरे दिल में ही पिन्हा रहा।

मिल के 'गौतम' से सभी हैरानी से कहने लगे,
बे-वजह शाह-ए-जुनूँ[7] को इल्म-ओ-इरफ़ाँ[8] रहा।
*7*पागलों का सरदार *(*बड़ा पागल*)* *8*ज्ञान और प्रबोध

163: बे-जुर्म-ओ-क़ुसूर-वार मानते नहीं

बे-जुर्म-ओ-क़ुसूर-वार मानते नहीं,
इस नामुराद को हुज़ूर जानते नहीं।

हमसे निभा रहे हैं ख़ास रंजिश-ए-बेजा,
लेकिन वो सबके सामने पहचानते नहीं।

कल देर तक वो दे रहे थे सबको सफ़ाई,
इतना महीन वो थे कभी छानते नहीं।

ना बोलने की हम कसम खाते नहीं कभी,
ना बोलने की जिद वो अगर ठानते नहीं।

ढकते हैं सर ग़रीब तो ढकते नहीं हैं पाँव
चादर को सीधा लेटकर सब तानते नहीं।

दामन को भी बेदाग जब रखने लगे क़ातिल,
मक़्तल[1] की भी माटी को ख़ूँ से सानते नहीं।
[1]वधस्थल

क्यों दास्तान-ए-दिल कभी करता बयाँ 'गौतम',
किरदार जो मरकज़[2] में हैं गरदानते[3] नहीं।
[2]केंद्र [3]स्वीकारना

164: सबको लेकर बद-गुमाँ रहता है वो

सबको लेकर बद-गुमाँ[1] रहता है वो,
दर-हक़ीक़त[2] सद-गुमाँ[3] रहता है वो।
[1]गलत धारणा [2]वास्तव में [3]कुछ न कुछ धारणा

बात सुनकर सबको वाइज़[4] की लगा,
हर समय ही गुमरहाँ[5] रहता है वो।
[4]धार्मिक उपदेशक [5]भटका हुआ

डर उसे आज़ार-ए-जाँ[6] का हो रहा,
जिस किसी पर मेहरबाँ रहता है वो।
[6]जान का ख़तरा

बादशाहत है मुसलसल वक़्त की,
लेता सबका इम्तिहाँ रहता है वो।

हम भी वाँ जाकर ठिकाना ढूँढते,
गर ख़बर मिलती कहाँ रहता है वो।

है हरम इस ओर मय-ख़ाना उधर,
किसलिए अब दरमियाँ रहता है वो।

कर रहा 'गौतम' बहुत हैरत-ज़दा,
क्या वजह है शादमाँ[7] रहता है वो।
[7]खुश

165: पास हैं राज़ ग़ाएबाना नहीं

पास हैं राज़ ग़ाएबाना[1] नहीं,
हम बनाते कोई बहाना नहीं।
[1]गुप्त

सर-ब-सजदा[2] ही रहा करता हूँ,
ढूँढता हूँ कोई ख़ज़ाना नहीं।
[2]झुका हुआ सर

यूँही होती दुआ-सलाम नहीं,
कब कहा हमने दोस्ताना नहीं।

पढ़ गए मर्सिया अयादत पर,
मिज़ाज से थे शा'इराना नहीं।

याँ से उड़ना है परिन्दे की तरह,
और दिन याँ है आब-ओ-दाना नहीं।

ज़ब्त कर लेना ही बेहतर होगा,
पास रोने को कोई शाना[3] नहीं।
[3]कंधा

हम तो पहचानते रहे हरदम,
मिला तो यार ने पहचाना नहीं।

ज़िंदा-दिल गर नहीं होता 'गौतम',
ग़ौर से देखता ज़माना नहीं।

166: दिल में पैठी हुई ख़ला-सी है

दिल में पैठी हुई ख़ला[1]-सी है,
छेड़ती रहती है, बला-सी है।
[1]शून्य

रोज़ रहता है मुक़ाबिल कोई,
ज़िंदगी लगती कर्बला-सी है।

मेरी जानिब नज़र जो डाली है,
रहमत-ए-रब्ब-ए-उला-सी[2] है।
[2]ईश्वर की कृपा जैसी

मेरी ग़ज़ल पे गहरी ख़ामोशी,
तर्ज़-ए-क़स्द-ए-गिला-सी[3] है।
[3]शिकायत भरी

नींद आ जाए बे-ख़याल-ओ-ख़्वाब,
ऐसी शब लगती बे-सिला-सी है।

पाँव पटका ज़मीं पे मुफ़लिस ने,
थरथराहट ये ज़लज़ला-सी है।

पैर से लिपटी है थकन 'गौतम',
चुभ रही पा में आबला-सी[4] है।
[4]छाले जैसी

167: यार वादा हैं सौ दफ़ा करते

यार वादा हैं सौ दफ़ा करते,
एक दिन एक तो वफ़ा करते।

मान लेते हैं बा-ख़ता ख़ुद को
किसलिए यार को ख़फ़ा करते।

कभी मिले तो पाया जल्दी में
बात हम कोई किस दफ़ा करते।

बैठकर गुफ़्तगू अगर होती,
मामले कुछ रफ़ा'-दफ़ा करते।

आईने से अगर शिकायत है,
एक दिन चेहरा सफ़ा करते।

काश सौदागरी हमें आती,
सारे हम सौदे बा-नफ़ा करते।

वफ़ा करने का दिल नहीं है तो,
राब्ता रखने को जफ़ा करते।

दिल मेरा काम का नहीं है तो,
दूसरा पेश क्या तोहफ़ा करते।

अपने दीवानों में गिनकर 'गौतम',
हमारा नाम भी अरफ़ा करते।

168: आते जाते ही मुलाकात हुई

आते जाते ही मुलाकात हुई,
उसकी मर्ज़ी हुई तो बात हुई।

नक़ाब खोलकर दिन करते हैं,
ज़ुल्फ़ को खोल दिया रात हुई।

मरीज़ हो गए अच्छे उसके,
देख लेने से करामात हुई।

लोग हैं कर रहे कानाफूसी,
किसी के साथ ख़ुराफ़ात हुई।

मसअले थे कई ज़ेर-ए-महफ़िल,
हिज्र और वस्ल की ही बात हुई।

जिस्म अब भीगा आँच देने लगा,
किस तरीके की ये बरसात हुई।

काम क्या आन पड़ा है 'गौतम',
आज क्यों पुर्शिस-ए-हालात[1] हुई।

[1]हालत की पूछ-ताछ

169: हम गिरफ़्तार-ए-हवस हैं आज़ाद नहीं हैं

हम गिरफ़्तार-ए-हवस[1] हैं आज़ाद नहीं हैं,
बर्बाद-ए-इल्तिफ़ात[2] हैं आबाद नहीं हैं।
[1]लालसाओं के बंदी [2]प्यार में बर्बाद

आशिक़ हैं सारे पर-कटे परिंदे के मानिंद,
सय्याद को वो मानते सय्याद नहीं हैं।

लाचारी-ए-दाएम[3] सही उम्मीद है क़ाएम,
नाशाद[4] ख़ुद को मानते नाशाद नहीं हैं।
[3]स्थायी लाचार [4]नाखुश

तामीर[5] करने बैठे गए ख़्वाब चश्म-कोर,
कब देखते हैं संग-ए-बुनियाद[6] नहीं हैं।
[5]निर्माण करना [6]नींव का पत्थर

जो सितमगर के सितम को हैं मानते करम,
करते किसी सितम पे वो फ़रियाद नहीं हैं।

मुद्दत से अयादत के लिए आए नहीं तुम,
क्या मेरे घर के रास्ते अब याद नहीं हैं।

निकला हूँ मैं तलाश में उस शहर की 'गौतम',
जिस शहर में होते कभी फ़साद नहीं हैं।

170: सू-ए-साहिल भी नहीं जाते हैं

सू-ए-साहिल[1] भी नहीं जाते हैं,
मौज-ए-दरिया[2] से ख़ौफ़ खाते हैं।
[1]किनारे की ओर [2]नदी की लहरों से

फ़क़ीर फ़ाक़ा-मस्त[3] दिखते हैं,
कौन-सी वो ख़ूराक खाते हैं।
[3]हर हाल खुश

हवा का ज़ोर भाँपने वाले,
चराग़ देखकर जलाते हैं।

संभल के आईना देखा जिसने,
सभी को आईना दिखाते हैं।

नाम किरदारों का बताते नहीं,
तवील[4] दास्ताँ सुनाते हैं।
[4]लम्बी

दश्त-ओ-सहरा की सैर करता है,
उसको सन्नाटे रास आते हैं।

काम आया कभी नहीं 'गौतम',
उसको हर बार आज़माते हैं।

171: रात गुज़री मेरी करवट लेते

रात बीती मेरी करवट लेते,
चौंकते जागते आहट लेते।

राब्ता चाहते अगर रखना,
देखकर वो हमें न कट लेते।

कैफ़ियत गू-मगू की होने पर,
फ़ैसला वो नहीं झटपट लेते।

हमें आती नहीं दुनियादारी,
हमारी राय क्यों मुँह-फट लेते।

उसकी महफ़िल में रसाई होती,
क़ाएदा उसका अगर रट लेते।

तपा हुआ है उसे देखा नहीं
कभी पेशानी पे सिलवट लेते।

कोई मतलब नहीं निकलने पर,
ग़ैर की वो नहीं झंझट लेते।

दश्त-ओ-सहरा में भटकने वालों,
हमारे शहर में भटक लेते।

हमने छोड़े ही नहीं नक़्श-ए-पा,
इन्हीं के साथ हम पलट लेते।

असली चेहरे के साथ मिलते वो,
चेहरा पढ़ लेते दो मिनट लेते।

एक झंझट है ज़िंदगी अपनी,
साथ क्यों इश्क़ की झंझट लेते।

किताब-ए-माज़ी के सफ़्हे 'गौतम',
एक दिन तो उलट-पलट लेते।

172: यदा-कदा मिला करें सब से

यदा-कदा मिला करें सब से,
मुंतज़िर[1] बैठे हुए हैं कब से।
[1]प्रतीक्षारत

रब के बंदों से गुफ़्तगू करिए,
बात तो रोज़ कर रहे रब से।

सभी को याद किया करते हैं,
नाम मेरा भी लीजिए लब से।

एक उम्मीद है नए दिन से,
सहर को याद कर रहे शब से।

सोचने भर से बात बनती नहीं,
बात बनती है किसी करतब से।

ज़बाँ पे पास-ओ-लिहाज़ रहे,
लोग मिलते नहीं हैं बेढब से।

और कुछ हो न हो तसल्ली हो,
भेंट हो जाए अगर साहेब से।

चारागर की है शिकायत वाजिब,
लोग करते हैं याद मतलब से।

कभी तो दिल से दिल मिले 'गौतम',
आरज़ू पाले हुए हैं कब से।

173: आज ख़ुद से हिसाब माँगा है

आज ख़ुद से हिसाब माँगा है,
सारा लुब्ब-ए-लुबाब[1] माँगा है।
*1*सार-संक्षेप

आज तो हर सवाल ने हमसे,
जवाब ला-जवाब माँगा है।

जिसकी ताबीर[2] भी नज़र आए,
आँख ने ऐसा ख़्वाब माँगा है।
*2*स्वप्न-फल

हुआ नासेह पे रिंदों का असर,
आज जाम-ए-शराब माँगा है।

सराब में भटकने वालों ने,
आब ज़ेर-ए-सहाब[3] माँगा है।
*3*बादल (की छाँव) तले

रूठ कर चाँद से दीवानों ने,
रात में आफ़्ताब माँगा है।

किताब-ए-माज़ी को पलटते हुए,
हमने एक कोरा बाब[4] माँगा है।
*4*अध्याय

ज़िंदगी से हुआ ख़फ़ा 'गौतम',
ख़ुदा से इंक़लाब माँगा है।

174: बीच दरिया में आब तेज़-रवाँ

बीच दरिया में आब तेज़-रवाँ[1],
छू के साहिल गई रफ़्तार कहाँ।
[1]तेज प्रवाह

ज़बाँ से लोग कह रहे हैं कुछ,
और कुछ हो रहा सूरत से अयाँ[2]।
[2]प्रकट

बुझा बुझा सा है चेहरा सबका,
सुलग रहा मगर आँखों में धुआँ।

लोग हैरत-ज़दा हो सकते हैं,
ना हक़ीक़त को किया जाए बयाँ।

उसको बे-दख़ल कर नहीं सकते,
ओढ़कर फ़लक[3] सो रहा बे-मकाँ।
[3]आसमान

हदफ़[4] किसी को बना सकता है,
वक़्त के हाथ में चढ़ी है कमाँ।
[4]लक्ष्य

ग़ौर से देखिए उसको 'गौतम',
कुछ इशारों से कह रहा बे-ज़बाँ।

175: साफ़ सीधी बात कर, मुबहम नहीं

साफ़ सीधी बात कर, मुबहम[1] नहीं,
क्या मज़ा गर लुत्फ़-ए-बाहम[2] नहीं।
[1]अस्पष्ट [2]दोंनो को समान आनंद

सितमगर लगता तभी है मेहरबाँ,
अगर रखता पास जा-ए-रहम[3] नहीं।
[3]रहम की जगह

इश्क़ के कुछ ज़ख़्म देते टीस हैं,
वास्ते इस टीस के मरहम नहीं।

झुनझुने से बच्चे को बहला लिया,
पास उसके अक़्ल और फ़हम नहीं।

दास्तान-ए-दिल नहीं सुनता कोई,
यदि मिला हो दर्द-ए-पैहम[4] नहीं।
[4]लगातार दर्द

मामला कैसे कोई सुलझाए फिर,
बात गर ठहरी हो तुम या हम नहीं।

कल का दिन भी देखना कट जाएगा,
पालते हैं हम ख़याल-ए-वहम नहीं।

मामले थे और भी 'गौतम' वहाँ,
मामला दिल का था बहुत अहम नहीं।

176: लाख कोशिश करी भुलाने की

लाख कोशिश करी भुलाने की,
याद आती रही अफ़्साने की।

पुर्सिश-ए-ग़म[1] के लिए आए वो,
जब घड़ी आ गई मर जाने की।
[1]कष्ट का पता करने

जिसमें लोगों की हुई दिलचस्पी,
वो ख़ुद-बयानी थी दीवाने की।

बात जन्नत की करेगा वाइज़,
बात क्यों छेड़ दी मयख़ाने की।

उसको फ़ुर्सत नहीं मिली होगी,
बात तय थी क़रीब आने की।

इश्क़ का हम गुनाह कर बैठे,
अब तो हसरत है सज़ा पाने की।

बस इसी बात से दिल टूटा है,
बात हमसे करी बेगाने की।

अपनी धुन में है जी रहा 'गौतम',
बात समझी नहीं फ़रज़ाने[2] की।
[2]ज्ञानी

177: यह ज़रूरी नहीं हर बात का मफ़्हूम मिले

यह ज़रूरी नहीं हर बात का मफ़्हूम[1] मिले,
वो सितमगर हमें बनकर कभी मासूम मिले।
[1]अर्थ

हमको उलझा गए अल्फ़ाज़-ओ-मआनी[2] में,
गुफ़्तगू करने को वाइज़ बहुत मौसूम[3] मिले।
[2]शब्द और अर्थ [3]प्रख्यात

मिलने वालों से उसने आज तआरुफ़ पूछा,
कू-ए-जानाँ से आज लौटे जो मग़्मूम[4] मिले।
[4]दुखी

ख़्वाब तो ख़्वाब हैं उनसे नहीं गिला हमको,
ख़याल ज़ेहन में जो आए क्यों मौहूम[5] मिले।
[5]यथार्थ से परे (काल्पनिक)

हमने देखा है बुरा हाल गाँव का लेकिन,
शहर में ज़्यादा हमें बेबस-ओ-मज़लूम मिले।

वो जो ख़ामोश ही रहता है पूछ लो उससे,
क्या पता पास एक ख़्वाहिश-ए-मौहूम[6] मिले।
[6]ख़याली अभिलाषा

नज़र के सामने फैला है आलम-ए-इम्काँ[7],
कामयाबी के लिए हुनर-ओ-मक़्सूम[8] मिले।
[7]संभावनाओं का संसार [8]कौशल और भाग्य

अदू[9] के साथ भी कुछ राब्ता रहे क़ाएम,
वक़्त पड़ने पे कहीं यार ना मौदूम[10] मिले।
[9]शत्रु [10]लापता/लुप्त

कोफ़्त होती रही हम-उम्र से बहस कर के,
गुफ़्तगू के लिए बच्चे सभी मासूम मिले।

हौसला रख के जो घर से निकल पड़े 'गौतम',
ऐसे जाँबाज़ मंज़िलों से कब महरूम मिले।

178: आज कुछ याद ना आए तो थोड़ी साँस मिले

आज कुछ याद ना आए तो थोड़ी साँस मिले,
आज कोई ना बुलाए तो थोड़ी साँस मिले।

उसके एहसान तले साँस हो रही भारी,
बार सीने से हटाए तो थोड़ी साँस मिले।

ख़्वाब आँखों को रातभर नहीं सोने देगा,
ख़्वाब आँखों में ना आए तो थोड़ी साँस मिले।

भीड़ के बीच में चलते हुए दम घुटता है,
साथ में हों नहीं साए तो थोड़ी साँस मिले।

तेज़ रफ़्तार से तय कर रहें हैं रोज़ सफ़र,
बू-ए-मंज़िल अगर आए तो थोड़ी साँस मिले।

चराग़ जलते ही जल जाते हैं यादों के चराग़,
कोई चराग़ बुझाए तो थोड़ी साँस मिले।

लोग बे-वजह हमें याद कर रहे हैं क्यों,
दफ़्न हमको किया जाए तो थोड़ी साँस मिले।

कान में चुभती है ख़ामोश सदा भी 'गौतम',
कोई बिरहा नहीं गाए तो थोड़ी साँस मिले।

179: साँस लेने को सबब भी चाहिए

साँस लेने को सबब भी चाहिए,
साँस लेना बे-सबब भी चाहिए।

खाली बैठे वक़्त जब कटता नहीं,
कुछ ख़यालों में अजब भी चाहिए।

यूँही साक़ी मेहरबाँ होता नहीं,
रिंद होना तिश्ना-लब भी चाहिए।

माँग वाजिब है मरीज़-ए-इश्क़ की,
अलहदा[1] अपना मतब[2] भी चाहिए।
[1]अलग [2]अस्पताल

कैसा दीवाना है कू-ए-यार का,
हिज्र की शब में तरब[3] भी चाहिए।
[3]मज़ा/आनंद/ऐश

आयेंगे मिलने मगर यह शर्त है,
शैदा[4] होना जाँ-ब-लब[5] भी चाहिए।
[4]पागल (प्रेमी/आशिक) [5]जान होंठों पर अटकी

वादा-ए-जन्नत नहीं काफ़ी हमें,
माफ़ करने वाला रब भी चाहिए।

वो नहीं यूँही सुनाता है ग़ज़ल,
रात भी, बज़्म-ए-अदब[6] भी चाहिए।
[6]साहित्यिक गोष्ठी

किसलिए सज्दा करे 'गौतम' कोई,
आपमें ग़ैज़-ओ-ग़ज़ब[7] भी चाहिए।
[7]गुस्सा

180: वादा करके हुज़ूर आए हैं

वादा करके हुज़ूर आए हैं,
मेरे हिसाब गड़बड़ाए हैं।

ख़ार की बात ना करे कोई,
गुलाब ज़ुल्फ़ में सजाए हैं।

सिफ़त[1] है ख़ास हाथ में कोई,
खोटे सिक्के सभी चलाए हैं।
[1]गुण

याद आया नहीं गिला हमको,
देखकर जब वो मुस्कुराए हैं।

देखिए क्या जवाब देते हैं,
सवाल हमने भी उठाए हैं।

देखें किस सम्त[3] नज़र जाएगी,
हम नज़र पर नज़र जमाए हैं।
[3]ओर

जो भी उस्ताद से सबक़ सीखे,
वही शागिर्दों ने दोहराए हैं।

वक़ार[4] अपना गिराकर 'गौतम',
सोच में बैठे सर झुकाए हैं।
[4]सम्मान

181: एक कोशिश हो तैरने के लिए

एक कोशिश हो तैरने के लिए,
वरना दरिया है डूबने के लिए।

अपनी कीमत वही बताएगा,
जो भी तैयार है बिकने के लिए।

रास्ता जाता है सू-ए-मंज़िल,
बुला रहा हमें चलने के लिए।

वक़्त का इंतिज़ार बे-मतलब,
लम्हे आते नहीं टिकने के लिए।

चाँद निकले तो देख लेना तुम,
तारे होते नहीं गिनने के लिए।

सारे मौसम बदलते रहते हैं,
नहीं आया कोई रुकने के लिए।

हमको सरदर्द की हुई आदत,
चारागर दे दवा घुटने के लिए।

नींद गर अच्छी चाहिए 'गौतम',
सैर पर जाइए थकने के लिए।

182: हमें कहकर किया उसने किनारे

हमें कहकर किया उसने किनारे,
बहुत बोसीदा[1] हैं क़िस्से तुम्हारे।
[1]बासी/पुराना

किसी अख़बार ने छापा नहीं है,
बहुत आशिक़ गए बे-मौत मारे।

न जाने गर्दिश-ए-पैहम[2] में डूबे,
मेरी तक़दीर के कितने सितारे।
[2]लगातार बुरा समय

गई बातों पे उसने ख़ाक डाली,
हैं उसके सामने इतने शुमारे[3]।
[3]मुद्दे

नज़र में रहते हैं मंज़र-ब-मंज़र,
हमारी ओर कब करते इशारे।

किसी को चाहता दिल भूलना है,
मगर कुछ याद आए तो बिसारे।

बहुत बे-दम हुआ 'गौतम' न छेड़ो,
उठेगा अब तो यारों के सहारे।

183: पास मेरे तो महज़ अल्फ़ाज़ हैं

पास मेरे तो महज़ अल्फ़ाज़[1] हैं,
वक़्त के मारे हुए बे-नियाज़[2] हैं।
[1]शब्द [2]निस्पृह

काटनी जिसमें असीर-ए-उम्र[3] है,
ये हमारे घर नहीं हैं मआज़[4] हैं।
[3]बंदी काल [4]शरण-स्थली

वक़्त तो आराम का आया नहीं,
फिर सफ़र का कर रहे आग़ाज़[5] हैं।
[5]प्रारम्भ

दास्ताँ लम्बी बहुत है उम्र की,
रखते अब अंदेशा-ए-ईजाज़[6] हैं।
[6]संक्षेपण की आशंका

सबकी मुट्ठी में है दुनिया आजकल,
अब नहीं हम क़ाबिल-ए-ए'ज़ाज़[7] हैं।
[7]सम्मान के लायक

पुर्शिस-ए-हालात[8] लेने आए हैं,
आने वाले तो बहुत फ़य्याज़[9] हैं।
[8]हालत की जानकारी [9]दिलदार

करते क्यों 'गौतम' नहीं कोई गिला,
आज भी क्यों पाले पास-ओ-लिहाज़ हैं।

184: चलने के वास्ते क़दम तैयार नहीं थे

चलने के वास्ते क़दम तैयार नहीं थे,
आँखों के सामने कोई कोहसार[1] नहीं थे।
[1]पहाड़

उसने बदल लिए हैं अपने तौर-तरीक़े,
हालात पर आशिक़ के शर्मसार नहीं थे।

अफ़साना बनाकर सुनाई दास्ताँ मेरी,
जिसमें हमारे साथ वो किरदार नहीं थे।

इस पार भी नहीं मिले उस पार भी नहीं,
कश्ती में साथ नाख़ुदा सवार नहीं थे।

आए थे लेने जाएज़ा हालात का मेरे,
ख़ामोश रहे पर वो सोगवार नहीं थे।

हम आ गए सहरा तलक सहाब ढूँढते,
हर सू सराब तो थे आबशार[2] नहीं थे।
[2]झरना

मायूस होके देखा था हमने भी अदू को,
जब दोस्तों से बचने के आसार नहीं थे।

अख़बार में ख़बर तलाशता रहा 'गौतम',
सफ़्हे तो एक भी बे-इश्तिहार नहीं थे।

185: लोगों को लगा था वो हिकायत सुना रहे

लोगों को लगा था वो हिकायत[1] सुना रहे,
हम जान गए हमको शिकायत सुना रहे।
[1]कहानी

देखा है जिसने हादसा ख़ामोश खड़ा है,
दावे के साथ वो हैं असलियत सुना रहे।

हसरत है सितमगर की उसे मेहरबाँ कहें,
बरती जो सितम में है रिआयत सुना रहे।

लूटा है उसने बज़्म को अंदाज़-ए-बयाँ से,
करके वो गलत तर्जुमाँ आयत सुना रहे।

मयख़ाने में नासेह को आने लगा मज़ा,
रिंदों को रोज़ अपनी इल्मियत[2] सुना रहे।
[2]ज्ञान की बातें

हम मुस्कुरा के बा-अदब सुनते हैं ग़ौर से,
वो हमको बुज़ुर्गों की हिदायत सुना रहे।

आईना ही ख़ामोशी से सुन लेता है 'गौतम',
उसको ही रोज़ अपनी कैफ़ियत सुना रहे।

186: बारहा बंद किया दरवाज़ा

बारहा बंद किया दरवाज़ा,
रह गया एक चोर-दरवाज़ा।

साँस फूली है आधे रस्ते में,
ये अंधी दौड़ का है ख़म्याज़ा[1]।
[1]परिणाम

बात कोई नहीं कही उसने।
सब लगाते ही रहे अंदाज़ा।

किसी के क़त्ल का सुबूत है ये,
ख़ून दामन में लगा है ताज़ा।

मुंतज़िर आज भी है दस्तक का,
हमारे दिल का बंद दरवाज़ा।

अपनी सूरत से तआरुफ़ पूछा,
आईना देख लिया बे-ग़ाज़ा[2]।
[2]बिना सुर्खी (मेकअप)

संभालना था अपनी हस्ती को
देखिए बिखर गया शीराज़ा[3]।,
[3]सब कुछ

कोई उम्मीद तुझसे है 'गौतम',
कर रहा है वो बहुत आवाज़ा[4]।
[4]जय-जयकार

187: यहाँ ना रहते ना वहाँ रहते

ना रहते ना वहाँ रहते,
ठीक ये होता दरमियाँ रहते।

हरम भी जाते हम बिला-नाग़ा,
पहुँच में मेरी दो-जहाँ रहते।

एक उम्मीद दी गई होती,
उठाए सर पे आसमाँ रहते।

सवाब[1] का यक़ीन होता तो,
जबीं से घिसते आस्ताँ रहते।
[1]पुण्य फल

ग़ौर से लोग यदि सुना करते,
सुनाते हम भी दास्ताँ रहते।

कोई बनकर ख़ुदा मिला होता,
उसके सदक़े में दिल-ओ-जाँ रहते।

वक़्त ने सबक़ ना दिए होते,
रोज़ हम देते इम्तिहाँ रहते।

अदू का डर नहीं होता 'गौतम',
हमारे दोस्त राज़-दाँ रहते।

188: भुलाया जाए उसे सोचते रहे, लेकिन

भुलाया जाए उसे सोचते रहे, लेकिन,
दुआ में रब से उसे माँगते रहे, लेकिन।

किसी मुआमले में कुछ नहीं कहा हमने,
अगरचे मुट्ठियों को भींचते रहे, लेकिन।

सहाब[1] के लिए सहरा में इंतिज़ार हुआ,
फ़लक पे वो गरजते-गूँजते रहे, लेकिन।
[1]बादल

लिहाज़-ओ-पास हमें पूछने नहीं देते,
सवाल ज़ेहन में सौ सूझते रहे, लेकिन।

समझ ना पाए कभी पेंचदार बातों को,
पहेलियाँ तमाम बूझते रहे, लेकिन।

शुमार कर नहीं पाए कभी सितारों का,
हिज्र में रातभर हम जागते रहे, लेकिन।

लोग किस सम्त जा रहे उन्हें मालूम नहीं,
वास्ते मंज़िलों के दौड़ते रहे, लेकिन।

किसी के कान तक आवाज़ है नहीं जाती,
वहाँ पे मिल के लोग चीख़ते रहे, लेकिन।

किसी की आँख में आते नहीं आँसू 'गौतम',
सब अपनी आँख रोज़ पोंछते रहे, लेकिन।

189: तजुर्बा लग रहा यह अलहदा है

तजुर्बा लग रहा यह अलहदा है,
बहुत ख़ामोशी से आई सदा है।

जहाँ से देखा है उसने पलटकर,
लगा उस ठौर कोई मय-कदा है।

जिधर से आ रहीं मुझ तक दुआएं,
हमें उस सम्त ही लगता ख़ुदा है।

जगह से ज़्यादा है मतलब सुकूँ से,
बहस क्यों हरम है या बुत-कदा है।

सितमगर कहने से ख़ुश हो रहे हैं,
अगरचे हुस्न में नाज़-ओ-अदा है।

मुसीबत है बला है रोग भी है,
बशर क्यों इश्क़ पर रहता फ़िदा है।

दुआ में माँगते देखा है सब को,
यहाँ ज़रदार[1] भी दिखता गदा[2] है।
*1*धनवान *2*भिखारी

हमें कामिल[3] वही लगता है 'गौतम',
बचाए रखता जो आन-ओ-अदा[4] है।
*3*संपूर्ण *4*सामान और तरीका

190: काम हस्ब-ए-मिज़ाज करते हैं

काम हस्ब-ए-मिज़ाज[1] करते हैं,
कभी हाँ कभी बाज[2] करते हैं।
[1]मन मुताबिक़ [2]ना

जिसमें होता नहीं ख़सारा[3] है,
बस वही काम-काज करते हैं।
[3]हानि

इब्तिदा करते हैं रिवाजों की,
मन के माफिक समाज करते हैं।

हमीं ने मीर कल बनाया था,
हमीं सलाम आज करते हैं।

अपने लोगों में वो शुमार करें,
पेश उनको ख़िराज[4] करते हैं।
[4]उपहार

सबके शानों[5] का सहारा लेकर,
सबसे ऊँची मेराज[6] करते हैं।
[5]कंधा [6]सीढ़ी

इश्क़ के मारे को दुआ देकर,
चारागर फिर इलाज करते हैं।

तल्ख़ लहजे में बात करने पर,
सख़्त वो एहतिजाज[7] करते हैं।
[7]नाराजी

मसअले जो भी ला-ज़रूरी[8] हैं,
ज़ेहन में इंदिराज[9] करते हैं।
[8]अनावश्यक [9]नोट करना

नियाज[10] देते हैं दीवानों को,
बाक़ी को मोहताज करते हैं।
[10]दर्शन

नई तारीख़[11] लिख रहे लम्हे,
शाह को बिला-ताज करते हैं।
[11]इतिहास

लेनदारी का है उसूल यही,
वसूल पहले ब्याज करते हैं।

जिस गली से गुज़र गए जानाँ,

तेज़ वाँ इख़्तिलाज[12] करते हैं।

[12]दिल की धड़कन बढ़ना

खेत की मिट्टी को सज्दा मेरा,
इससे पैदा अनाज करते हैं।

हँस के लेते रहेंगे नज़राना,
मुँह से जो बाज बाज करते हैं।

रखते मीठी ज़बान हैं 'गौतम',
इसलिए दिल पे राज करते हैं।

191: हमको ख़बर नहीं है**,** हम किसको ढूँढते हैं

हमको ख़बर नहीं है, हम किसको ढूँढते हैं,
हम ख़ुद से पूछते हैं, हम किसको ढूँढते हैं।

रुख़्सत के वक़्त दोनो ने अलविदा कहा था,
किस मुँह से कहा जाए हम उसको ढूँढते हैं।

करता है जो हमेशा पस-ए-जहाँ[1] की बातें,
लेने को ख़बर ताज़ा हम उसको ढूँढते हैं।
[1]मृत्य के बाद का संसार

थामे हुए बैठा है अब दस्त को चारागर,
जो नब्ज का पता दे उस नस-को ढूँढते हैं।

मेरा सवाल सुनकर ख़ामोश हो गए सब,
कतरा रहा वो आलिम हम जिसको ढूँढते हैं।

आए ना अयादत को फ़ुर्सत नहीं थी उसको ,
मैय्यत में अब है आना पीनस[2]-को ढूँढते हैं।
[2]पालकी

दामन को मेरे थामा करते थे ख़ार 'गौतम',
आदत पड़ी है ऐसी कैक्टस-को ढूँढते हैं।

192: यार के कूचे के असीर हुए

यार के कूचे के असीर[1] हुए,
शाह भी देखिए फ़क़ीर हुए।
*1*बंदी

यार जितना क़रीब आते गए,
रक़ीब उतने ही कसीर[2] हुए।
*2*ज्यादा *(संख्या में)*

आदतन ख़्वाब देख लेते हैं,
अगरचे सारे बे-ता'बीर हुए।

जिसमें वो आ गए नज़र हमको,
सिर्फ वो लम्हे दिल-पज़ीर[3] हुए।
*3*दिल को आनंद देने वाले

वक़्त की मार ने बे-रंग किया,
गर्द-आलूदा[4] हम तस्वीर हुए।
*4*धूल-धूसरित

सभी की जान पर है आन पड़ी,
बा-अदा जब कभी शरीर[5] हुए।
*5*चंचल/नटखट

उसी में देखा ख़ुदा को 'गौतम',
वक़्त पर आए दस्त-गीर[6] हुए।
*6*सहायक

193: लगा वो वा-ए-ग़फ़लत बे-ज़बाँ था

लगा वो वा-ए-ग़फ़लत[1] बे-ज़बाँ था,
मगर ख़ामोशी में मिस्ल-ए-बयाँ[2] था।
[1]हाय गलती से [2]बयान देने वाला

किसी घर में नहीं चूल्हा जला तो,
उठा आख़िर कहाँ से वह धुआँ था।

समझने के बहाने मसअलों को,
वो उस्तादों का लेता इम्तिहाँ था।

परिंदे लौट आते हैं ज़मीं पर,
नज़र में आसमाँ गो बे-कराँ[3] था।
[3]अंतहीन

समझते सब रहे रंजिश है बाहम[4],
छुपा एक तीसरा भी दरमियाँ था।
[4]पारस्परिक (दो के बीच)

कोई साहिल नहीं मिलता यहाँ क्यों,
सुना दरिया यहाँ पर भी रवाँ[5] था।
[5]बहता

पता मिलता नहीं 'गौतम' किसी से।
हमारा भी शहर में आशियाँ था।

194: सामने आ बैठे वो बे-साख़्ता

सामने आ बैठे वो बे-साख़्ता[1],
देखे दीवाने गए दिल-बाख़्ता[2]।
[1]अचानक [2]भाव शून्य

था नशे में, रिंद को ऐसा लगा,
शेख़ मेरे साथ है रब-याफ़्ता।

उसको ख़ामोशी गवारा है नहीं,
बोलने पर हो रहे अफ़रोख़्ता[3]।
[3]आगबबूला

बारहा फिर से भरोसा कर रहे,
भूल जाते हैं सबक़ आमोख़्ता[4]।
[4]सीखा हुआ

आसमाँ अब है पतंगों से पटा,
शहर में उड़ता नहीं है फ़ाख़्ता[5]।
[5]कबूतर

नाम से उसके मिली पहचान है,
कोई सौदाई[6] नहीं ख़ुद-साख़्ता[7]।
[6]पागल [7]ख़ुद बना हुआ

सोख़्ता[8]-दिल, सोख़्ता-जाँ छोड़िए,
हिज्र में लगती रही शब-सोख़्ता।
[8]सुलगती/सुलगता

उम्र 'गौतम' है यक़ीं कट जाएगी,
देखते रहिए जो है अंदोख़्ता[9]।
[9]जमा हुआ (दिल-दिमाग में)

195: वाक़िआ कोई भी सुनाते हम

वाक़िआ कोई भी सुनाते हम,
बज़्म को बेवजह रुलाते हम।

हाथ से हाथ तो मिलाया है,
दिल मिलाते तो मुस्कुराते हम।

नाम सब ले रहे सितमगर का,
किसलिए ज़ख़्म को छुपाते हम।

वजूद दफ़्न कर दिया होता,
आसमाँ सर पे क्यों उठाते हम।

कोई उम्मीद ही नहीं बाक़ी,
वगरना सबको आज़माते हम।

इश्क़ के क़िस्से हुए बोसीदे,
कौन सी दास्ताँ सुनाते हम।

नींद में दुनिया सो रही 'गौतम',
किसीको किसलिए जगाते हम।

196: तेज़ दरिया में भँवर का डर बना है

तेज़ दरिया में भँवर का डर बना है,
दश्त[1] में अंधे सफ़र का डर बना है।
[1]जंगल

रोज़ लाती है यहाँ बद-रोज़गारी[2],
मेरे भीतर तो शहर का डर बना है।
[2]बेकार का रोज़गार

एक उड़ती सी ख़बर जब से सुनी है,
फैलने का इस ख़बर का डर बना है।

फिर से ज़ेर-ए-बहस हैं मुद्दे पुराने,
फिर तमाशा-ए-दिगर[3] का डर बना है।
[3]दूसरा तमाशा

लौट कर जाना नहीं वापस जहाँ पर,
दिल में पीछे छूटे घर का डर बना है।

अलविदा कहने का है दिल में इरादा
हमको उसके दीदा-तर का डर बना है।

डर इधर का उम्र भर पाला है 'गौतम',
और अब दिल में उधर का डर बना है।

197: अब्र बनता छोड़के सत्ह-ए-समंदर

अब्र बनता छोड़के सत्ह-ए-समंदर,
क़तरा बनते ही बहा सू-ए-समंदर।

ख़ाक-ज़ादे ख़ाक में ही दफ़्न होंगे,
ख़ाक में मिल जाते हैं सारे सिकंदर।

एक ही पत्थर से घर रब के बने हैं,
हरम बोला एक को दूजे को मंदर।

क़द ग़ुरूर-ए-फ़न ने तो ऊँचा किया है,
खोखले होते गए अंदर ही अंदर।

तुम वहम मानो हक़ीक़त तो यही है,
बादशाहों से नहीं कम हैं क़लंदर।

ख़ौफ़ तूफ़ानों से 'गौतम' हो रहा है,
नाख़ुदा भी ढूँढने लगता है बंदर[1]।

[1]बंदरगाह

198: पालते अब कोई ग़ुरूर नहीं

पालते अब कोई ग़ुरूर नहीं,
सिर्फ चेहरा बचा है नूर नहीं।

आई मंज़िल तो समझ में आया,
हम थे मंज़िल से कभी दूर नहीं।

पता हरम का पूछते क्यों हैं,
ख़याल में ख़ुदा ज़ुहूर[1] नहीं।
[1]स्पष्ट

दुआ-सलाम कर नहीं पाए,
सामने आए थे हुज़ूर नहीं।

इश्क़ में यार ने सज़ा दी है,
मान लेते हैं बे-क़ुसूर नहीं।

कोई ख़्वाहिश नहीं करी जाए,
अगर है पास में सुबूर[2] नहीं।
[2]धीरज

ऐसी महफ़िल में क्यों गए 'गौतम',
जहाँ अर्बाब-ए-शुऊर[3] नहीं।
[3]तमीज वाले

199: अज़ल से बह रहा सू-ए-सागर

अज़ल[1] से बह रहा सू-ए-सागर[2],
दरिया को पीता जा रहा सागर।
*1*अनादि काल *2*समुद्र की ओर

प्यास इसकी भी नहीं बुझती है,
कितना बेचैन है जीवन-सागर।

आँख से क़तरा जो टपकता है,
उससे खारा नहीं कोई सागर।

चाँद ने फिर किया उसे माइल[3],
कितना बे-चैन हो गया सागर।
*3*आकृष्ट

डूबने से अगर घबराते हैं,
आप साहिल से देखते सागर।

लेना लोहा पड़ेगा लहरों से,
रास्ता देता नहीं है सागर।

आज साक़ी है मेहरबाँ 'गौतम',
आज साग़र[4] में डुबो दें सागर।
*4*प्याला

200: वो सर-ए-राह पकड़ लेते हैं

वो सर-ए-राह पकड़ लेते हैं,
यार मिलते ही झगड़ लेते हैं।

बात हालात की करते हैं तो,
लोग हत्थे से उखड़ लेते हैं।

रफ़ू करते नहीं हैं ज़ख़्मों को,
हम भी स्वेटर से उधड़ लेते हैं।

हाथ मलने की है आदत मेरी,
ठंड में हाथ रगड़ लेते हैं।

साथ चलना उसे गवारा नहीं,
हम भी धीरे से पिछड़ लेते हैं।

बाहमी[1] हो नहीं समझदारी,
रिश्ते बनते ही बिगड़ लेते हैं।
[1]आपसी

अज़ीज़ लगता है अदू हमको,
उसको बाहों में जकड़ लेते हैं।

आस्ताँ ऊँची इमारत का हो,
जबीं को लोग रगड़ लेते हैं।

लाख आज़ाद सोच रखते हों,
मसअले रोज़ जकड़ लेते हैं।

ज़ेहन काबू में नहीं रहता है,
ख़याल उमड़-घुमड़ लेते हैं।

आप तूफ़ान देखकर 'गौतम',
क्यों शजर[2] जैसे अकड़ लेते हैं।
[2]पेड़

201: इल्म-ओ-सलाहियत से लिखी जाती है तारीख़

इल्म-ओ-सलाहियत[1] से लिखी जाती है तारीख़[2],
होती है फ़ख़्र-ओ-नाज़ की बाइस यही तारीख़।
[1]ज्ञान और सामर्थ्य [2]इतिहास

तैयार हैं लिखने के लिए आलिम-ओ-फ़ाज़िल,
लिखने को चाहते हैं पर तारीख़-दर-तारीख़[3]।
[3]एक के बाद एक तिथि

जो है मिली तारीख़ वो गर ना-पसंद है,
इसको तो मेट सकती है केवल नई तारीख़।

इंसाफ़-तलब चाहता है फ़ौरी फ़ैसला,
अफ़सोस उसे मिल रही तारीख़-दर-तारीख़।

है मुस्तक़बिल[4] आप के दो हाथ में लेकिन,
ये मुस्तक़बिल एक दिन बन जाएगा तारीख़।
[4]भविष्य

गर ठोस हो बुनियाद तो टिकती है इमारत,
देती यही इंसान को बेहतर सबक़ तारीख़।

मैं ना-समझ हूँ पर मेरा ख़याल है 'गौतम',
काग़ज़ क़लम सियाही से बनती नहीं तारीख़।

202: वह किसको ढूँढते हुए ख़ुद लापता हुआ

वह किसको ढूँढते हुए ख़ुद लापता हुआ,
निकला था पूछने पता ख़ुद बे-पता हुआ।

फिर आज गिरफ़्तार हो गया तमाशबीन,
मौक़े से खिसकने का मौक़ा भाँपता हुआ।

सबको शिकायतों का था मौक़ा दिया गया,
वो भी खड़ा हुआ था मगर काँपता हुआ।

इल्ज़ाम उसी पर है लगा आगज़नी का,
पकड़ा गया है वह अलाव तापता हुआ।

सब लोग उसे बावला कहते हैं शहर में,
मिलता है वो ढपली पे कुछ अलापता हुआ।

रहज़न भी उसे छोड़कर बढ़ जायेंगे आगे,
घुटनों से अपना पेट मिला ढाँपता हुआ।

वो साथ लेके कुछ भी किसी का नहीं गया,
निकला है ख़ाक को वो जिस्म सौंपता हुआ।

मालूम नहीं कितनी दूर वो गया 'गौतम',
वो हर क़दम उठा रहा था नापता हुआ।

203: मैं बे-ख़याल हो नहीं पाया

मैं बे-ख़याल हो नहीं पाया,
मैं बे-सवाल हो नहीं पाया।

चश्म बे-ख़्वाब हो नहीं पाए,
मगर विसाल हो नहीं पाया।

क़दम उठाए नहीं उठते हैं,
सफ़र मआल[1] हो नहीं पाया।
[1]अंत

कोई उम्मीद थी नहीं उससे,
हमें मलाल हो नहीं पाया।

साथ बैठे हैं कई बार मगर,
अर्ज़-ए-हाल हो नहीं पाया।

छेद सौ हो गए सफ़ीने में,
ग़र्क़ फ़िलहाल हो नहीं पाया।

राब्ता एक बार टूटा तो,
कभी बहाल हो नहीं पाया।

तब्सिरा[2] हमने भी किया लेकिन,
हस्ब-ए-हाल[3] हो नहीं पाया।
[2]समालोचना [3]स्थिति के अनुसार

क़ाबिल-ए-दाद क़सीदा-ख़्वानी[4],
यही कमाल हो नहीं पाया।
[4]किसी की स्तुति

हाल बेहतर नहीं हुआ 'गौतम',
और बद-हाल हो नहीं पाया।

204: बात करता नहीं कोई तो परेशानी है

बात करता नहीं कोई तो परेशानी है,
जवाब दे नहीं कोई तो पशेमानी[1] है।
[1]पछतावा

उँगलियाँ बोल रहीं देखिए मोबाइल पर,
बात कोई भी नहीं होती मुँह-ज़बानी है।

वीडियो चैट से विसाल हो रहा है अब,
अब तो क़ासिद[2] ही बना बाइस-ए-हैरानी है।
[2]पत्रवाहक

नुस्ख़े बीमार को अब भेजना रिवायत है,
घर कोई आए अयादत को मेहरबानी है।

रोज़ी-रोटी के लिए घर से नहीं जाना है,
कौन मानेगा नहीं ज़िंदगी सुल्तानी है।

आटा महँगा सही पर डाटा हुआ सस्ता है,
लोग ख़ुशहाल हैं जीने में सब आसानी है।

दुनिया आभासी ही लगने लगी असली 'गौतम',
असली दुनिया को लोग मान रहे फ़ानी है।

205: आजकल घर से कम निकलते हैं

आजकल घर से कम निकलते हैं,
ख़याल-ओ-ख़्वावों में टहलते हैं।

अब तो पत्थर से हो गए हैं हम,
बड़ी मुश्किल से हिलते-डुलते हैं।

कुछ परेशानी आपको भी है,
आइए ख़्वाह-मख़ाह उबलते हैं।

ध्यान से वो नहीं गिला सुनते,
यही अंदाज़ बहुत ख़लते हैं।

सहर में हम भी बुझा देते हैं,
चिराग़ रात में जो जलते हैं।

चश्म से हमको भी शिकायत है,
अनेकों ख़्वाब इनमें पलते हैं।

वक़्त पर कुछ किया नहीं 'गौतम',
बाद में हम भी हाथ मलते हैं।

206: घेर कर बैठ गए फिर साए

घेर कर बैठ गए फिर साए,
ऐसी तन्हाई से हैं पछताए।

बाँह फैलाए हुए मिलने था,
यार आए हैं हाथ फैलाए।

मुद्दे सुलझाने साथ बैठे थे,
मुद्दे क्यों और गए उलझाए।

पास में आईना हमारे है,
हुज़ूर को ये कौन दिखलाए।

शुक्रिया वक़्त का, ज़माने का,
अहद फिर एक बार दोहराए।

अब इन्हें बदलना ही बेहतर है,
फूल गुल-दान में हैं मुरझाए।

नहीं आसाँ था काम ये करना,
गली से यार की निकल आए।

एक मुद्दत हुई हमें 'गौतम',
आपके सामने कुछ फ़रमाए।

207: साथ बैठे मेरे हम-दोश रहे

साथ बैठे मेरे हम-दोश[1] रहे,
ज़बाँ-दराज़[2] थे ख़ामोश रहे।
[1]कन्धा मिलाये [2]बहुत बोलने वाला

तक़ाज़ा शोख़ नज़र का ये है,
तमाम उम्र हम मद-होश रहे।

मुरीद हम थे होश-मंदों के,
काम पर करते तही-होश[3] रहे।
[3]अकारण/बिना विवेक

दिल के बदले में दिल नहीं माँगा,
सर-ए-सौदा[4] थे ख़ुद-फ़रोश[5] रहे।
[4]जुनूनी [5]बेवकूफ

रास्ता अपने घर का याद नहीं,
इश्क़ में इतने फ़रामोश[6] रहे।
[6]भुलक्कड़

मिज़ाज़ से हैं ग़ाफ़िलान-ए-जहाँ[7],
नज़र में ख़्वाब-ए-ख़रगोश[8] रहे।
[7]दुनिया *(यथार्थ)* से अनजान [8]हवाई किला

अदू-ओ-दोस्त साथ हैं 'गौतम',
कहाँ कहाँ पे चश्म-ओ-गोश[9] रहे।
[9]आँख और कान

208: आते जाते यूँही सलाम कहें

आते जाते यूँही सलाम कहें,
उसी के नाम से कलाम कहें।

कुछ इशारे तो मिलें आँखों से,
उसी को हुस्न-ए-पयाम[1] कहें।
[1]सन्देश देने की खूबसूरती

छोड़िए दिल को जान भी देंगे,
आपके आएगा किस काम कहें।

क्या कहें लोग कुछ भी कहते हैं,
हमें भी आपका ग़ुलाम कहें।

आपके साथ जो नहीं गुज़री,
उसे क्यों हम नहीं आलाम[2] कहें।
[2]दुर्घटना

हम सफ़र करते आए बे-मंज़िल,
चलेंगे साथ में दो गाम कहें।

किसलिए एतराज हो 'गौतम',
आप दीवाना सर-ए-आम कहें।

209: एक जैसे हैं वक़्त-ओ-दरिया

एक जैसे हैं वक़्त-ओ-दरिया,
नहीं ठहरते वक़्त-ओ-दरिया।

बहा के साथ लिए जाते हैं,
कभी डुबोते वक़्त-ओ-दरिया।

हैसियत का ख़याल करते नहीं,
रहे बेदर्द वक़्त-ओ-दरिया।

दफ़्न-ओ-ग़र्क वही होता है,
रोकता है जो वक़्त-ओ-दरिया।

पलट के देखते नहीं कुछ भी,
हैं बे-नियाज़[1] वक़्त-ओ-दरिया।
[1]निस्पृह

आदमी बे-ख़रोश[2] होता है,
हैं बा-ख़रोश[3] वक़्त-ओ-दरिया।
[2]उत्साह रहित [3]उत्साहित

अपनी ताकत दिखाता रहता है,
वक्त-बेवक्त वक़्त-ओ-दरिया।

अज़ल[4] से सफ़र में रहे 'गौतम',
तेज़ रफ़्तार वक़्त-ओ-दरिया।
[4]अनादि काल से

210: रात भर लोग सो नहीं पाते

रात भर लोग सो नहीं पाते,
वो बे-ख़याल हो नहीं पाते।

इश्क़ बंदो से जो नहीं करते,
कभी अल्लाह को नहीं पाते।

यार से लाख हो नाराज़ी मगर,
अदू तो यार हो नहीं पाते।

मौत को भेजते पैग़ाम हैं वो,
ज़िंदगी को जो ढो नहीं पाते।

रब की मर्ज़ी अगर नहीं होती,
मिला जो हमको वो नहीं पाते।

ख़याल उनका भी ज़रूरी है।
अपने हिस्से का जो नहीं पाते।

फ़क़ीर देते हैं दुआ सबको,
सबसे ख़ैरात गो[1] नहीं पाते।
[1]यद्यपि

दुआएं साथ चल रही हों तो,
राह में राही खो नहीं पाते।

इसे तौहीन-ए-इश्क़[2] मानेंगे,
उसके दीवाने रो नहीं पाते।
[2]निरादर प्यार का

मैंने दामन तो धो लिया 'गौतम',
गुनाह दिल से धो नहीं पाते।

211: अक़्ल का बोझ क्यों उठाते हैं

अक़्ल का बोझ क्यों उठाते हैं,
अपना सर-दर्द क्यों बढ़ाते हैं।

नहीं आने का मशवरा देकर,
बारहा हमको क्यों बुलाते हैं।

हिज्र में नींद अगर आ जाए,
ख़्वाब में आके क्यों जगाते हैं।

क्या मैं पहले से शर्मसार नहीं,
वो रक़ीबों से क्यों मिलाते हैं।

अश्क गर पोंछना नहीं है तो,
छेड़कर आप क्यों रुलाते हैं।

बख़ूबी जानते उसे हम हैं,
बे-वजह बात क्यों बनाते हैं।

बज़्म में साथ बिठाकर 'गौतम',
मेरा क़िस्सा ही क्यों सुनाते हैं।

212: ज़बाँ पे लुत्फ़-ए-तहज़ीब ज़रूरी है, मगर

ज़बाँ पे लुत्फ़-ए-तहज़ीब[1] ज़रूरी है, मगर,
हो ख़ाकसार[2] ख़ुश-नसीब ज़रूरी है, मगर।
*1*सुसंस्कृत भाषा *2*विनम्र

होश के साथ ही बुनियाद को ता'मीर करें,
करना बेहोशी को तख़रीब[2] ज़रूरी है, मगर।
*2*दूर करना *(*नष्ट करना*)*

बात अच्छी भी बा-शु'ऊर कहें महफ़िल में,
पेश करना भी बा-तरतीब[3] ज़रूरी है, मगर।
*3*ढंग से

मिलते रहने से ये मुमकिन है काम हो जाए,
रोज़ के रोज़ कुछ तक़रीब[4] ज़रूरी है, मगर।
*4*अवसर

सबको रोटी की नहीं रोज़ी की ज़रूरत है,
कुछ इसके वास्ते तरक़ीब ज़रूरी है, मगर।

हमको अंदाज़-ए-नासेह से यह सीख मिली,
साथ में डर के कुछ तर्ग़ीब[5] ज़रूरी है, मगर।
*5*प्रलोभन

मिले तो होंगे सबक़ उनकी पुख़्तगी[6] के लिए,
बारहा ज़िक्र-ए-तश्बीब[7] ज़रूरी है, मगर।
*6*मजबूत/दृढ़ करना *7*युवा काल के अनुभवों का बखान

हर हक़ीक़त के साथ हम भी खड़े हैं 'गौतम',
पहले हर झूठ की तकज़ीब[8] ज़रूरी है, मगर।
*8*खंडन

213: लफ़्ज़-ए-इश्क़ में कुल ढाई हर्फ़

लफ़्ज़-ए-इश्क़ में कुल ढाई[1] हर्फ़,
पर म'आनी से लबालब है ज़र्फ़[2]।
[1]दो+आधा [2]पात्र

बात जब दो जहाँ की चलती है,
बशर को देखा गया है बरतर्फ़[3]।
[3]अधर में

जम गई है जो बीच रिश्तों के,
कोई क्यों तोड़ता नहीं है बर्फ़।

वक़्त-ए-कूच हाथ खाली थे,
दुनियादारी में हो गए थे सर्फ़[4]।
[4]व्यय (चुकना)

पूछते हैं पहुँच के मंज़िल पर,
कोई बतलाए जायेंगे किस तर्फ़[5]।
[5]ओर

इश्क़ बंदों से या ख़ुदा से करें,
जवाब देते नहीं आला-ज़र्फ़[6]।
[6]बड़े लोग

बात समझा नहीं पाया 'गौतम',
क़द में छोटे नहीं होते कम-ज़र्फ़[7]।
[7]कम गहरे (उथले)

214: ख़ुश्क सहरा सही सराब तो हो

ख़ुश्क सहरा सही सराब तो हो,
प्यास का बैठकर हिसाब तो हो।

साथ जो बैठे यार हो या अदू,
वह हमारी तरह ख़राब तो हो।

मेरी आँखों ने की शिकायत है,
हमारे पास एक ख़्वाब तो हो।

मैं लिए बैठा हूँ सवाल कई,
किसी सवाल का जवाब तो हो।

हम भी दीदार की ख़्वाहिश रखते,
वो किसी रोज़ बे-नक़ाब तो हो।

मेरा साग़र रहे खाली चाहे,
पास में साक़ी के शराब तो हो।

हमने माना है भीड़ तारों की,
बात करने को माहताब तो हो।

वही हबीब[1] लगेगा 'गौतम',
पास में थोड़ा इज़्तिराब[2] तो हो।

[1]दोस्त [2]बेचैनी

215: नाशाद हम नहीं हैं और शाद भी नहीं

नाशाद हम नहीं हैं और शाद भी नहीं,
बरबाद भी नहीं और आबाद भी नहीं।

हैरान करने वाले हैं हम ऐसे परिन्दे,
जो दाम[1] में नहीं और आज़ाद भी नहीं।
[1]फंदा

मैं रखता हूँ ज़बान मगर बोलता नहीं,
होठों पे मेरे चस्पाँ है फ़रियाद भी नहीं।

कुछ धुंधले-से साए मुझे घेरे तो हुए हैं,
किससे था कैसा राब्ता ये याद भी नहीं।

मैं आदतन केवल रहा पाबंद-ए-सज्दा,
मैं ख़ैर[2] माँगता नहीं इमदाद[3] भी नहीं।
[2]कृपा [3]मदद

दीवार भी है लापता छत भी है लापता,
लगता है मैंने डाली थी बुनियाद भी नहीं।

करने के लिए इश्क़ तो कुछ बुत बना दिए,
की दर्द-ए-दिल की दवा ईजाद[4] भी नहीं।
[4]खोजना

रब का हज़ार बार शुक्रिया कहो 'गौतम',
कोई कमी नहीं की और ईज़ाद[5] भी नहीं।
[5]बहुतायत

216: हम खींच नहीं पाते हैं पानी पे लकीरें

हम खींच नहीं पाते हैं पानी पे लकीरें,
पानी ही खींचता रहा पत्थर पे लकीरें।

करता बिना सियाही के है काम देखिए,
जिसने बनाई बशर की जबीं पे लकीरें।

हम ग़ौर से आईना देखने में रह गए,
और वक़्त बनाता रहा चेहरे पे लकीरें।

पानी हवा परिंदे मानते नहीं इनको,
क्यों लोगों ने बनाई हैं ज़मीं पे लकीरें।

कुछ लोग बेतरतीब लकीरें मिटा रहे,
कुछ लोग बनाते रहे याँ वाँ पे लकीरें।

कब तक तमाशा देखेंगे चुपचाप बैठकर,
पड़नी तो कभी चाहिए माथे पे लकीरें।

गहरी लकीर कल बना सकते हैं ये बच्चे,
इनको बनाने दीजिए हर शै[1] पे लकीरें।
[1]वस्तु/चीज

तस्वीर कल की आपसे कैसी बनी 'गौतम',
शिद्दत[2] से खींचते रहे काग़ज़ पे लकीरें।
[2]मनोयोग

217: इन परिन्दों से रश्क होता है

इन परिन्दों से रश्क होता है,
देखकर ग़म-ओ-रश्क होता है।

अच्छा है होते बे-नक़ाब नहीं,
माह[1] भी माह-रश्क[2] होता है।
[1]चाँद [2]चाँद से जलन

कभी सैलाब है लाता दरिया,
कभी कभी ये ख़ुश्क होता है।

रहते बे-फ़िक्र हैं दीवाने सब,
पास बस आह-ओ-अश्क होता है।

संग-दिल देखे हमने कतराते,
चश्म जब जोश-ए-अश्क[3] होता है।
[3]आंसुओं का प्रवाह

तिश्ना-लब आए किसलिए सहरा,
यहाँ मौसम तो ख़ुश्क होता है।

ऐसे देखें न हमारी जानिब,
गला हमारा ख़ुश्क होता है।

नहीं छुपता है छुपाए 'गौतम',
इश्क़ तो मिस्ल-ए-मुश्क[4] होता है।
[4]कस्तूरी के सामान *(मृग की नाभि में छुपी)*

218: किसे छोड़ें किसे तलाश करें

किसे छोड़ें किसे तलाश करें,
कौन सा राज़ पर्दा फ़ाश करें।

एक क़दील वहाँ लेते चलें,
सिर्फ जुगनू जहाँ प्रकाश करें।

पता ख़ुदा का ढूँढने वाले,
रूह को महव-ए-तलाश[1] करें।
[1]खोज में डूबना

आईना सिर्फ सच दिखाता है,
आईने को न पाश-पाश[2] करें।
[2]चकनाचूर

सब तरफ रंग दिखाई देंगे,
आप दिल मिस्ल-ए-पलाश[3] करें।
[3]पलाश के फूल जैसा

याँ रिवायत है दफ़्न करने की,
आप ख़ुद को ना ज़िंदा लाश करें।

हौसला सितमगर का बढ़ता है,
हौसला अपना तो शाबाश करें।

बारहा आएगा मिलने 'गौतम',
हुज़ूर ख़ुद को यार-बाश[4] करें।
[4]सामजिक *(मिलनसार)*

219: सिर्फ गाते हैं राग दरबारी

सिर्फ गाते हैं राग दरबारी,
दूसरे रागों की आए बारी।

बात फिर दूर तलक जाएगी,
इसे बनाया जाए अख़बारी।

कभी फ़ुर्सत से मिल नहीं पाते,
अज़ीज़ सारे हैं कारोबारी।

नाम लेते नहीं मगर दिल में,
रही उम्मीद-ए-फ़ैज़-ए-बारी[1]।
[1]ईश्वर की कृपा की आशा

वक़्त ने हमको हराया हँसकर,
हमने हँसते हुए बाज़ी हारी।

मलक[2] के पास है हिसाब मेरा,
काम आएगी नहीं हुश्यारी।
[2]मृत्यु के बाद हिसाब करने वाला देवता (चित्रगुप्त)

खड़ा है सफ़ में देर से गौतम',
अभी आई नहीं उसकी बारी।

220: सुना वो ख़ुश मेरे बग़ैर रहे

सुना वो ख़ुश मेरे बग़ैर रहे,
दुआ करेंगे रब की ख़ैर रहे।

नहीं रहे कभी ये दिल खाली,
नहीं अपने तो ग़म-ए-ग़ैर रहे।

सोचता क्या है वो ख़ुदा जाने,
ज़बाँ पे सिर्फ हर्फ़-ए-ग़ैर रहे।

सफ़र में हमसफ़र रहे कोई,
बना उसी से रब्त-ए-ख़ैर रहे।

ज़िंदगी तो अजीब दरिया है,
उसी में डूबे जिसमें तैर रहे।

ख़याल दिल में एक ही आया,
नज़र में हरम चाहे दैर रहे।

दोस्ती हो न हो रक़ीबों से,
नहीं किसी के साथ बैर रहे।

याद आती है ख़ुदा की 'गौतम',
किसी दो-राहे पे जब पैर रहे।

221: जुनूँ है कोई या ख़ुमार में हूँ

जुनूँ है कोई या ख़ुमार में हूँ,
बे-वजह आज इंतिज़ार में हूँ।

रास्ता लिपटा रहा पैरों से,
न मैं पैदल में न सवार में हूँ।

एक तस्वीर नहीं पास मेरे,
मानता कोई नहीं प्यार मैं हूँ।

चुक गए क़र्ज़ को चुकाने में,
जी रहा आज भी उधार में हूँ।

इसलिए लोग याद करते हैं,
नाम है फ़र्द[1] गुनहगार में हूँ।
[1]रजिस्टर में दर्ज

वक़्त से पहुँचना ज़रूरी है,
इसीलिए तेज़-रफ़्तार में हूँ।

भीड़ की शक़्ल नहीं होती है,
कौन पहचाने बेशुमार में हूँ।

पता हमारा पूछते हैं जो,
उन्हे बताना दरकिनार में हूँ।

आरज़ू और क्या करे 'गौतम',
यही बहुत है गर शुमार में हूँ।

222: दफ़्न इस मिट्टी के अंदर होते

दफ़्न इस मिट्टी के अंदर होते,
हम क़लंदर[1] या सिकंदर होते।
[1]वीतरागी

फ़सील[2] ऊँची ठीक है लेकिन,
आने-जाने को इसमें दर होते।
[2]परकोटा

यही निज़ाम-ए-साक़ी[3] है तो,
शेख़ मयख़ाने के सदर[4] होते।
[3]सकी का इंतजाम [4]प्रमुख

ग़र्क़ दरिया में भी हो सकते हैं,
हबाब-ए-सत्ह-ए-समंदर[5] होते।
[5]समुन्दर की सतह के बुलबुले

ख़याल ऐसा भी बुरा क्या है,
हरम[6] के साथ ही मंदर[7] होते।
[6]मस्जिद [7]मंदिर

हम भी अब चुप लगाए बैठे हैं,
वगरना हम शहर-बदर[8] होते।
[8]शहर से निकाले गए

हाँ में हाँ तुम भी मिलाते 'गौतम',
करीब दिल के किस क़दर होते।

223: जो जान के ख़ामोश रहे बारगाह में

जो जान के ख़ामोश रहे बारगाह[1] में,
ऐसे तमाशबीन हैं शामिल गुनाह में।
[1]अदालत (इंसाफ का मंदिर)

देखा गया है लोगों की ये आम राय है,
सरदर्द लिया जाए नहीं ख़्वाह-मख़ाह[2] में।
[2]बेकार में

हँस हँस के सुनाते हैं मुझे मेरी दास्तान,
डर है न जाए जान मेरी इस मिज़ाह[3] में।
[3]हास्य

दुश्वार हो रहा है कू-ए-यार का सफ़र,
कुछ लोग बैठ जाते हैं धरने पे राह में।

कुछ था नहीं तो जी तो रहे थे सुकून से,
रहते हैं परेशान आजकल रिफ़ाह[4] में।
[4]आराम के लिए किए जाने वाले काम

उम्मीद है दीवानों को आयेंगे वो मिलने,
हालात लाए जायें गर उसकी निगाह में।

साक़ी की बेरुख़ी की बदौलत सुना 'गौतम',
मयख़ाने से सब रिंद गए ख़ानक़ाह[5] में।
[5]आश्रम

224: यूँ अयादत करी नहीं जाती

यूँ अयादत[1] करी नहीं जाती,
यूँ क़यादत[2] करी नहीं जाती।
[1]हाल चाल लेना [2]लीडरी

सज्दे में हो ख़याल-ए-जानाँ,
यूँ इबादत करी नहीं जाती।

दुआ देने में फ़र्क़ करते हो,
यूँ स'आदत[3] करी नहीं जाती।
[3]नेक काम

बिना देखे बिना सोचे-समझे,
पैदा जौदत[4] करी नहीं जाती।
[4]विवेक

सिर्फ दौलत की नुमाइश के लिए,
मुसाइदत[5] करी नहीं जाती।
[5]मदद

रिवायतों को याद रखते हुए,
कोई जिद्दत[6] करी नहीं जाती।
[6]नया काम

इश्क़ मे सिर तो झुकाते 'गौतम',
यूँ शहादत[7] करी नहीं जाती।
[7]जान देना

225: दफ़अ'तन सामने आ जाए, काश ऐसा हो

दफ़अ'तन[1] सामने आ जाए, काश ऐसा हो,
बात बिगड़ी हुई बन जाए, काश ऐसा हो।
[1]अचानक

देखकर हमको जो मुँह फेर लिया करता है,
देखकर हमको मुस्कुराए, काश ऐसा हो।

चले तो आए हैं महफ़िल से उसके कहने पर,
अब हमें पीछे से बुलाए, काश ऐसा हो।

हम ग़म-ए-हिज्र के मारे नहीं सो पाते हैं,
आज की रात नींद आए, काश ऐसा हो।

उसके दीदार की हसरत कभी गई ही नहीं
नक़ाब रुख़ से वो सरकाए, काश ऐसा हो।

छोड़कर बीच राह में जो हमें लौट गया,
वही फिर रास्ता दिखाए, काश ऐसा हो।

अहद[2] लिया था मेरे साथ जो उसने 'गौतम',
उसे वो बारहा दोहराए, काश ऐसा हो।
[2]वचन

226: कहीं शजर कहीं सब्ज़ा भी नहीं

कहीं शजर[1] कहीं सब्ज़ा[2] भी नहीं,
ता-नज़र[3] रंग-ए-सब्ज़ा[4] भी नहीं।
[1]पेड़ [2]घास [3]जहाँ तक दृष्टि जाए [4]हरा रंग (घास का रंग)

ख़िज़ाँ की हर तरफ़ हुकूमत है,
कहीं आगाज़-ए-सब्ज़ा[5] भी नहीं।
[5]घास उगने का प्रारम्भ

गोशे[6] गोशे में लोग ठहरे मिले,
मेरे घर पर मेरा कब्ज़ा भी नहीं।
[6]कोना

ख़राब-ओ-खस्ता हाल बैठे हैं,
कलेजा तो कोई लर्ज़ा भी नहीं।

तेज़ दरिया के साथ बहना है,
किसी किनारे पे कब्ज़ा भी नहीं।

बे-ख़ता मानता नहीं मुंसिफ़,
और देता हमें सज़ा भी नहीं।

साक़ी साग़र नहीं भरता मेरा,
मेरे लिए रूह-अफ़्ज़ा भी नहीं।

दाँव हम पर नहीं लगाया गया,
कभी रहा चलता-पुर्ज़ा भी नहीं।

नहीं भरोसा अब तेरा 'गौतम',
तुझे देगा कोई क़र्ज़ा भी नहीं।

227: बढ़ कर अग़्यार से भी हाथ मिला लेते हैं

बढ़ कर अग़्यार[1] से भी हाथ मिला लेते हैं,
माँग कर हम नहीं यारी में सिला लेते हैं।
[1]अजनबी

हुज़ूर ख़ुद से ख़फ़ा लग रहे हैं आज हमें,
कितनी संजीदगी से क़स्द-ए-गिला[2] लेते हैं।
[2]शिकायत का आभास

है एहतियात ज़रूरी मगर यह तो हद है,
लोग अब रेंग कर घुटनों को छिला लेते हैं।

नक़्शा नासेह ने खींचा है ऐसा जन्नत का,
रिंद अब जाम में ख़ुद ज़हर मिला लेते हैं।

हद्द से ज़्यादा बदन टूटने लगता है जब,
ग़रीब दवा समझकर पी-पिला लेते हैं।

जहाँ ख़ामोशी को आदाब कहा जाता है,
चुप लगाते तो हैं मगर तिलमिला लेते हैं।

ये हुनर सीखने की चीज़ लग रही 'गौतम',
रोना आने पे किस तरह खिलखिला लेते हैं।

228: किसी से हो रहा संवाद नहीं

किसी से हो रहा संवाद नहीं,
इसलिए हो रहा विवाद नहीं।

लिहाज़ कर रहे सितमगर का,
ज़ख़्म कोई किया रूदाद[1] नहीं।
[1]हिसाब/नोट करना

क़फ़स[2] से इश्क़ जिसे हो जाए,
वो परिंदा रहा आज़ाद नहीं।
[2]पिंजरा

कलाम रहते हैं बे-दाद[3] मेरे,
मिले हमें कभी उस्ताद नहीं।
[3]अप्रशंसित

पुर्सिश-ए-ग़म नहीं किया जाता,
बचा है हुस्न-ए-ए'तिक़ाद[4] नहीं।
[4]शिष्टाचार

एक मुद्दत से कोई आया नहीं,
अब अज़ीज़ों के नाम याद नहीं।

आख़िरी वक़्त आ गया 'गौतम',
मगर हुए हो बे-मुराद नहीं।

229: ज़रूरी काम है तो ढंग से किया जाए

ज़रूरी काम है तो ढंग से किया जाए,
आया फागुन है तो उमंग से किया जाए।

काम कल का बचा हुआ है तो कल कर लेंगे,
काम कल कैसे बचा आज हल किया जाए।

सिलसिलेवार काम करना ही बेहतर होगा,
बहस के पहले कुछ आराम कर लिया जाए।

हड़बड़ाहट में किया काम बिगड़ जाता है,
पहले तफ़तीश को रूदाद[1] कर लिया जाए।
[1]नोट करना

ठोस बुनियाद ज़रूरी है बुलंदी के लिए,
आइए नक़्शा इक तामीर[2] कर लिया जाए।
[2]बनाना

काम गर होगा नहीं कैसे वक़्त गुज़रेगा,
किसलिए आज सारा काम कर लिया जाए।

सुना है खाली बैठे लोगों को यह कहते हुए,
आओ दामन को फाड़ फाड़ कर सिया जाए।

अच्छा होता नहीं बातों को खींचना 'गौतम',
किसी भी बात पर सर-दर्द ना लिया जाए।

230: ज़िंदगी में कोई रफ़्तार नहीं

ज़िंदगी में कोई रफ़्तार नहीं,
आज मैं घोड़े पे सवार नहीं।

म्यान से किसलिए निकालेंगे,
रही शमशीर पानीदार नहीं।

उतरता ख़ून नहीं आँखों में,
तुमसे हो पाएगा शिकार नहीं।

आप भी थे तमाशबीन अगर,
कहेंगे कैसे गुनहगार नहीं।

कितने मसरूफ़ वो रहे होंगे,
किया है काम बस विचार नहीं।

वक़्त से वक़्त माँगने वालों,
वक़्त है छोड़ता उधार नहीं।

गुफ़्तगू हो नहीं पाई 'गौतम',
बहस को था कोई तैयार नहीं।

231: आज दिल में रहा हंगामा बपा

आज दिल में रहा हंगामा बपा[1],
आज फिर देखिए ग़रीब नपा।
[1]होना

अब्र[2] की बात क्यों करी उससे,
ख़फ़ा है वुसअत-ए-सहरा-ए-तपा[3]।
[2]बादल [3]फैला हुआ रेगिस्तान

थक के बैठे हैं मगर चल देंगे,
प्यार से पीठ तो कभी थपथपा।

बहार ने था बुलाया सबको,
आप बैठे रहे ज़ंजीर-बपा[4]।
[4]पाँव में बेड़ियाँ लिए

कारवाँ वो नहीं सजायेंगे,
ख़्वाब में सैर कर रहे पसपा[5]।
[5]हरा हुआ

तमाशबीन चले आयेंगे,
जहाँ हो एक फ़ित्ना-ए-बरपा[6]।
[6]दुर्घटना/हादसा

हुआ दो-चार किसी उलझन से,
आज फिर रब का उसने नाम जपा।

नामवर उसको लोग मानेंगे,
नाम अख़बार में जिसका है छपा।

ख़ुदा की गर यही ख़ुदाई है,
इसी में जान को हम देंगे खपा।

बात रोटी की क्यों करी 'गौतम',
ज़बान लोग अब रहे लपलपा।

232: वक़्त का काम है गुज़र जाना

वक़्त का काम है गुज़र जाना,
वक़्त से सीख के संवर जाना।

ज़र्द पत्तों से सीख लेना है,
टूटकर शजर से बिखर जाना।

घर में आराम है बहुत लेकिन,
छोड़कर घर को है मगर जाना।

बात सुनने में अच्छी लगती है,
रोते आए थे बे-फ़िकर जाना।

जिसे मालूम हो बताए वो,
कहाँ से आए थे किधर जाना।

किसी के हाथ की है कठपुतली,
ये बहुत देर से बशर जाना।

इश्क़ का पहला मरहला है ये,
हाथ से जान-ओ-जिगर जाना।

घर भी है हरम भी मयख़ाना भी,
कू-ए-जानाँ से है किधर जाना।

शोर की है यही नीयत 'गौतम'
किया आदी तो है असर जाना।

233: एक जुगनू भी अंधेरे में नहीं हादी है

एक जुगनू भी अंधेरे में नहीं हादी[1] है,
ऐसे हालात का इंसान हुआ आदी है।
[1]मार्ग दर्शक

रौशनी डालता नहीं कभी हक़ीक़त पे,
जब्र-ए-ज़ुल्मत-ए-हयात[2] ही फ़सादी है।
[2]जीवन की काली रात का प्रकोप

जिसे तकलीफ़ नहीं मंज़र-ए-बर्बादी से,
वो क़यादत[3] ही जिम्मेदार-ए-बर्बादी है।
[3]नेतृत्व

मुद्दा संजीदा पेश हो रहा है ज़ेर-ए-बहस,
कौन समझाए उसे मीर कम-सवादी[4] है।
[4]अल्प शिक्षित

रिंद घबराते हैं नासेह बोलता है जब,
बात नासेह की लगती तो सीधी-सादी है।

लोग कहते हैं इस शहर की हवा अच्छी थी,
बिगड़े हालात की वज्ह फ़ैज़-ए-आबादी[5] है।
[5]बढ़ती आबादी

घुमा-फिरा के क्यों जवाब दे रहे 'गौतम',
सवाल सामने जो आया है बुनियादी है।

234: अब देखकर आईने को करता हूँ इत्मीनान

अब देखकर आईने को करता हूँ इत्मीनान,
मैं भी हूँ सलामत है सलामत मेरी पहचान।

घर अपना बनाया था बहुत सोच समझकर,
अब कोने में हम रहते हैं बाक़ी में है सामान।

मौक़ा नहीं मिलता कि हो मेहमान-नवाज़ी,
कुछ फ़ाख़्ते आकर हैं किए जा रहे एहसान।

कुछ साये जब तन्हाई में होते हैं नुमूदार,
हम अपनी याददाश्त से हैं माँगते बयान।

ना दैर से उलझन कोई ना कोई हरम से,
घर हमने तो बनाया है दोनों के दरमियान।

हो लाख मुख़ालिफ़ हवा मौसम रहे ख़िलाफ़,
उड़ने को बुलाता है दरीचे से आसमान।

आवाज़ कोई कानों तक आती नहीं 'गौतम',
सन्नाटे ही अब लेते हैं कानों का इम्तिहान।

235: नाराज़ है तो क्या हुआ, आदाब-'अर्ज़ कर

नाराज़ है तो क्या हुआ, आदाब-'अर्ज़ कर,
तन्नाज़[1] है तो क्या हुआ, आदाब-'अर्ज़ कर।
[1]शरारत

क्यों सजदा-ओ-आदाब रहे ताजदार[2] का,
बेताज है तो क्या हुआ, आदाब-'अर्ज़ कर।
[2]जिसके सर पर ताज हो

सौ बार सितम करना गिला भी नहीं सुनना,
अंदाज़ है तो क्या हुआ, आदाब-'अर्ज़ कर।

अच्छे से उसको जानते पहचानते हैं सब,
बे-राज़ है तो क्या हुआ, आदाब-'अर्ज़ कर।

आवाज़ उसकी बर्क़ सी पड़ती है कान में,
बे-साज़ है तो क्या हुआ, आदाब-'अर्ज़ कर।

देखा है उसको हमने रक़ीबों के साथ वह,
फ़य्याज़[3] है तो क्या हुआ, आदाब-'अर्ज़ कर।
[3]उदार

आहट से अगर लग रहा वह आस पास है,
आवाज़ है तो क्या हुआ, आदाब-'अर्ज़ कर।

अंजाम-ए-इश्क़ होता लाजवाब है 'गौतम',
आगाज़ है तो क्या हुआ, आदाब-'अर्ज़ कर।

236: सबकी सुनिए राम-कहानी

सबकी सुनिए राम-कहानी,
कुछ रूहानी कुछ जिस्मानी।

हैराँ करने को रिंदों को,
नासेह करता शोख़-बयानी।

जीत गई सब हार हार के
सुना एक मीरा दीवानी।

हुनर तराश रहे सब अपने,
किससे सीखें बात बनानी।

जीने में सौ मुश्किल दी हैं,
मरने में रब दे आसानी।

बात इशारे से करता है,
जो कुछ कहता नहीं ज़बानी।

अगर कलंदर कहलाना था,
कुछ बातें करते ला-सानी।

रब के बारे में चुप 'गौतम',
बैठे हैं याँ ज्ञानी-ध्यानी।

237: खुली आँखों से गर सोना आता

खुली आँखों से गर सोना आता,
काश ख़्वाबों को संजोना आता।

अब्र के पास आब तो है मगर,
उसको सहरा को भिगोना आता।

देखकर उसको ख़ुश मरीज़ हुए,
लग रहा है जादू-टोना आता।

भरोसा रब पे कर लिया होता,
न फ़िक्र रहती न रोना आता।

ज़ख़्म ख़ुद अपने सी नहीं पाते,
जिन्हें है सीना-पिरोना आता।

मौत की आरज़ू नहीं करते,
ज़िंदगी को अगर ढोना आता।

बज़्म में हम भी गर खड़े रहते,
नज़र में कोना-ब-कोना आता।

क्यों तवज्जोह मिलेगी 'गौतम',
नहीं तुझको रोना-धोना आता।

238: ख़त्म अब करनी कहानी चाहिए

ख़त्म अब करनी कहानी चाहिए,
हर समय क्यों सरगिरानी[1] चाहिए।
[1]झंझटें

बहस की होती नहीं है इन्तिहा,
गुफ़्त-ओ-गू पुर-मआनी[2] चाहिए।
[2]अर्थ पूर्ण

दश्त-ओ-सहरा को हैं आए निपट,
रहगुज़र बाक़ी सुहानी चाहिए।

फ़लक का है चाँद नख़रीला बहुत,
उसकी ही तस्वीर सानी[3] चाहिए।
[3]टक्कर की

भागता है जो सराबों की तरफ,
कहता है सहरा से पानी चाहिए।

मरने वालों के लबों पे चस्पाँ है,
और थोड़ी ज़िंदगानी चाहिए।

उसकी नाराज़ी से ज़ाहिर हो रहा,
और होनी छेड़-ख़ानी चाहिए।

बात ख़ामोशी से बनती है नहीं,
बोलना थोड़ा ज़बानी चाहिए।

याद करने की वजह 'गौतम' रहे,
छोड़ना ऐसी निशानी चाहिए।

239: ख़याल मेरे बे-लगाम रहे

ख़याल मेरे बे-लगाम रहे,
लाख पीछे पड़े इमाम[1] रहे।
[1]नमाज़ पढ़ाने वाला

नज़र जहाँ ठहर गई मेरी,
दस्त से दूर वही बाम[2] रहे।
[2]मुंडेर *(लक्ष्य)*

हमें नासेह ले चला साक़ी,
हिसाब में हमारा नाम रहे।

वो बग़ावत का इशारा देकर
ज़बान को हमारी थाम रहे।

दोस्ती वक़्त नहीं करता है,
बनाए इसका एहतिराम[3] रहे।
[3]सम्मान

दुनियादारी का है सबक़ पहला,
काम से अपने हमें काम रहे।

यहाँ हैं यायावर सभी 'गौतम',
सफ़र ये जारी बे-मक़ाम रहे।

240: सवाल करते, किसलिए करते

सवाल करते, किसलिए करते,
बवाल करते, किसलिए करते।

किया वादा नहीं वफ़ा, इस पर,
जलाल[1] करते, किसलिए करते,
[1]क्रोध

हो हम-ख़याल साथ में, ऐसा
ख़याल करते, किसलिए करते,

उसने अपना नहीं कहा, इसका
मलाल करते, किसलिए करते।

किसे फ़ुर्सत है कहने वाले से,
विसाल करते, किसलिए करते।

कोई मतलब नहीं रहा, रिश्ता
बहाल करते, किसलिए करते।

भूल ही जाती है दुनिया 'गौतम',
मिसाल करते, किसलिए करते।

241: गिला-आमेज़ इरादा नहीं है

गिला-आमेज़[1] इरादा नहीं है,
वो मेरी जान है आदा[2] नहीं है।
[1]शिकायत मिश्रित [2]दुश्मन

पता हमें था वादा लेते हुए,
वफ़ा करेंगे ये वादा नहीं है।

दर्द-ए-दिल की बात करने पर,
कहेंगे ख़ास ज़ियादा नहीं है।

भरी महफ़िल में उसका नाम लेगा,
वो जिसके पास मर्यादा नहीं है।

कहा है आपने उसको सितमगर
जनाब जुर्म-ए-सादा नहीं है।

रहे ख़ामोश उसके सामने हम,
कोई दीवाना आज़ादा[3] नहीं है।
[3]निरंकुश

कहेगा बात सीधी-सादी 'गौतम',
अभी उसने पिया बादा[4] नहीं है।
[4]मदिरा

242: रात होने को है किधर जायें

रात होने को है किधर जायें,
जहाँ आ पहुँचे हैं ठहर जायें।

यही नसीब रहा ख़्वाबों का,
रात के साथ ही गुज़र जायें।

दहर[1] का खेल है देखा दिन में,
तमाशा ख़त्म हुआ घर जायें।
[1]दुनिया

शाम आई ठहर के दम ले लें,
सफ़र पे वक़्त-ए-सहर[2] जायें।
[2]सुबह के समय

दरिया के होते दो किनारे हैं,
इधर थे बैठे अब उधर जायें।

राह से किसलिए भटकना है,
पाँव अब क्यों इधर उधर जायें।

हमें मालूम है मंज़िल 'गौतम',
किसलिए पूछते किधर जायें।

243: मौक़ा आए, ख़ूबसूरत आए

मौक़ा आए, ख़ूबसूरत आए,
हमारे हक़ में मग़फ़िरत[1] आए।
[1]मोक्ष

आख़िरी वक़्त याद आते हैं,
याद आने का महूरत आए।

दफ़्न से पहले लोग दफ़्न करें,
ख़ुदा करे न ये नौबत आए।

उठा के दस्त दुआ माँग रहे,
खुले हों दस्त जब रहमत आए।

ख़ला[2] से आए ख़ला में जायें,
बस यही सोचकर राहत आए।
[2]शून्य

मौत से वक़्त किसलिए माँगें,
हमें है आजकल फ़ुर्सत, आए।

तौबा सौ बार हमने तोड़ी है,
दोबारा ये न ज़रूरत आए।

मासियत[3] उससे सामने सबके,
सदा ख़याल-ए-ग़ैरत आए।
[3]उद्दंडता

ख़ैर-मक़्दम[4] सभी का करते हैं,
शेख़ तो है वली-सिफ़त[5], आए।
[4]स्वागत [5]रब के पास

यार जब साथ हों बैठे 'गौतम',
हौसला तोलने आफ़त आए।

244: हमसे पहले हुए उस्ताद कई

हमसे पहले हुए उस्ताद कई,
और आने हैं मेरे बाद कई।

ख़ुदा हमारा हो नहीं पाया,
देखिए सफ़ में हैं ज़हाद[1] कई।

[1]आस्थावान

सोचकर जायें कू-ए-जानाँ में,
हो चुके हैं यहाँ फ़साद कई।

उसकी महफ़िल मे देखकर आए,
शाद हैं चंद, हैं ना-शाद कई।

कलाम किसको सुनाते जाकर,
कोई भी कहता है इरशाद नहीं।

मुद्दा कोई भी रहे ज़ेर-ए-बहस,
खड़े हो जाते हैं विवाद कई।

हरम में रब के वास्ते आए,
साथ सब लाए हैं मुराद कई।

हमको तन्हाई से डर लगता है,
आने लगते हैं हमें याद कई।

कुछ भी तामीर हो नहीं पाया,
ख़याल आए बे-बुनियाद कई।

आप अव्वल नहीं हुए 'गौतम',
इश्क़ में हो चुके बर्बाद कई।

245: साथ बैठे हैं मोतक़िद-ए-ख़ुदा

साथ बैठे हैं मोतक़िद-ए-ख़ुदा[1],
रास्ता रब का बताते हैं जुदा।
[1]आस्थावान

आशिक़ों ने सही बयान दिया,
ख़ासम-ख़ास[2] है सनम की अदा।
[2]विशेष में विशेष

अक़्ल-ओ-फ़हम[3] के हवाले से,
कोई सूरत कोई सीरत पे फ़िदा।
[3]दिमाग और समझ

पुकारता कोई रहा सबको,
किसी किसी ने ही सुनी वो सदा।

फ़र्क़ कुछ भी नहीं रक़ीबों[4] में,
रंग भी ख़ून का नहीं है जुदा।
[4]प्रतिद्वंदी

हमने देखी है घूमकर दुनिया,
सबसे अच्छी जगह लगी मय-कदा।

हर तरफ दिख रहे हमें मुफ़लिस,
हर जगह सफ़ में खड़े देखे गदा[5]।
[5]माँगने वाले

जान कर कुछ नहीं बोला 'गौतम',
बहस को सुनता रहा यदा-कदा।

246: ख़बर छपी है लापता हम हैं

ख़बर छपी है लापता हम हैं,
पता बताना बे-पता हम हैं।

इस्तगासा[1] हुआ अदालत में,
कौन मानेगा बे-ख़ता हम हैं।
[1]न्यायिक आवेदन *(केस)*

हमसफ़र कोई क्यों बने मेरा,
बिना मंज़िल का रास्ता हम हैं।

अपने जैसे हमें जो लगते हैं,
उन्हीं से रखते वास्ता हम हैं।

नहीं हैं लाएक़-ए-तहसीं[2] माना,
अगरचे एक गुलदस्ता हम हैं।
[2]प्रशंसा योग्य

कोई हमको ख़रीद पाया नहीं,
सारे बाज़ार में यकता[3] हम हैं।
[3]विशेष *(लाजवाब/अमूल्य)*

आदमी हमको मानते 'गौतम',
ना कहें आप देवता हम हैं।

247: याद आ जाते हैं गाहे गाहे

याद आ जाते हैं गाहे गाहे[1],
भूलने हमने जो लम्हे चाहे।
[1]कभी

ज़ख़्म नासूर हम बनाते हैं,
आप भी रखते नहीं हैं फाहे।

अपनी ही रौ में हमें जाने दें,
हमें दिखाइये ना दो-राहे।

फ़िक्र ताली की नहीं की हमने,
कलाम कहते रहे मनचाहे।

बोलने की यहाँ आज़ादी है,
आप भी बोलिए जो दिल चाहे।

यार को चाँद समझ बैठे थे,
चाँद को समझा तो बोले आहे[2]।
[2]ओह/अरे

अपने हालात पर रोया 'गौतम',
साथ में रोयेगा कोई काहे।

248: उस शख़्स सियासी ने परेशान किया है

उस शख़्स सियासी ने परेशान किया है,
उसको समझना चाहा तो हैरान किया है।

वीराने में दिखायेंगे एक चमन खिलाकर,
इस वास्ते ही चमन को वीरान किया है।

कहने लगे हैं लोग भी अब देखकर उफ़क़[1],
उसने ही एक ज़मीन-आसमान किया है।
[1]क्षितिज

पंगा नहीं हम मीर से लेते हैं बज़्म में,
ख़ामोश रह के हमने भी सम्मान किया है।

राई से बनाता है कोहसार[2] फ़ित्ना-गर[3]
हर मौक़े पर उसने खड़ा तूफ़ान किया है।
[2]पहाड़ [3]उपद्रवी

लगता है उसने देखा है कल रात फिर सपना,
उसने सहर में ज़ारी एक फ़रमान किया है।

रोज़ाना बदलता रहा है बात वो 'गौतम',
तामीर कितनी बार कीर्तिमान किया है।

249: मुझे लगता है ये अहद-ए-हवस है

मुझे लगता है ये अहद-ए-हवस[1] है,
जिसे भी देखिए अहल-ए-हवस[2] है।
*1*लोभ का काल *(कलियुग)* *2*लोभी

ज़माना देखना, उसको समझना,
नज़र से भी बड़ा यह कैनवस है।

मकीन-ए-मकाँ[3] का रुतबा बराबर,
उधर गुम्बद है तो याँ पर कलस है।
*3*मकान मालिक

इधर मैं, उधर ज़ाहिद, बीच में रब,
ये रिश्ता मुझे लगता मुसल्लस[4] है।
*4*त्रिकोणीय

जो गहरा उतरा है कम बोलता है,
जो है कम-ज़र्फ़[5] वो करता बहस है।
*5*उथला

करी नासेह ने जन्नत की बातें,
लो आई रिंद में मौज-ए-नफ़स[6] है।
*6*लोभ *(इच्छा)* का विस्तार

नहीं है इश्क़ सबके बस का 'गौतम',
किसे हो जाए इस पे किसका बस है।

250: ज़बाँ पे अपने हैं कुछ राज़, बोलते कैसे

ज़बाँ पे अपने हैं कुछ राज़, बोलते कैसे,
हमसे हो जाते सब नाराज़, बोलते कैसे।

कैफ़ियत सारी लिखित माँगी मेरे मुंसिफ़ ने,
बयान माँगा फिर ईजाज़[1], बोलते कैसे।
[1]सार

हम भरे बैठे थे तैयार बोलने के लिए,
सबने टोका सर-ए-आग़ाज़[2], बोलते कैसे।
[2]शुरू करते ही

तुम्हारे शहर मे हर वक़्त शोर होता है,
बात सुनना हुआ ए'जाज़[3], बोलते कैसे।
[3]चमत्कार

सवाल पर सवाल ने हमें ख़ामोश किया,
भूले हम नुक़्ता-ए-आग़ाज़[4], बोलते कैसे।
[4]प्रारंभिक बिंदु

हमने क़ातिल को ही गवाह बनाया कैसे,
सवाल था बहुत मजाज़[5], बोलते कैसे।
[5]कानूनन सही

हाले-दिल हम किसी को कैसे बताते 'गौतम',
सजी थी महफ़िल-ए-मजाज़[6], बोलते कैसे।
[6]दुनियादार लोग

251: ग़ज़ल हो, साज़ हो, तरन्नुम हो

ग़ज़ल हो, साज़ हो, तरन्नुम[1] हो,
कहीं भी जन्नत-ओ-जहन्नुम हो।
[1]धुन

किसी के इश्क़ में दीवाना सही,
उसे भी इज़्न-ए-तबस्सुम[2] हो।
[2]मुस्कुराने की अनुमति

दरियादिल होना चाहिए साक़ी,
रिंद बे-फ़िक्र क़ैद-ए-ख़ुम[3] हो।
[3]शराब के मटके में

सभी की आँख में खटकता है
बज़्म में बैठा कोई गुम-सुम हो।

उसका इन्कार पर तहक्कुम[4] है,
हमको इसरार[5] पर तहक्कुम हो।
[4]अधिकार [5]अनुरोध (जिद्द)

और कुछ रब से क्यों माँगा जाए,
मेरे ख़याल में अगर तुम हो।

ता-नज़र कोई हो नहीं 'गौतम',
ज़ेहन से कोई भी नहीं गुम हो।

252: सब्र बराबर करते रहने से यह आदत आती है

सब्र बराबर करते रहने से यह आदत आती है,
आदत पड़ जाने पे देखा थोड़ी राहत आती है।

क़ातिल या मक़्तूल ज़रूरी मश्क़[1] रहेगा दोनों को,
अपने अपने फ़न में उनको तभी महारत आती है।
[1]अभ्यास

नहीं हुकूमत दिल पर चलती केवल ताज लगाने से,
हो शुऊर-ए-इश्क़[2] जिसे उसको बादशाहत आती है।
[2]प्यार करने की तमीज

पाबंद-ए-पास-ओ-लिहाज़[3] हैं अहद[4] याद कर लेते हैं,
रहते हैं ख़ामोश ज़बाँ तक अगर शिकायत आती है।
[3]संकोच और शील के लिए प्रतिबद्ध [4]वचन

लैला के आशिक़ मजनूँ को सज्दा करता है 'गौतम'
शागिर्दी क्यों उसकी करता उसे मोहब्बत आती है।

253: काम कुछ भी नहीं तो दिल उदास करते हैं

काम कुछ भी नहीं तो दिल उदास करते हैं,
कैसा कल गुज़रेगा इसका क़यास[1] करते हैं।
[1]अनुमान

कशमकश करते हुए दिन ख़लास[2] करते हैं,
ज़िंदा दिखने के हम कितने प्रयास करते हैं।
[2]समाप्त

कभी तलाश में रब की गए हैं दूर तलक,
कभी अपने में कभी आस-पास करते हैं।

पेश करते हैं कभी उसको शिकायत कोई,
पेश उसको कभी मेहर-ओ-इख़्लास[3] करते हैं।
[3]कृपा और प्यार

चिराग़ सारे बुझा देता हूँ घर के अक्सर,
कभी कभी हमें साये हिरास[4] करते हैं।
[4]भयभीत

हमको इंसाफ़ की उम्मीद होने लगती है,
कभी अगर मेरे मुंसिफ़ इजलास[5] करते हैं।
[5]अदालत चालू

सीखने की तो कोई उम्र नहीं है 'गौतम',
तिफ़्ल[6] उस्ताद हों अगर तो क्लास करते हैं।
[6]बालक

254: पहले अख़्लाक़ से पूछी है ख़ैरियत उसने

पहले अख़्लाक़[1] से पूछी है ख़ैरियत[2] उसने,
बाद में सबसे पता की है कैफ़ियत[3] उसने।
[1]सही आचरण [2]हाल-चाल [3]विस्तृत जानकारी

सरसरी तौर पर हालात को देखा-समझा,
ग़ौर से देखी है लोगों की अहलियत[4] उसने।
[4]सामर्थ्य

नज़रअंदाज़ नहीं करता है किसी को भी,
ज़ेहन में दर्ज़ करी सबकी अहमियत[5] उसने।
[5]रूतबा

वो जिसके हिज्र में दीवाने रात भर जागे,
किसी के वास्ते कब छोड़ी आफ़ियत[6] उसने।
[6]सुख-चैन

आफ़तें हैं बहुत सी पास में रोने के लिए,
बेवजह रोने से बरती है किफ़ायत[7] उसने।
[7]कंजूसी

सुलूक-ए-मेहरबानी में हैं करते फ़र्क़ नहीं,
ख़ास होगा कोई की जिसकी हिमायत उसने।

वादा करने का हुस्न उसका ख़ूब है 'गौतम',
नहीं करी कभी ज़ाहिर है असलियत उसने।

255: बहस हुज़ूर से, तौबा तौबा

बहस हुज़ूर से, तौबा तौबा,
ख़ता हुज़ूर से, तौबा तौबा।

निज़ाम से है शिकायत थोड़ी,
गिला हुज़ूर से, तौबा तौबा।

यूँही आया ख़याल-ए-गुस्ताख़ी,
मगर हुज़ूर से, तौबा तौबा।

मेरे ख़िलाफ़ बोलिए लेकिन,
मेरे हुज़ूर से, तौबा तौबा।

ख़फ़ा तो हैं मगर करें रंजिश,
कभी हुज़ूर से, तौबा तौबा।

इश्क़ के होते हैं आदाब जुदा,
लड़ें हुज़ूर से, तौबा तौबा।

बिना सज्दा बिना सलाम किए,
मिले हुज़ूर से, तौबा तौबा।

बज़्म में देखे गए दीवाने,
खिंचे हुज़ूर से, तौबा तौबा।

शिकन है आई, क्या कहा तुमने,
बयाँ हुज़ूर से, तौबा तौबा।

किसने दीदार का इसरार किया,
सुना हुज़ूर से, तौबा तौबा।

किसी दीवाने ने मिलाई है,
नज़र हुज़ूर से, तौबा तौबा।

हुज़ूर से करें सवाल नहीं,
कहें हुज़ूर से, तौबा तौबा।

गुनाह करते हैं फिर कहते हैं,
बशर हुज़ूर से, तौबा तौबा।

राब्ता भूल क्यों गए 'गौतम',
अस्ल हुज़ूर से, तौबा तौबा।

256: राहबर कोई कारवाँ कोई

राहबर[1] कोई कारवाँ कोई,
नहीं है साथ मेहरबाँ कोई।
[1]सहयात्री

सराब[2] देख लिया सहरा में,
नहीं खोदा गया कुआँ कोई।
[2]मृगमरीचिका

पड़ाव डालिए ना बस्ती में,
नहीं बुला रहा धुआँ कोई।

तुम इशारा नहीं समझते हो,
बोलता कैसे बे-ज़बाँ कोई।

हाथ जो आया है बताता है,
यहाँ था आब[3] बर-रवाँ[4] कोई।
[3]पानी *(दरिया)* [4]प्रवाहमान

किसी से कर रहे उम्मीद नहीं,
साथ जाता है कब कहाँ कोई।

बे-नतीजा ही रह गया 'गौतम'
लेता रहता है इम्तिहाँ कोई।

257: क्यों चाहकर नसीब के मारे नहीं मिले

क्यों चाहकर नसीब के मारे नहीं मिले,
बे-आब[1] दरिया के भी किनारे नहीं मिले।
[1]सूखा

लेकर हमारा नाम बुलाया नहीं उसने,
हम जाते कैसे उसके इशारे नहीं मिले।

दीदार छोड़ो, देंगे वो ख़ैरात भी नहीं,
जब तक फ़क़ीर हाथ पसारे नहीं मिले।

दीवाने नहीं आए तो महफ़िल नहीं जमी,
करने को बहस ख़ास शुमारे[2] नहीं मिले।
[2]मुद्दा

मेरी शिकायतों में वज़न था नहीं शायद,
फ़ाइल में काग़ज़ात हमारे नहीं मिले।

घर लौट गए आग पर सब डालकर पानी,
फिर राख में हमें तो शरारे[3] नहीं मिले।
[3]चिंगारी

उसने जवाब चुटकी बजाकर दिए सारे,
पेश-ए-नज़र सवाल करारे[4] नहीं मिले।
[4]सख्त/चुटीले

लगता है कोई काम उसे आन पड़ा है,
वो बद-हवास ज़ुल्फ़ सँवारे नहीं मिले।

हाथों को मलते बैठे हैं ज़मीन पर 'गौतम',
जाने के लिए जिनको सहारे नहीं मिले।

258: याद जब आयें तो बुला लेना

याद जब आयें तो बुला लेना,
भरे हुए हैं हम, रुला लेना।

लोग हँसते हैं रोने वाले पर,
आप भी थोड़ा खिलखिला लेना।

जो है दीवाना बहल जाता है,
दिल करे आपका फुसला लेना।

झिझक रहे हो नामा लेते हुए,
मरने की होगी इत्तला, लेना।

लोग कहते हैं मसीहा तुमको,
डूबती साँस है, जिला लेना।

मेरे सीने में जल रही है जो,
आग से हाथ मत जला लेना।

दिया है उसने तो नशा होगा,
जाम में पानी कुछ मिला लेना।

रहे बे-दाग़, कफ़न भी मेरा,
चाँदनी जैसा ही उजला लेना।

मु'आफ़ी में ही नेक-नामी है,
अच्छा होता नहीं बदला लेना।

आपकी उम्र हो चली 'गौतम',
नया ना कोई मश्ग़ला[1] लेना।

[1]शौक़/व्यसन/लत

259: क़दम संभाल कर बढ़ाते हैं

क़दम संभाल कर बढ़ाते हैं,
लोग तो बे-वजह चढ़ाते हैं।

तिफ़्ल[1] ने बोलना सीखा हमसे,
आजकल वो हमें पढ़ाते हैं।
[1]बच्चा

बग़ल से मेरी गुज़रने वाले,
मजनूँ कहकर हमें चिढ़ाते हैं।

रहे निगाह का भरम बाक़ी,
जानकर थोड़ा लड़खड़ाते हैं।

नाम अपना ही हमें याद नहीं,
नाम बस रब का बड़बड़ाते हैं।

ढील हम छोड़ते रहे हँसकर,
पेंच वो खींच कर लड़ाते हैं।

बात उनसे नहीं करता 'गौतम',
बात जो बे-वजह बढ़ाते हैं।

260: यदा-कदा मिला करे कोई

यदा-कदा मिला करे कोई,
ख़ुदा से तो डरा करे कोई।

और कुछ ज़्यादा नहीं चाहेंगे,
मेरी ख़ातिर दुआ करे कोई।

याद वो बारहा करे हमको,
उसे इतना ख़फ़ा करे कोई।

बना एहसास ज़िंदगी का रहे,
दर्द हर दिन अता करे कोई।

अक्स ना पूछे त'आरुफ़[2] मेरा,
आईने को सफ़ा करे कोई।
[2]परिचय

पसीना पोंछ चुके दामन से,
पास बैठे हवा करे कोई।

चारागर हमसे पूछता है अब,
बाताओ और क्या करे कोई।

सामने से ना अलविदा कहिए,
जब ना देखूँ उठा करे कोई।

राब्ता कुछ बना रहे 'गौतम',
वफ़ा नहीं जफ़ा करे कोई।

261: काम तो सारे ज़रूरी करिए

काम तो सारे ज़रूरी करिए,
कभी ना ग़ैर-ज़रूरी करिए।

काम में लुत्फ़ मिले काफ़ी है,
नहीं ज़रूरी ग़रूरी[1] करिए।
[1]अहंकार

कहा था बात ध्यान से सुनिए,
आप समझे जी-हुज़ूरी करिए।

यही तक़ाज़ा है शराफ़त का,
जो कही बात वो पूरी करिए।

जिस्म के साथ फ़ासला रखिए,
दिलों के बीच कम दूरी करिए।

सबक़ यही है इश्क़ का पहला,
थामिए दिल को सुबूरी[2] करिए।
[2]धैर्य

हाथ फैलाना है ग़लत 'गौतम',
हो ज़रूरी तो मजदूरी करिए।

262: अश्क आहों की तर्जुमानी है

अश्क आहों की तर्जुमानी[1] है,
नासमझ के लिए तो पानी है।
[1]अनुवाद/व्याख्या

ज़बाँ आती नहीं ख़ामोशी की,
वही जाना जो मुँह-ज़बानी है।

कू-ए-जानाँ में ठहरने वाला,
दर-बदर[2] है या ला-मकानी[3] है।
[2]भटकने वाला [3]बिना घर का

वादा लेते ही काम याद आए,
यही बला-ए-ना-गहानी[4] है।
[4]अप्रत्याशित समस्या

मेरे बारे में ग़ैर से पूछा,
क़द्रदानी या मेहरबानी है।

सुनाई दास्ताँ रूमानी कोई,
मुझे लगा मेरी कहानी है।

आपका आना अयादत के लिए,
चंद लम्हों की शादमानी[5] है।
[5]खुशी

इश्क़ जब से हुआ हमें 'गौतम',
ज़िंदगी लगती राएगानी[6] है।
[6]बेकार

263: मतलब नहीं है मुझसे, ये विज्ञप्ति दी गई

मतलब नहीं है मुझसे, ये विज्ञप्ति[1] दी गई,
कहने को क्या बचा था, अनापत्ति[2] दी गई।
[1]आम सूचना [2]प्रतिकार नहीं करना

सम्मान किया था मेरा दधीचि[3] की तरह,
जब माँगा अज़ीज़ों ने उन्हें अस्थि[4] दी गई।
[3]महर्षि दधीचि [4]हड्डियाँ

इंसाफ़ रिवायत[5] के नाम पर यही हुआ,
क़ातिल को ही मक़्तूल की संपत्ति दी गई।
[5]परम्परा

ज़िंदा हैं यह एहसास दिलाने के वास्ते,
गाहे-ब-गाहे[6] जानकर विपत्ति दी गई।
[6]कभी-कभी

ख़्वाहिश के साथ जा रहे हैं क़ब्र में 'गौतम',
अल्लाह के बंदो को कब संतुष्टि दी गई।

264: जीने की मोहलत हमें दी शुक्रिया

जीने की मोहलत हमें दी शुक्रिया,
यारों की सोहबत हमें दी शुक्रिया।

लोग जीते रहते बे-मक़सद भी हैं,
इश्क़ की इल्लत[1] हमें दी शुक्रिया।
[1]बुरी आदत

जीने की ख़ातिर हैं केवल चार दिन,
बाइस-ए-उजलत[2] हमें दी शुक्रिया।
[2]हड़बड़ का कारण

लोग अब हमको लगे पहचानने,
आपने शोहरत हमें दी शुक्रिया।

रखते हैं हम पास ए'ज़ाज़-ए-ख़ुदी[3],
रब ने ये दौलत हमें दी शुक्रिया।
[3]स्वाभिमान का गुमान

कहता दीवाना कोई मजनूँ हमें,
इसकदर अज़्मत[4] हमें दी शुक्रिया।
[4]आदर/प्रतिष्ठा

बोलने का हक़ दिया आईन[5] ने,
आपने हिम्मत हमें दी शुक्रिया।
[5]संविधान

रब की रहमत साथ 'गौतम' के रही,
यार ने रहमत हमें दी शुक्रिया।